गई भोम रो बाहड़ू



भीमपॉडिया

गई भोम रो बाहडू

(इतिहासू प्रबन्धकाव्य)

© भीमपॉडिया
अनन्तराजू भीमपॉडिया बीकानेर
अन्नपूर्णा अणतराजू पॉडिया
सुगुणी प्रकाशन बीकानेर (राज) 334005

अधिकृत वितरक विक्रेता
श्री भीमपॉडिया
सुगुणी प्रकाशन
विश्वाम्बिका भवन आशापुरा नयाशहर बीकानेर 334005

प्रकाशक
सुगुणी प्रकाशन बीकानेर
आशापुरा नयाशहर बीकानेर 334005

पैलो सस्करण 1100 (एक हजार एक सौ)
प्रकाशन वर्ष 1997
मोल एक सौ साठ रुपिया
आवरण सज्जा अडिग (चितराम राठोड़ बीका श्री भीवराजजी गई भाम रो बाहडू)
चितराम श्री गौरीशकर प्रजापत
एव श्री रतनरगा तथा
श्री नरन्द्र कुमार प्रदीप कुमार
कमल स्टूडियो जस्सूसर गेट के अन्दर बीकानेर

मुद्रक साखला प्रिण्टर्स
सुगन निवास चन्दनसागर बीकानेर

श्री सूरजमाल सिह राठोड़ (भीमराजोत बीका) द्वारा पाँडुलिपि पर घोषित प्रदत्त पुरस्कार गई भोम रो बाहडू राशि रु 51000 से ग्रथ प्रकाशित किया गया है।

Gayi Bhom Ro Bahroo
(Rajasthan Poetry) Historical Prabandh Kavya
By Bheem Pandia Bikaner

गई भोम रो बाहडू

(इतिहासू प्रबन्धकाव्य)

सुगुणी प्रकाशन बीकानेर
विश्वाम्बिका भवन
आशापुरा नया शहर बीकानेर 334005

अनुक्रम

म्हारी भाव भूमिका

हाथ वसू ख्यात बात इतिहास रा पानों मे ओळी-ओळी आखर-आखर बाँचतॉ कोई ऊँडी बात हाथाँ लाग जावै। बाँ बाताँ मे कोई बात इसो असर करै कि कलम कोरणी चलॉवणी ही पड़ै।

म्हारी इण रचणा री भाव भूमिका पेटै बीकानेर री राती घाटी री माटी री महक ही मन मोवे। आपरी सस्कृति अर अस्मिता-ओळखॉण पर कोई सक्ट आयो जाणै या जबरिया गुलाम बणावण री बात बणै जद कुण सहण करै? जीवतै जी गुलामी री झळ कुण झेलै?

बीकानेर राज व्यवस्था नै डॉवाडोळ करण वास्तै इण तरै रा घणॉ-मोकळा छिण आया पण अठै रा राठोड़ सूरमॉ वाँ छणाँ मे प्राण प्रण सूँ आपरो बळिदान करण सूँ नही चूक्या। इण तरै रा केई प्रसग म्हारै इण प्रबध-काव्य गई भोम रो वाहडू मे उकेरीज्या है।

इण रचणाँ मे वेद पुराणाँ री अवधारणाँ अर लारलै पनरै सौ बरसॉ री सूर्यवशी राठोड़ाँ री ख्यात-बात इतिहास रा पानॉ री की झळक उजागर करणै री कोसिस करीजी है।

पॉच सरगाँ मे इतिहासू प्रबध काव्य उकेरीज्योड़ो है। इण रै अलावा भळै केई कथावॉ और भी है पण म्हारी दीठ मे बॉरो कोई खास असर नही लागै। घणॉ ही पानॉ म घणो विसतार दियो है पण बॉनै उकेरण री दरकार मन्हे कोनी लखाई। अतपत गई भोम रो बाहडू रो विड़द दियै जाणै तॉई कथावॉ रो मोकळो विसतार मिळै। पण म्हॉरी दीठ अर कलम जिती नाप सकी है बिती नापणै री चेस्टा करी है—वा अपरोखी नही लागणी चाहीजै। किता महाराज्य बण्या-विलाईज्या अर बण्या-विलाईज्या? खास बखॉण तॉई पूगणै मे गूँगपणो काम कोनी लागै—की कळपणॉ रो सारो भी तो घणो जरूरी है। कारण कळपणॉ बिनॉ कथा सूत्रॉ रो पूरो जुड़ाव नही हुवै।

आ रचणा अनेक ख्यात बात इतिहास मे उकेरीज्योडी घटणावॉ-वचनिकावाँ नै म्हारी चालणी सूँ छाण अर सोना तोलणी सूँ तोल-परख नै म्हारी दीठ अर अनुभूति रै आधार माथै मॉडणै री चेसटा करी है। आप भी आपरी परख सूँ परखोला। आप रो साच म्हारै साच सूँ मेळ खायो तो म्हारी कलम सफळ मानसूँ।

म्हारी इण इतिहासू प्रबध काव्य रचणा मे इण भोम मे राठोडाँ रो ख्यातवासो अर राज व्यवस्था थापित करणै रो बखाँण है। राठोड़ॉ रै बारे मे केई विवाद पानॉ मे बोले पण बॉ विवादाँ नै छाण्यॉ सूँ निसतार नीसरै कि गाहड़वाळ अर राठोड़ न्यारा-न्यारा है अेक कोनी। घणाँ राठोड़ उत्तरजीवी लोग जयचद नै राठोड़ कोनी मानै। जयचद गाहड़वाळ हो। परिसिस्ट मे तीन लेख दिया है श्री सूरजमालसिह राठोड़

श्री रामसिह रोड़ा अर श्री प्रतापसिह घटेरा रा। सागै ही थारी पूरी वसावळी री झळक भी छापी है जिण सूँ म्हारी भाव भूमिका मेळ खावै।

म्हारी इण रचणा म बीकानेर राव जैतसी रै कुँवर भीवराज राठोड़ नै गई भोम रो बाहडू रो विड़द दिरीज्यो जकै रो बखॉण है। इण बात मे घणी सचाई लागै कि भीवराज राठोड़ वड़ो सूरवीर राजनीति रा जाणकार परभावसाळी सरूप रो घणी हो। आप पानॉ बॉच नै जाणो-समझो तो हूँ म्हारी कलम सफळ मानसूँ।

पूर्व ससद सदस्य स्व डॉ श्री करणीसिह जी रै शोध प्रवन्ध ग्रथ *बीकानेर के राजघराने का केन्द्रीय सत्ता से सम्बन्ध प्रकाशित प्रथम सस्करण 1968 मे पानै 46 पर* मॉडयोड़ो है।

बीकानेर लौटने पर राव कल्याणमल ने एक दरबार किया और अपने भाई भीमराज द्वारा दी गई सहायता की सार्वजनिक प्रशसा करते हुए उसे गई भूमि का बाहडू विरुद दिया।

नामी ख्यातकार श्री दयालदास री ख्यात पानै 76 पर वचनिका (गयी भूमिका बाहडू) म मॉड्योड़ो है

राव जैतसीजी रै पाट राव कलियाण दानेसरु काई स्वर वस का भाण *भीवराज दिलस्वर सर क्रू अपणी मदत लाया राव मालदेव कूँभगाय गयी भूमि के* बाहडू व्रद पाया पीछै राव कल्याण सिहजी सीख मॉग विक्रमपुर आया नै वीरमदे दूदावत मेड़ता पाया।

पानै 77 मे मॅड्योडो है भीवराजजी वीरमदेवजी पातसाहजी सागै गया। पीछै पातसाहजी दोवॉ ही सिरदारा नू सीख दीनी। तद वीरमदेवजी भीवराजजी नू मेड़तै ले आया नै बडो जाबतो कियो। अरु कयो बाबा तू तो दोऊ गयी भूम रो बाहडू हुवौ नै आ धरती थारै पगा सू आई।

दयालदास री ख्यात पानै 78 म मॅड्योड़ो है

पीछै भीवराजजी नू वीरमदवजी किता अेक दिन मेड़तै राखिया पीछै हाथी एक घोडा च्यार कपडो आछो देय नै विदा किया। अै बीकानेर आय राव कल्याणसिहजी रै पावॉ लागा। तद रावजी श्री कल्याणसिघजी फुरमायो जो भीवराज औ बीकानेर थारी भुजावॉ सू आयो नै थॉ जिसा भाई हुवै तद गयी थकी धरती घेरै अर तू गयी भौम रो बाहडू हुवौ। पीछै रावजी भीवराजजी रो ठिकाणो भीवसर बॉधियो किता अेक गॉव सूँ। जिण दिन सूँ भीवराजोतॉ रै गई भोम रै बाहडू रो व्रद है।

राजपूतानै मे भी गुलामी रा पग पसरण लागग्या हा। बीकानेर भोम री राती घाटी अर धोरॉ पर भी लोगॉ री ऑख्यॉ लागगी ही। गुलामी रा कीडॉ री ऑख बॅधगी ही। बीकानेर री राठोडी फौजॉ नै केई जुधॉरी झळॉ झालणी पड़ी। बीकानेर री थरपणॉ हुॅवतॉ ही आजादी राखण वासतै स्वतत्रता सग्राम चालू करदेणो पड्यो। बीका नेरा

लूणकरण अर जैतसिंह तथा बॉरी सतानॉ उतराधिकारियॉ नै गुलामी सूँ बचण सारू जुधॉ री झळ झेलणी पडी बॉनै भी गुलामी री जकड सहण कोनी हुई। बीकानेर री अगली पीढियॉ न भी स्वतत्रता सग्राम लडणा पड्या जिकै रा सबूत ख्यात बात इतिहासॉ मे मॅड्यो है। बीकानेर रा राठोड़ॉ नै आजादी खातर केई वार तळवारॉ भॉजणी पडी। जनता री आजादी अर बॉरी सुख सॉयती वासतै राठोड़ॉ नै आपरै भुजबळ पर भरोसो हो। सत्याग्रह आदोळण री रीत नीत कोनी ही। हळदी घाटी ज्यूँही राती घाटी रो विडद वखाणीज्यो है। जनता री सुख सॉयत वासतै राठोड़ॉ समरथ सारू कोई कोर कसर नही राखी। बीकानेर भारत मे ही नही ससार भर मे नामी सूरमो रैयो है। आपरी साख अर धाक जमाई राखी। अमिट लेख लिख्या है म्हॉरै बीकानेर। ख्यात बात इतिहास मुँह बोलता बखाण करै। उणी आधारॉ माथै रची म्हारी इण रचणा गई भोम रो बाहडू ऐतिहासिक प्रबध-काव्य रो रचाव है।

म्हारो ओ प्रबध काव्य आपणी मायड भासा राजस्थानी रै परिनिष्ठित टकसाली सरूप री थिर ओळखॉण वणै अर आखै राजस्थान ही नही आखै भारत मे राजस्थानी भासा रा लाडला समरथकॉ नै दाय आवै तो म्हारी कलम सफळ मानूँ।

देववाणी सस्कृत-प्राकृत-अपभ्रश-डिगल-पिगल-मरुवाणी-मारवाडी री ओळखॉण कायम राखतॉ ही राजस्थानी भासा रो सरूप सदा सूँ ही सगळी राजस्थानी रियासतॉ मे सरब ओपमान लायक मान राजभासा रो अेक रूप ही समझ मे आयो। राजस्थान निवास्यॉ राजस्थानी रै विगसाव सारू पत्र-परवाणा मॉड्या जकी भासा ही आज आखै राजस्थान म समझ मे आवै। मामूली बोलचाल समझण मे कोई फरक लखावै तो बिसो फरक विश्व री सगळी ही भासावॉ मे मिळसी। इण मे मीन-मेख कोनी। निसचै ही राजस्थानी भासा विश्व री अनेकूँ भासावॉ मे आपरी ठसक न्यारी निरवाळी ही राखै है। राजस्थानी भासा रो सबद भडार विश्व री सगळी ही भासावॉ रै सबद भडार सूँ घणो लूँठो समरथसार है। मोकळा लोकोकती मुहावरा-लोकगीतॉ मे वॅध्या-वॅधाया टकसाली अेकरू मे ही जोयॉ लाधै जे कोई भाभी भॉत जोवै। पण आजादी पछै आपणी राजस्थानी भासा नै आपणे सविधान सूँ बारै ही फेक नॉखी। इण फेक मे की लूँठा राजनेतावॉ रा कोझा हाथ भूँडाई पर उतरग्या हा। बॉनै ख्यात-बात इतिहास काळपात्र कद माफ करसी ? बै कोझा नॉव नामी-गरामी भूँडा राजनेतावॉ रा सगळॉ नै चवड़ै दीसै है। अबै तॉई अडचनॉ नॉखणवाळा भूँडा लोग भी ऑख्यॉ सामा है। प्राणप्रण सूँ राजस्थानी भासा री सवैधानिक मानता आपॉ चावॉ। म्हारी परधा रा मोकळा ही नामी गरामी धणॉ हेताळू राजस्थानी प्रेमी लोग राजस्थानी भासा री सवैधानिक-मानता री मॉग मे गहरै-ऊँडै मन सूँ म्हॉरै सुर मे सुर मिलावै है। बॉनै सुमरण मे लाऊँ तो मोटी पानड़ी वणै पण केई नॉव जीभ चढ्या बोलै बॉनै सुमरण पेटै गिणॉयतो हूँ तो नी भूल सकूँ। बॉरी चावणॉ है कि म्हॉरो ओ ऐतिहासिक प्रबध ग्रथ बैगो छपै-बैगो लोकार्पित हुवै। बॉनै सुमरण मॉड-बखॉणण रो म्हॉरो फरज पूरचॉ सरै।

ज्यूं-ज्यूं याद आवै त्यूं मॉडतो-वखॉणतो ही म्हारी भाव भूमिका सिरै चढाऊँ तो वॉं नॉंवॉं नै ओळखूं-जाणूं। राजस्थानी भासा-मायड़ भासा री गौरव गरिमा नै वधावण म घणै होस-जोस सूं पग मॉडे कलम चलावै जैकारा लगावै है। राजस्थानी भासा री सवैधानिक मानता मे घणी दूर तॉंईं री अड़चळ-वाधा लगावणी पार कोनी पड़ै। वैगी ही मानता देणी पड़सी। जितो मोड़ो करै वितो ही काळो टीको गहरीजतो ही लखावै। ख्यात वात इतिहास वॉंनें माफ कोनी करै। ऑंपणी सगळॉं री आवाज गूँजी ता मानता मिलणे मे घणी छेती-पछेती नी रैवैली। अै नॉंव तो गिणती रा है भलै घणॉं ही लोग म्हॉंरै सुर म सुर मिलावणिया है।

म्हारी इण रचणा रै रचाव रा प्रेरणा दायक साथी स्वर्गीय श्री डॉ प्रेमसा आचार्य डॉ छगनमोहता श्री उमेश आचार्य अर श्री बालचद सॉंड हा। वॉंनै सुमरण मे लावणो हूँ किंयॉं भूल सकूँ हूँ। म्हारो थालो फरज अर धरम वणै। डॉ वाबूलाल शर्मा, ाकाश पारख द्वारका प्रसाद व्यास श्री वद्रीप्रसाद गहलोत, शिवकुमार सिह चौधरी कीरचन्द व्यास रामेश्वरजी पॉडिया वासुदेव विजयवर्गीय भवानी शकर शर्मा श्री हरिबाबू (बीकानेर) सूर्य प्रकाश बिस्सा श्री मालचन्दजी तिवाड़ी श्री मूलदान देपावत (बीकानेर) श्री शिखरचन्दजी बछावत डॉ दिवाकर श्री उपध्यानजी कोचर।

श्री चन्द्रदान चारण अभय भटनागर हरीश भादाणी विद्यासागर आचार्य डॉ राजानन्द भटनागर वा श्री इन्द्रसिंहजी (राजपुरा) श्री बुलाकीदासजी जोशी श्री लक्ष्मीनारायण रगा श्री नदलाल व्यास विधायक श्री भीमसेन चौधरी विधायक श्री वी डी कल्ला पूर्व शिक्षामत्री श्री देवीसिह भाटी पूर्व सिचाई मत्री। का श्रीहीरालाल आचार्य श्री यादवन्द्र शर्मा चन्द्र श्री धनजय वर्मा श्री अन्नाराम सुदामा श्री गौरीशकर अरुण श्री वासु आचार्य श्री भगवानजी व्यास श्री जानकीनारायण श्रीमाली, श्री नीरज दइया श्री गिरधारीसिह रतनूँ, श्री हरीश बी शर्मा डॉ सत्यनारायण स्वामी डॉ शकरलाल स्वामी श्री शकरसिह श्री भॅवर भ्रमर श्री बुलाकी शर्मा श्री के राज शिवपाण्डे श्री पृथ्वीराज रतनूँ, श्री सत्यप्रकाश आचार्य, श्री रामनरेश सोनी श्री विपिन गोयल श्री नटवर व्यास कजळसा श्री कजळीदास हर्ष श्री वीरेन्द्र सक्सेना श्री शेखर सक्सना डॉ कालीचरण जी माथुर रामनिवास शर्मा झमणजी व्यास भाया व्यास देवदास स्वामी राजेश व्यास कमल रगा, मदनमोहन रगा मदन व्यास, महबूब मुश्ताक भाटी बुलाकी खॉं शतारजी मोइनुदीन मुमताज शमीम तोलारामजी पॉडिया तिलक जोशी राजेन्द्र जोशी गिरवर बिस्सा चचल हर्ष निर्मोहीव्यास, श्री पन्नालालजी सॉखला श्री दीपचन्द जी सॉखला डॉ दीपक पडित हर्ष मधु आचार्य युगल नारायणजी पुरोहित, मास्टर सुन्दर व्यास भॅवरजी आचार्य भैरूरतन रगा शाति प्रसाद बिस्सा महेशजी अग्रवाल मनू काका ललित व्यास डॉ अशोक आचार्य जनार्दनजी व्यास सरल विशारद दाऊजी व्यास दाऊजी आचार्य ओमजी आचार्य शिवकुमार सोनी जयनारायणजी व्यास कृष्ण शकर पारीक श्रीहीरालाल देरासरी डॉ शिवजी श्री भगवान सोनी श्री शिव भगवान जी बोहरा गाजी साद रफीक अमीन माहिर मुनीर अब्दुल रहीम पेशकार डॉ अजीज

सुलेमानी डॉ सावित्र मथुरेश पुरोहित पूर्णानद व्यास श्री मगत गुप्ता श्री हनुमानजी व्यास श्री मानमल आचार्य श्री सुन्दरलाल व्यास श्री गोपालजी व्यास श्री अरविद आचार्य श्री रामा तैलग श्री किसन चौधरी डॉ शिवचरण काश्यप डॉ अमरनाथ काश्यप श्री प दिवाकर किराड़ू, श्री शकरलाल हर्ष श्री शिवराज छगाणी श्री प्रेम सा जोशी श्री नदू जोशी श्री सन्नू जोशी, श्री सन्नू हर्ष श्री गोकुलजी पुरोहित श्री सुखजी पुरोहित श्री चतुरभुज मिस्त्री श्री सुखदेवजी मिस्त्री, श्री केदारजी रगा, श्री के के व्यास श्री शिवकुमार व्यास श्री कुशालचन्द रगा श्री नारायणदास रगा श्री शिवकृष्ण जोशी, *श्री मनोहर चावला श्री कृष्ण जनसेवी श्री सोमदत श्रीमाली लाधूजी व्यास* श्री गिरधरजी आचार्य, श्री रामरतन हर्ष श्री भवानी शकर शर्मा, श्री लूणजी छाजेड श्री गिराज जोशी, श्री लिछमण सुथार श्री नारायणजी एडवोकेट ईमानमल बोथरा एडवोकेट।

म्हारी इण रचणॉ नै बैगी सूॅ बैगी सपूरण कर लोकारपण करणै वासतै घणॉ साथ्यॉ हेतालुऑ घणी ताकीद करी है। श्री जेसराजजी—कन्हैयालालजी राठी रायपुर कलकता प्रवासी श्री मनूलालजी पारख श्री शकर बाबू, जीवन बाबू नत्थूजी पहलवान सॉवर सेठ श्री भॅवरलाल डागा हीराचन्द डागा गोपाल बोथरा रामचन्दजी बैद भॅवरलाल बोथरा धनराज जी डागा पुखराज जी बेगानी श्री नारायण बाबू बजाज श्री दाऊलाल कोठारी श्री आत्माराम अग्रवाल श्री सोहनलाल गोलछा श्री सत्यनारायण पुरोहित श्री जयकिसनदास सादाणी श्रीमती सरला बसत कुमारजी बिड़ला श्री दुर्गादत्त शर्मा श्री बृजलालजी मिश्रा श्री ओमप्रकाशजी मिश्रा श्री सोहनलाल शेखसरिया (सूरतगढ) श्री चॉदमलजी अमाणी श्री राजेन्द्र कुमार सॉड श्री रामलालजी जैन सरदारसैर वासी श्री नारायण दास मूॅधड़ा श्री भॅवरलालजी रिखबचदजी बैद श्री माणकचदजी रामपुरिया श्री रखबदासजी भसाळी, श्री कन्हैयालालजी सेठिया श्री अक्षयचदजी शर्मा तथा मुबई प्रवासी श्री शिखरचदजी प्रदीपजी सुराणा श्री कैलाशजी परसरामपुरिया आदि आदि। *घणॉ हेताळू राजस्थान मे* जयपुर वासी श्री चम्पालालजी रॉका ठा ओंकारसिह आई ए एस (सेवा निवृत्त) श्री कल्याणमलजी शर्मा जयपुर श्री एम एन धवन बीकानेर। डॉ शक्तिदान कविया श्री मरुधर मृदुल की कल्याणसिह शेखावत श्री हणूॅतसिह देवड़ा श्री नेमीचन्द जैन भावुक गोविन्द श्रीमाली मीठेश निर्मोही जाधपुर श्री श्रीमतकुमारजी व्यास जालार श्री सोहनलाल जी डागा श्री मूळचन्दजी मालू, सरदारशहर। श्री कातजी शर्मा अजमेर।

डॉ देवी प्रसाद गुप्त डॉ किरण नाहटा डॉ पुरुषोत्तम आसोपा। श्री गोपाळजी जोशी, श्री दाऊदयाल शर्मा श्री हरप्रसाद बगरहट्टा श्री गिरधारीलालजी व्यास श्री सूर्यशकरजी पारीक श्री देवकिशन राजपुरोहित डॉ विनोद विहाणी श्री दमजी श्री सत्यनारायणजी पारीक श्री मूलचदजी पारीक वैद्य श्री ठाकुर प्रसादजी शर्मा *कवि गीतकार मोहम्मद सदीक श्री भवानी शकर व्यास* विनोद

श्री गौरीशकर मधुकर अब्दुल वहीद कमल श्री रामजीवण सारस्वत श्री काति कोचर श्री शिवजी पुरोहित श्री ग्रानजी राजपुरोहित श्री चाँदजी गादी श्री जेतूजी गोपीजी सोलकी (पान भडार) श्री लालजी जोशी श्री मक्खन जोशी श्री डी पी जोशी श्री नानक जोशी श्री रामनारायण शर्मा तथा नरसगजी आचार्य। श्री दाऊ भादाणी डॉ वहाराम चौधरी श्री प्रेमजी ओझा श्री कृष्ण बिसनोई इण ग्रथ रै जल्दी सूँ जल्दी परकासण वासतै ताकीद करी है श्री पृथ्वीसिह जी घटेल श्री प्रतापसिह जी घटेल काधलोत राठोड़ श्री सूरजमाल सिह राठोड़ (भीवराजोत वीका) श्री भीवसिहजी राठाड़ (लाखणसर) श्री आनदसिह जी, (रामपुर) श्री जीवराजसिह राठोड़ (कुसुमदेसर) श्री मुकुनसिह राठोड़ श्री मोतीलाल जी पुरोहित श्री करणीदान सिह भाटी श्री लाजपत भान श्री गिरधारी लालजी भोबिया श्री रामसिह रोड़ा (आई पी एस सेवा निवृत्त) श्री अजीज आजाद डॉ नन्दकिशोर आचार्य डॉ गिरिजा शकर शर्मा डॉ श्रीलाल मोहता श्री रामकृष्णदास गुप्ता श्री अशोकजी व्यास एडवोकेट नोटेरी पब्लिक बीकानेर श्री भँवरलालजी स्वर्णकार सरदार मोहकमसिह श्री गोपीकिसन जोशी श्री बद्रीजी चौधरी श्री चाँदजी आचार्य, श्री चाँदमलजी गहलोत श्री जबार अली श्री लालचन्द भावुक श्री बुलाकी बावरा श्री करुणा शकर श्रीमाली। श्री जसकरण गोस्वामी मोतीलाल चाँडक।

इण ग्रथ रै परकासण वासतै डॉ श्री करणी सिह जी घणी प्रेरणा दीनी ही तथा परकासित देखणो चॉवता हा पण समै री साख कोनी लागी। वाँ सब लोगाँ री उडीक नै धिन-धिन बाँनै सुजस देवताँ थकाँ हूँ घणो राजी। म्हारी रचणाँ आपनै आछी फूटरी लागी तो म्हारी कलम सफळ जाणसूँ। रचणाँ आप रै कर कमलाँ मे सूँपताँ घणै मान सूँ हरख बधाई है। हूँ सूर्यवश रा कुलगुरु महर्षि वसिष्ठजी रो ही वशज हूँ—

सूर्यवश कुळगुरु वसिष्ठ रिसि
शक्ति-परासर वश पसार
समैसार री साख सिवरताँ
वेदव्यास धरियो अवतार

कुरु जाँगळ मरुजाँगळ भेळा
धिन धरती सुभ सुजस सँवार
घण लूँठा घण नामी जूझ्या
पग-पग सूरवीर भरनार

उण गुरुकुळ रो ही हूँ वशज
साच भणूँ निज धरम विचार
ख्यात बात इतिहासाँ छाया
छाण चालणी कलम कसार

सामपाँडिया री धरती पर
भीमपाँडिया भण्यो भणार
कर लोकारपित करूँ समरपित
लुळ-लुळ निव-निव भाव भरार

भीमपाँडिया
विश्वाम्बिका भवन
आशापुरा नयाशहर बीकानेर 334005

बीकानेर
11 अक्टूबर 1997
विजयादसमी वि स 2054

प्राकल्प

गई भोम रो बाहडू एक ऐतिहासिक प्रबन्धकाव्य है। इसकी मूल प्रेरणा कवि की जन्म-भूमि बीकानेर के इतिहास से सम्बद्ध है। इसकी सरचनात्मक पृष्ठभूमि के रूप म रचनाकार ने सर्वप्रथम बीकानेर के ऐतिहासिक सन्दर्भो की गवेषणा वैदिक वाड्मय से लेकर पुरा इतिहास पुराण तथा मध्यकालीन इतिहास के साक्ष्यो से प्रामाणिक रूप मे की है। पॉच सर्गो मे सृजित प्रस्तुत काव्य के कथ्य का ताना बाना बीकानेर के सस्थापक नरेश राव बीका से लेकर राव नैरा राव लूणकरण राव जैतसी तथा राव कल्याण की महिमा मडित शौर्य गाथाओं से बुना गया किन्तु काव्य नायक राव कल्याण के छोटे भाई राठौड भीमराज बीका के शौर्य पराक्रम एव विक्रम से ऊर्जस्वित अल्पज्ञात चरित्र का उद्घाटन सृजनचेतना का प्रस्थान बिन्दु है। बीकानेर के नरेशो (राव एव राजाओं) का राजस्थान के इतिहास (विशेषत ख्यातो मे) प्रमुखत बखान हुआ है। किन्तु राठौड़ भीमराज जैसे अतुलित पराक्रमी एव कूटनीतिक सूझबूझ वाले व्यक्तित्व का मात्र उल्लेख ही हुआ है। राजस्थान के रचनाकारो की दृष्टि से भी यह महान् चरित्र अलक्षित रहा।

राठौड़ भीमराज ने ही वस्तुत बीकानेर के लगभग उस आधे भाग को जिसे मालदेव ने राव जैतसी पर आक्रमण करके अपने अधिकार मे ले लिया था तथा मेडता के राव वीरम को भी पराजित करके उसके भूभाग पर ही अधिकार कर लिया था राठौड भीमराज ने अपनी कूटनीतिक सूझबूझ से राव वीरम को साथ लेकर शहशाह शेरशाह से सैनिक सहायता प्राप्त की तथा मालदेव पर आक्रमण कर पराजित किया। राठौड भीमराज ने बीकानेर के हडपे हुए भूभाग (गई भोम) को पुन प्राप्त करवाया। राठौड भीमराज के अतुल पराक्रमी महाप्रयास से ही बीकानेर का समग्र रूप सरक्षित हुआ जो तब से आज तक विद्यमान है। वस्तुत बीकानेर राज्य के खडित स्वरूप को अखण्डता प्रदान कर उसके खोये गौरव की पुन प्रतिष्ठा करने वाले राठौड भीमराज का परिपूर्ण चरित्र एक महान् काव्यनायक की गरिमा से युक्त होते हुए भी अल्पज्ञात बना रहा है। कविवर भीमपॉडियाजी ने इसी महान् चरित्र की कीर्तिकथा को समीक्ष्य प्रबन्धकाव्य मे महिमामडित किया है। पॉच सर्गो के समीक्ष्य प्रबन्धकाव्य की सरचना के काव्य मे इतिहास और कल्पना का मणिकाचन कवित्व सगम है। मायड भाषा के जुझारू रचनाकार एव समर्थ काव्यकार भीमपॉडियाजी की इस कृति म महती सृजन प्रेरणा के साथ सस्कारित काव्यशिल्प की आभा और जलमभोम के प्रति समर्पण निष्ठा

सर्वथा श्लाघनीय है। राठौड़ भीमराज के व्यक्तित्व एव कृतित्व का महत्वाकन करने वाले कवि के अनेक छन्दो मे निम्नाकित उद्धरणीय है।

राठौड़ॉ रो चालियो
बाईस पीढी राज।
जे नॉ हुवतो भीव तो
हुवतो घणो अकाज।।

समष्टि रूप मे प्रस्तुत प्रबधकाव्य इतिहास और राजस्थानी साहित्य दोनो ही क्षेत्रो मे श्रीपाँडिया की अनुपमकृति के रूप मे अविस्मरणीय एव सग्रहणीय ग्रथ सिद्ध होगा ऐसी मै मगलाकाक्षा करता हूँ।

डॉ देवीप्रसाद गुप्त
सेवानिवृत्त प्रिसीपल
राजकीय डूगर कालेज बीकानेर

सरला सदन जेलवेल
बीकानेर

गई भोम रा बाहडू

गई भोम रो बाहडू मे कवि भीमपाडिया ने बीकानेर राज्य का प्राचीन व अर्वाचीन इतिहास पद्य मे प्रस्तुत कर राजस्थान के इतिहास जगत मे अपनी एक अलग पहचान बनाई है। ग्रथ मे ऐतिहासिक घटनाओं को अधिक पुष्ट करने के लिय जहा उन्होने राजस्थान इतिहास के नवीनतम ग्रथो लेखो का उपयोग किया है वही राजस्थान राज्य अभिलेखागार की पुरा सम्पदा का अध्ययन कर उसको यथा स्थान अपनी बात का आधार बनाया है। राज्य के सस्थापक राव बीका से राव जैतसी और उसके पुत्र भीवराज की शौर्य-गाथा को तत्कालीन साहित्यिक और सामाजिक परिवेश के साथ प्रस्तुत कर ग्रन्थ के सास्कृतिक महत्व को भी बढा दिया है।

(डॉ गिरिजा शकर शर्मा)
सेवा निवृत्त उपनिदेशक
राज राज्य अभिलेखागार
बीकानेर

दिनाक 14 12 97

भीमपॉडिया   परिचय की परिधि मे

श्री भीमपॉडिया गत पॉच दशको से काव्य-क्षेत्र मे अलख जगाये हुए है। रचना धर्मिता उनके लिए सुविधा तथा अवसरवादिता नही अपितु स्वास एव रक्त प्रवाह की तरह स्वाभाविक एव आवश्यक है। वे अपनी सृजनशीलता के प्रति पूर्णतया समर्पित रहे है।

श्री पॉडिया एक ऐसे कवि है जिनके जीवन एव कविता के बीच हासिय नही खीचे जा सकते। सघर्ष उनका मुख्य स्वर है। कविता का भी और जीवन का भी। उनका जीवन जितने उतार-चढावो धूप-छाहो असुविधाओं एव विपत्तियो मे से निकला कविता भी उतने ही पडावो पर चढी-उतरी। सघर्ष का यह स्वर उनका जीवन साथी है। घटनाओं के बदलाव के साथ उनकी आस्थाए नही बदलती और न ही राजनीति के मोड़ ही बनते है। क्रॉति का स्वर उनकी धमनियो के रक्त प्रवाह की तरह स्वाभाविक एव हृदय के स्पदन की तरह स्पष्ट है। वे सघर्षो के माध्यम से सत्य के अन्वेषी रहे है। सहानुभूतियो के सहारे जीना उन्हे अभीष्ट नही और यही कारण है कि समाज के कथित प्रभावशाली क्षेत्रो की कृपा-कोरो या भृकुटि तनावो की बिना परवाह किये वे निरन्तर सघर्षशील बने रहे। उनकी कविता उनके सघर्षो की उपज भी है तो साक्षी और सहयात्री भी। जहॉ-जहॉ अन्याय-उत्पीड़न है पॉंडियाजी की कविता वही-वही चोट करती है—निर्णायक चोट। वह अपनी दिशा भी स्वय चुनती है। निश्चित दायरे बधे-बधाये राजमार्ग और सरकारी-मुद्राए उनके लिए अपरिचित रहे है। इस दृष्टि से देखे तो पॉंडियाजी युगकवि है—उनका स्वर ही जैसे युग का स्वर बन गया है। बीकानेर के इन पेतालीस वर्षो के साहित्य को पॉडिया-युगीन साहित्य की सज्ञा दी जा सकती है।

श्री भीमपॉडिया का जन्म 19 जुलाई 1929 आषाढ शुक्ला त्रयोदशी वि स 1986 को बीकानेर मे हुआ। 1948 मे वे कविता की ओर उन्मुख हुए और लगभग उन्ही दिनो अध्यापक बने। कविता और अध्यापन आज भी चालू है—सभवत ये दोनो उनके अभीष्ट है। उनकी कविताएँ प्रभावशाली स्वर ओजस्वी एव गति मार्मिक रही कि 1953 से 1960 तक उनकी कविता औ दिवलै री जोत अवै तू अेक सरीसी जगती रईजे आठवी कक्षा के पाठयक्रम मे सम्मिलित की गई। उनकी रचनाएँ राजस्थान एव भारत के प्राय सभी पत्रो मे प्रकाशित हुई है जिनमे वातायन मधुमती जागती जोत राजस्थान भारती नवजीवन सदेश पाक्षिक चेतना ललकार लोकजीवन जनता की आवाज नया ससार राजस्थानी वीर माहेश्वरी सेवक अग्रदूत क्रांतिदूत प्रजा सेवक गण-राज्य वर्तमान लोकमत राजस्थान विकास जय चित्तौड़ शिकायत सीमा-सदेश पार्थसारथी नवयुग आदि कुछेक पत्र है। इनमे वे पत्र भी सम्मिलित हैं

जो पूला-हिगनघाट दिल्ली कलकत्ता जयपुर, जोधपुर उदयपुर आदि से प्रकाशित होते रहे है। आकाशवाणी से भी प्रसारित होते रहे है।

स्वातत्र्योत्तर हिन्दी कविता और विशेषत हिन्दी गीत जितने आयामा म से निकला पॉडियाजी ने उन सबको स्पर्शित ही नही आत्मसात भी किया। उनके हिन्दी राजस्थानी गीतो के इतने अधिक विषय-विन्दु है कि कवि-व्यक्तित्व को निश्चित दायरो म बॉधे रखना कठिन हो जाता है। प्रकृति प्रणय शृगार, वियोग क्राति विस्फाट विद्रोह राजनीतिक चेतना सामाजिक उत्थान पारिवारिक परिवेश वचत विकास, आध्यात्मिक चितन आदि सभी विषय-विन्दुओं पर उन्होने अपनी कलम उठाई है।

पॉडियाजी के अध तक प्रकाशित तीन ग्रथ उनकी तीन भगिमाए प्रक्ट करते है। पुरुष के क्रूर चगुल म पिसती नारी की पीड़ा के विरुद्ध जन कवि ने सघर्ष-घोषणा की और उस टकराहट मे हित-अनहित को विना देखे जव वह जूझने लगा तो सन् 1958 म हाथ सू क्तर लीनो बोरलो कविता सग्रह प्रकाशित हुआ। राजनीति के क्रूर कुकर्मियो ने जब राजस्थान मे प्रजातत्र का गला घाटना चाहा तथा मानव-रक्त के मूल्य पर सिहासन प्राप्ति की कुचेष्टाएँ की तो कवि ने 1967 म लोकतन्त्र रा पाळी रोया कविता सग्रह से अद्भुत जन-चेतना मे सहारा दिया। भारत ने जब आत्म विश्वास से एक युद्ध जीता और शास्त्रीजी क नेतृत्व म चहुमुखी प्रगति की तो 1968 मे गरीब करोड़पति कविता-सग्रह सामने आया। यो उनकी कविताए कई सक्लनो मे है जिनमे अलगाजो बागा रा फूल आज रा कवि एव विजय हमारी है' सम्मिलित है।

कवि ने जीवन की व्यापकता एव अनुभवो की विविधता को अपनी कविताओं मे मूर्त रूप दिया है। उनका प्रकृति प्रेम इतना स्पष्ट एव उससे जुड़ी पारिवारिक मानसिकता इतनी प्रभावपूर्ण हे कि रचनाएँ स्वय ही एक परिवेश बन जाती है। राजस्थानी नारी ग्रीष्म के ताप एव वियोग की पीडा से जर्जरित होती है तो गीत उछलता है मेघा आव रे म्हॉरोडै गॉव र जब बादल उमड़-घुमड कर वर्षा के लिए आ जात ह तो गीत बरसता है आ बरसाळी बादळी आर जब ऐसी सुहानी ऋतु मे एक पत्नी अपने पति को गॉव लौटने का आग्रह करती है तो गीत जन्मता है म्हॉरी नणदल बाईसा रा वीर चाकरी छोड हजूरी चोड़ अबै थे घरॉ पधारो राज। खेत मे क्या हलकारो राज आपणी धरती म बरसी बिरखा मोकळी। फसलो के लहलाने एव पति के आगमन का सुख ये दो गीत भी भोगते है आव रमण री रात रमॉ धण रेत मे और जब ठडी मधरी पून चल हूँ हिवडै म हुळसाऊँ और अतत जब पति को कमाई के लिए जाना पड़ता है और तीज-त्यौहारो मौको-टोको पर नही आ पाता हे तो वियोगिनी के आसुओं की तरह गीत प्रवाहित होता है आस मिटै पळकॉ मे गळ गळ हिवड़ो आज पसीजे राज। गीत मात्र केवल दाम्पत्य जीवन तक ही सीमित नही रहते वरन् पुत्री की विदाई की पीडा भी उसमे प्रकट होती है। विदाई के क्षणो मे जैसे गीत की ऑखे भी नम हो जाती है चिड़कली उड़जा पॉख पसार।

कवि का दूसरा पक्ष सघर्ष विद्रोह एव राजनीतिक चेतना के साथ विकास परिक्रमा के स्वागत का है। प्रजातन्त्र के रथ की अगवानी एव विकास की आश इस गीत मे उदित होती है उजासो दीसै आभल कोर तो भावीपीढी के सुख की परिकल्पना जीवता रेवै रे थारा भूरिया लदूरिया मे उमडती है। सघर्ष के स्वर लीडरिया एव अफसरिया कविताओं मे है तो युद्ध-रत सैनिको का आह्वान मोरचो तकडो राखीजो' एव 'सीव रो रुखाळो म्हॉरो सायबो मे दृष्टिगत हाता है। मानवीय पीडा 'ज्यूँ रुळै ठीकरी मिनख रुळै कण म्हारो नॉव धरयो सिणगारी पॉव मे पगी नही अग मे झगी नही हाय मिनख रो ओ-समाज आदि गीतो मे है।

इस परिप्रेक्ष्य मे देखा जाये तो नैराष्य, अधकार भटकाव आदि जीवन के स्वर हो सक्ते है पर मुख्य स्वर नही। जीवन नियन्ता शक्ति कोई और ही है और वह आशा विश्वास सहनशीलता एव सघर्ष के माध्यम से जीवन का ताना-बाना बुनती है। कवि का यह आध्यात्मिक पक्ष है पर भक्ति ज्ञान एव कर्म के इस सम्मिश्रण मे भी वह आडम्बरो को नही पचा सकता। आध्यात्मिक पड़ाव की कुछ रचनाओं मे ये सभी स्वर सामने आते है लेख लिख्यो दाणै-पाणी रो चुगणो पडसी रे/बीज नै उगणो पडसी रे' मन मे मूरत जमी नही तो हिवडो है श्मशान रे जी म्हॉरा जिवड़ा जी आदि रचनाएँ भक्ति के सत्य आडबरो पर प्रहार नियति की शक्ति एव मानवीय आशा के सचय की पीठिकाएँ है। बालगीत लोरियॉ प्रयाणगीत आदि अनेक क्षेत्र इन पीठिकाओंकी और अधिक दृढता प्रदान करते है।

कविता और जीवन के बीच की दूरी देखनी हो तो भीमपॉडिया को नही किसी और कवि को ढूँढना होगा। हाथ सूँ क्तर लीनो बोरलो के रचनाकाल मे कवि को तथाकथित सामाजिक शक्तियो से टकरा जाना पडा व कई विपत्तियो का वरण करना पडा पर वह न झुका न रुका और न ही टूटा लोक्तत्र रा पाळी रोया के रचनाकाल मे राजस्थान के क्रूर कुकर्मी शासन के अत होने तक बीकानेर मे प्रवेश नही करने जूते धारण नही करके केवल एक वस्त्र मे रहने की प्रताप-प्रतिज्ञाएँ की और उन्हे अन्त तक निभाया। बेटी के मेहदी रचे हाथो की जीत हुई और कुकर्मी-शासन के अन्त की घोषणा के साथ कवि ने कन्यादान के लिए बीकानेर म प्रवश किया। आपात-काल क 19 महीनो के अधकारमय युग म जब अभिव्यक्ति का सकट था कवि ने खुली बेबाक व प्रत्यक्ष रचनाओं मे भूतपूर्व शासन का विरोध किया व यातनाएँ सही। नागार्जुन व रेणु को जेल जाना पड़ा, भीमपॉडिया जेल के फाटक तक पहुँचते-पहुँचते रह गये। पाछी बणजा ऊँदरी ईंण्डे नै महादेव बतावै—जोरामरद पुजावै रे आदि रचनाएँ इसी काल की है।

कवि की इस सृजनशीलता को भारत मे ही नही एशिया म मान्यता मिली है। Reference Asia (1975) एव Lesders of India (Who s Who) आदि ग्रथा मे

कवि के व्यक्तित्व एव कृतित्व के बारे मे सन्दर्भ दिये गये हैं। कवि होने के साथ-साथ वे पत्रकार सम्पादक समीक्षक एव राजनेता भी रहे है। जय जवान जय किसान के सम्पादक इस कवि ने नौकरी छोड़कर चुनाव लड़ा तथा राजस्थान के सर्वमान्य समाजवादी नेता लोकनायक मुरलीधर व्यास के साथ राजनैतिक सहधर्मिता का निर्वाह किया। स्वर्गीय व्यासजी के साथ वे पूना, गोआ बम्बई कलकता एव राजस्थान के प्राय सभी नगरो में गये व समाजवाद का प्रचार-प्रसार किया। उनकी 'झाला दवै झूँपड़ी की रचना जन-जन की भावनाओं का केन्द्र बन गयी थी।

मेघदूत एव गीता का अनुवाद उसके जीवततम अनुभवो के निचोड की तरह सामने आता है। राजस्थान के निवासी एव प्रवासी असख्य नर-नारियो की आध्यात्मिक प्यास इस अनुवाद से तृप्त हो सकेगी। अधिसख्यक निरक्षर नर-नारी गीता की ज्ञान गगा म नहाने का आनद सस्कृत के माध्यम से नही उठा सकते। यदि टीकाओं मे भटक ता उन्हे पद्य की गेयता एव गत्यात्मकता नही मिल सकत। और गीता ज्ञान रूखे उपदेशो की तरह केवल नीरस रूप मे ही मिल पाता है। आवश्यकता इसबात की है कि गीता का वह गुह्य-ज्ञान अपनी बोलचाल की भाषा मे उसी मिठास और उसी सुपरिचित शैली म जन-जन तक पहुचाया जाये। हर भाषा के अपने तेवर होते है और हर भाषा की अपनी ही लोच, अपना ही लावण्य और अपना ही स्वाद होता है। ये लोच लावण्य और स्वाद भी बने तथा गीता की शब्द-व्यजना के साथ न्याय भी हो सके-इन दो कठिनाइयो को पार करने का साहसिक प्रयास भीमपांडिया ने किया है। उनकी यह गीता राजस्थान क निवासी-प्रवासी भाई-बहिनो के लिये लोकगीता या जन-गीता बन जायगी-एसी आशा तो की ही जानी चाहिये।

भीमानन्दी भगवद्‌गीता के कुछ अश केवल बानगी के रूप मे प्रस्तुत कर रहा हू अर्जुन का सताप और भगवान कृष्ण का दिशा निर्देश इन श्लोका मे प्रकट होता है —

सजय बतायो—

रण भोमी म सोक गळगळो अरजुन इणतर वचन उचार
धनुस-बाण नै नॉख धनजै रथ मे जाय बैसिया लार ।।१-४७।।
आकळ-बाकळ साकाकुळ लख अरजुन ऑख भरायो ज्यूँ
मधुसूदन भगवान दया कर अरजुन नै समझायो यूँ ।।२-१।।

भगवान बखाण्या—

अधरम जोग कुजोग अरजुना बेमोकै क्यूँ मोह करे
सरग टाळ अपजस करवावै इसी ऑख क्यूँ आज झरे ।।२-२।।
थारै जोग कायरी कोनी मत वण तूँ कायर लाचार
हियो दूबळो मत कर अरजुन जुद्ध करणनै हुयजा त्यार ।।२-३।।
सोक करै पिंडत ज्यूँ बोलै जका सोक करणै नहि जाग
मरचॉ-जियॉं रो साक न लावै पण मनडै मे पिडत लाग ।।२-११।।

बोदा बसतर त्याग पुरुष ज्यूँ नुँआ-निकोरा बसतर धारै
त्यूँ बोदो तन तजै आतमा नुँई निकोरी काया धारै ।।२-२२।।
अमरी इसी आतमा इणनै काटण सकै न ससतर पाय
गाळ न बाळ सकै जळ-अगनी सकै न इणनै पून सुखाय ।।२-२३।।
अणछेदी-अणबळी आतमा अणभीजी अणसोख बराण
अेकरूप है सदा सनातन सरबाळै व्यापक थिर जाण ।।२-२४।।
जद-जद धरम घटै धरती पर अधरम बढै धरम घेराय
प्रगट हूँवूँ पारथ हूँ ही तो उणी काळ निज रूप रचाय ।।४-७।।
साधू पुरुष उबारण जग मे पापीड़ाँ रो करण विनास
धरम धजा थापण नै प्रगटूँ जुग-जुग मे हूँ जुग री आस ।।४-८।।
अरजुन सकळ भूत उतपत रो बीज जको हूँ ही हूँ जाण
म्हाँ बिन भूत चराचर कोनी कोई भी तो समझ सुजाण ।।१०-३९।।
जठै कृष्ण योगेसर है अर जठै धनुरधर अरजुन जाण
बठै विजयश्री और विभूती अचळ नीति म्हाँरो मत माण ।।१८-७८।।

भीमानन्दी भगवद्गीता निश्चित रूप से जन-जन तक पहुँचेगी यह मेरी दृढ धारणा है। इस गीता के नामकरण के पीछे भी एक विशेष पवित्रता और पूर्ण समर्पण की आस्थावान भावना रही है। बेलूर मठ कलकत्ता के ध्यान कक्ष मे स्वामी रामकृष्ण परमहस और विवेकानन्द की प्रतिमाओं के सामने कवि ने अपने आपको भीमानन्द घोषित किया तथा भीमानन्दी भगवद्गीता का अन्तिम स्पर्श वही पर देनेकी बात कही। कवि के शब्दो और क्रियाओं मे आज तक अन्तर नही रहा है और उनकी यह घोषणा भी सफल हुई।

कवि श्री भीमपाँडिया की साहित्य सर्जना को समाज ने भली प्रकार सराहा है। आपका अभिनदन आद्या आर्यसमाज ज्ञानोदय भारतीय विद्या मदिर शोध प्रतिष्ठान बीकानेर आदि विभिन्न साहित्यिक सामाजिक सस्थानो द्वारा किया गया तथा आपको पीथळ पुरस्कार 1995 राव बीका पुरस्कार 1995 स्व श्री बालचद सॉड स्मृति पुरस्कार 1997 स्व श्री भीकमचद अभाणी स्मृति पुरस्कार 1997 तथा गई भोम रो बाहडू पुरस्कार 1997 देकर सम्मानित किया जा चुका है। वैसे आप कभी भी पुरस्कार पाने की लालसा मे नही रहे है। उनकी स्पष्ट घोषणा है कि मै रचना धर्मिता के अनुसार कर्तव्य पूरा करता हूँ—रचता-गाता हूँ, किसी से भी सिफारिश-अभिशषा करवाकर पुरस्कार प्राप्त करना मेरा अभीष्ट नही।

निश्चय ही आपकी उक्त भाव भूमि अनुकरणीय है। साहित्यकार समर्पित भाव से समाज कल्याण एव राष्ट्र सेवा मे सनातन सत्य का चितेरा तथा शब्दब्रह्म का साधक बना रहे—श्री पाँडियाजी का अभीष्ट कालजयी सुकृत है। माँगकर पुरस्कार लिया क्या लिया ?

कवि श्री भीमपॉडियाजी का नया कविता सग्रह आखर गगा आखर गीत जन जन की भावनाओं को साक्षरता से जोडने तथा घर-घर मे साक्षर बनने-बनाने की प्रेरणा देने शिक्षा का प्रसार करने के उद्देश्य स रचा व प्रकाशित किया गया है। नव साक्षरो तथा प्रौढो के मन मे शिक्षा-प्रसार हेतु जागरूकता पैदा करने के लिए भावोत्पादक सकल्पनाएँ सरल-सुगम और सरस राजस्थानी भाषा-गीतो के माध्यम से अभिव्यक्त की गयी है। भाषा सरल-सुबोध प्रभावकारी ओज-माधुर्य से युक्त छद-अलकार लय गति की लावण्यता लिये हुए है। सपूर्ण राजस्थान के साक्षरता ऑदोलन को इन गेय गीतो से क्रातिकारी गति और उद्देश्यपूर्ति मे भारी सफलता मिलेगी ऐसी आशा की जानी पर्याप्त विश्वसनीय है। निश्चय ही यह कविता सग्रह जन-जन के हाथा ढाणी-ढाणी गॉव-गॉव कसबो-नगरा म धूम मचायेगा। आखर गगा आखर गीत ग्रथ साक्षरता अभियान यज्ञ की महक सुदूर राजस्थान ही नही अपितु सम्पूर्ण भारत मे फैलायेगा। आज तो सारा विश्व ही साक्षरता के यज्ञ मे रचा-पचा है।

श्री भीमपॉडिया जी का प्रस्तुत ताजा राजस्थानी प्रबधकाव्य ख्यात-बात-इतिहास के आधारो पर आधारित गई भोम रो बाहडू आपके हाथा म है। इस प्रबध काव्य मे आदि वैदिक अवधारणाओं व पौराणिक सदर्भो तथा ख्यात-बात-इतिहास मे वर्णित सूर्यवशीय क्षत्रियो के वशजो राष्ट्रकूटो-राठोड़ा के राजकाज और स्वतन्त्रता हेतु लडे सग्रामो का भव्य वर्णन किया गया है जो कि राजस्थान की सस्कृति और समाज व्यवस्था की अनुगूँज है। पॉच सर्गो मे सृजित प्रबध की जीवतता मनमोहक शैली भाव भाषा छद-अलकार रस निष्पत्ति के गरिमापूर्ण निर्वहन-सप्रेषण से सराबोर है। बीकानेर के सस्थापक राती घाटी के प्रणवीर राव बीका उसके वशज नरा-लूणा और परम विजेता राव जैतसी तथा राव कल्याण व उनके भाई वीर भीवराजजी गई भोम रो बाहडू के जीवन से सबधित ऐतिहासिक वीरोचित प्रसगा को प्रवाहपूर्ण प्रबध काव्य की मनमोहक शैली मे उकेरा है। काव्य की छटा आप स्वय परखेगे तो वाह-वाह। कहे विनॉ नही रहेगे ऐसा भरोसा है। निश्चय ही आप इसे पढकर पूर्णत गौरवान्वित होगे। कवि को साधुवाद दिये विनॉ नही रहेग यह मगल कामना मेरी है आपकी भी होगी।

—भवानी शकर व्यास विनोद
पवनपुरी बीकानेर

समरपण रा सुर

भीतडा ढह जासी गीतडा रह जासी



भीवराजोत बीका राठौड श्री नवलसिहजी पुत्र श्री जेसराज सिहजी राठौड पौत्र
श्री खुमाणसिहजी राठौड़ गॉव चलकोई (जन्म सन् 1898 मार्च 30
स्वर्गवास 20 नवम्बर 1989

ख्यात बात इतिहास रा पानॉ मॅडिया पुरखों रै पुण्य रा पवाड़ा अर रणखेतॉ मे सूरमाई रै सुजस रा अखी आखर-अमर गीत गूॅज्या-बखाण्या जुग जुगॉंतरॉ सुजस वधावै।

गई भोम रो वाहडू रो विडद धारणिया श्री भीवराजजी राठौड जैतावत बीका कुळ रा सिरमोड़ सूरमा कुसळ राजनेता अर समाजू सेवादार हा। तरवार री धार अर कलम री कार वॉरै सुजस रा अखी आखर—अमरगीत जुग जुगॉतरॉ तॉई गूॅजता रैसी। वॉरै सुजस मे सॅपाडा करता रैसी।

म्हारी कलम सूॅ कोरीजियोड़ो ओ इतिहासू प्रबधकाव्य गई भोम रो बाहडू भीवराजोत बीका राठौड़ स्वर्गीय ठाकुर श्री नवलसिहजी चलकोई रै सईकै वरस जनम दिन पर सुमरणसार-सरूप घणै मान सनमान सूॅ समरपित है।

'भीतॉ मॅडिया मॉडणा
गळै समै री धार
कागद मॅडिया गीत पण
गळै न आखर ध्यार

भीमपॉडिया बीकानेर

श्री करणी साळ (करणीजी रो डेरो)

राव श्री बीकाजी री लोक सभा

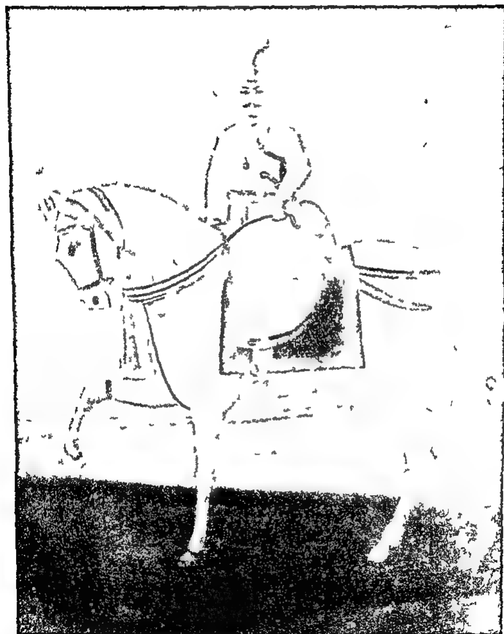
निर्मित (वि स 1545 वैसाख सुदी [illegible] शनिवार



किनियाणी करणी पग मॉड्या गढ गणेस री थापी नीव
लोकसभा बीवै थरपाई सुजस सैंमायो सिसटी भीव
जन जन पर किरपा री कोरौं धरम धार करियो सुभ न्याय
दसूँ दिसा सपै सुरह सौंयत जग मे विरुद बखाण्यो जाय
धिन धिन रे बीकाणो बको राठोड़ाँ री नामी धाम
दिन दिन धरा विगसती फूलै पग पग मुळक रमावै राम

वीकानेर सस्थापक राव श्री वीकाजी जोधावत राठोड

सस्थापन वि स 1545 वैसाख सुदी 2 शनिवार



जन्म वि स 1495 [illegible] सुदी 15 (ई सन 1438 [illegible] 5)

[illegible] वि स 1561 [illegible] 5

(ई सन 1[illegible]05 [illegible] 17) [illegible]

काको कॉँधल श्री बीकै रो जोधैजी रो भुजबँध वीर
घोडै चढ रणरग जीत तो दुसमण रा काळजिया चीर
बीकै अर बीका नगरी रो सरक्षक हो तेज तरार
जियो जितै जुध पर जुध जीत्या सदा निभाया क्वल करार
काँधलोत सूरा घण मुळकै ठोड़ ठोड़ जस रा गुण गाय
धिन धिन म्हाँरो वीर वडेरो म्हाँनै दिया सुजस सूँ छाय

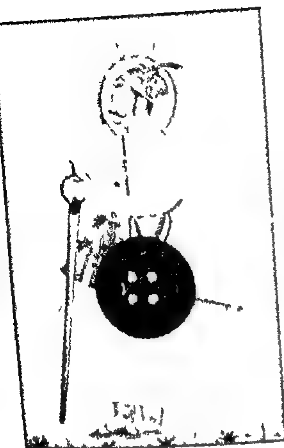


वीर श्री कॉधलजी राठोड़



वीर श्री बीदोजी राठौड़

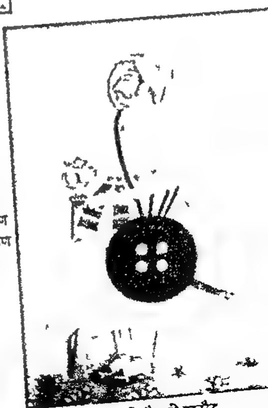
जोधैजी रो कँवर लाडलो नौरंगदे रै हिव रो हीर
बीकै रो भुजबँध भाई हो बीदो राव महाबळवीर
बीदाहद्द राठौड़ राज्वी जोधावत कुळ रो अवतस
बीकाणै मे बीदावाटी सिरै सूर बीदावत वस



करणी हाय नीव धर ऊँ‌ची दिप [illegible]
बरस सईकौं राम र"लो सुख [illegible]
राती घाटी गढ गणेस मड अ[illegible]
राठौड़ाँ रो सुजस सवायो अरी 15[illegible]
सवत पनरैसौ पैताळै सुभ बैसाख [illegible]
थावर बीज थरपदी वकौ बीका नगर [illegible]

राव श्री बीकाजी जोधावत राठोड
सस्थापक बीकानेर (वि स 1945)

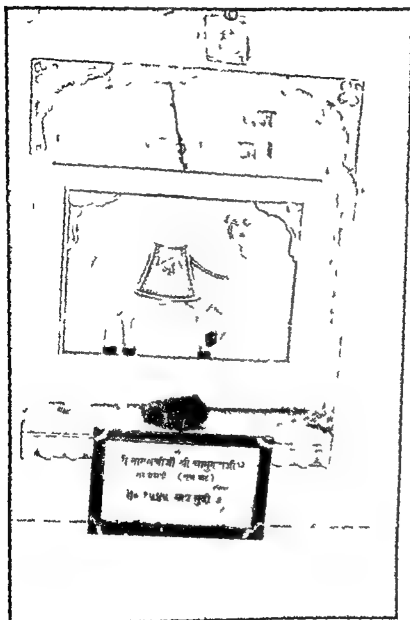
राव जैत रो डको वाज्यो आखी सिसटी हुई पिछाण
राठोड़ा रौंधड़ रणदक्ष सुवरण आँकौं मँड्या बखाण
राती घाटी गढ गणेस सूँ
पृष्ट कमरा साह भाज्यो
लालमलाल लोही सूँ लथपथ
गढ लाहोर जाय लाज्यो



राव श्री जैतसी राठौड़
[illegible] 15[illegible] [illegible]
[illegible] 15[illegible] [illegible]

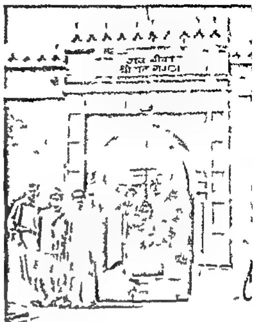
राव श्री बीकाजी जोधावत राठोड़ रे रैंवत घोड़ै री प्रतिमा

बीकानेर रातीघाटी गढ़ गणेस मे थापित



बीकै रो रैंवत घोड़ो जद दुसमणियाँ पर चढ़तो गाज
बडाँ बडाँ रा पाँव उखड़ता रणभूमी सूँ जाँता भाज
लोकग्यार अजूँ जग पूजै धोक विजै रा तिलक लगार
म्हाँ मे भी नित भरै रैंवती राठोड़ै बीकै री कार
गढ़ गणेस मे थान थरपियो लोक भाव भर गावै गीत
पग पग पर म्हाँनै नित सपी ज्यूँ सपी बीकै नैं जीत

रातीघाटी मे राव श्री बीकाजी गढ गणेश
सस्थापित वि स 1545 वैसाख शुक्ला बीज शनिवार



गढ घाल्यो बीकै जोधावत रणबकै कमधज राठोड़
माँ करणी सिर छत्र धरायो नित बाज्या घोड़ाँ रा पोड
राव जैत अधरातॉं भौंम्यो साह कामरो काळो चोर
भौंता सूद भाजियो खोड़ॉं नीठ पूगियो गढ लाहोर
साह कामरो भळै न आयो अेकर मे ही विगड्यो डोळ
ख्यात बात इतिहास बखाणै गढ गणेस बीकॉं री प्रोळ

राव श्री बीकोजी जोधावत सस्थापक गढ गणेस
बीकानेर री सूरज दरसण छतरी (वि स 1545)



गढ गणेस मे सूरज छतरी सूरजवसी दरस कराय
नित सूरज नै अरघ अरपतो लुळ लुळ बीको धोक लगाय
राव जैतसी अरघ अरपतो पछै अरोगण करतो थाळ
रणबको राठोड़ो बीको राव जैतसी मुळक्यो पाळ
कल्याणै भीवै जस अरज्यो राव मालदे पर पढ गाज
ख्यात बात इतिहास बखाणैं गई भोम रो बाहडू बाज



गई भोम रो बाहड़ू (ऐतिहासिक प्रबध काव्य रो सर्जक भीमपाँडिया पुत्र
श्री रामरखजी पॉडिया आपरी पोती दिव्या पॉडिया पुत्री श्री अणत् राजू पॉडिया साथ
(विश्वाम्बिका भवन बीकानेर म आपरे अध्ययन कक्ष मे डॉ शक्तिदान कविया
जोधपुर भेळै) प्रसन्न मुद्रा म दिनाक 11 अक्टूबर 1997 विजयादसमी वि स
2054 शनिवार

गई भोम रो बाहड़ू (ऐतिहासिक प्रबध काव्य रो सर्जक भीमपाँडिया पुत्र श्री
रामरखजी पाँडिया कविता पाठ मुद्रा मे जन्म वि स 1986 आसाढ सुदी
13 ई सन् 1929 जुलाई 19

राजस्थानी प्रबध 'गई भोम रो बाहडू'

सूरजमालसिह राठौड़

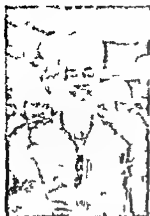
जनकवि श्री भीमपॉडिया द्वारा सरज्यो राजस्थानी प्रबध 'गई भोम रो बाहडू देख सुण घणो जी सोरो हुयग्यो, घणो चोखो लाग्यो। राती घाटी रो विरूद राजस्थानी भापा मे घणो फूठरो लिख्यो है। मायड़ भाषा राजस्थानी आर्य भापावा मे नामी भापा है। पण सिरै भापा हुँवताँ थका भी भारत रै सविधान मे आठवी अनुसूचिका मे राजस्थानी भापा नै आदरजोग मान्यता नही दिरीजी जकै रो घणो दुख राजस्थानी भापा रा बोलण वाळा अर राजस्थानी प्रेमी नौ किरोड़ लोगाँ नै है। राजस्थानी भापा सीधी सस्कृत सूँ निकळी आछी सम्पन्न टकसाळी स्वरूप म घणी मीठी भाषा है। राजस्थानी भापा रो प्राचीण रूप मरुवाणी-मरुभाषा-डिगळ मे हो। हिन्दी साहित्य रै आदिकाळ-वीरगाथा काळ-चारणीकाळ मे राजस्थानी डिगळ भापा ही नामी भापा ही। हिन्दी खड़ी बोली गुजराती आदि अनेक भापावाँ डिगळ पछै री भापावाँ है। बीकानेर री कुळदेवी माँ करणीजी मायड़ भापा राजस्थानी मे ही बोलता-बखाणता हा।

राजस्थानी डिगळ भापा मे पुराणै काळ मे अनेकूँ लूँठा चारण कवि आपरी कवितावाँ लिखी। बीकानेर रा राजावाँ अनेकूँ लूँठा चारण कवियाँ नै घणा लाख पसाव-करोड़ पसाव भेट कर आदर दियो। महाराज पृथ्वीराज पीथळ री वेलिक्रिसन रुक्मणी तो आखै ससार मे नामी हुई है। अनेकूँ नामी चारण कवि हुया है बीकानेर री धरती पर। मधुलाल चारण चारण खिड़िया बीठू सूजा, बीठू भीम, दयालदास सिढायच आदि घणजोगा चारण कवियाँ नै पुरस्कार-लाख पसाव करोड़ पसाव भेंट कर आदरीज्या। कविता ख्यात बात, इतिहास रा प्रमाण घणाँ ओपता ओळखीजै। राव बीकोजी काँधलजी राजस्थानी मे ही बतळ करता हा। महाराजा गगासिहजी, राजस्थानी भाषा और साहित्य रा बाळा सरक्षक हा। खुद राजस्थानी मे बोल-बतळ करता। घणाँ सावणाँ लागता हा। अनूप सस्कृत पुस्तकालय नै घणो रूड़ो रूप देय सँवारियो। अनेक ग्रथ प्रकाशित करवाया राजस्थानी गीत मजरी वीर गीत दयालदास री ख्यात जसवत उद्योत आदि नामी ग्रथ प्रकाशित हुया। मरुगगा लावणिया भागीरथ ही नही विद्या रा भडार अर विद्वाना रा पारखी तथा सरक्षक भी हा। डॉ टैसीटोरी ठा रामसिहजी प सूर्यकरणजी पारीक स्वामी नरोत्तमदासजी आदि घणकरा विद्वान राजस्थानी भाषा रा हिमायती त्यार करिया। राज रा आदेश प्रचार भी राजस्थानी म किया।



थाँरो रुड़ो रूप अेकर जिण देख्यो निजर
सो किम भूलै भूप वो राठोड़ी तेज तप
श्री चन्द्रसिंह बिरकाळी लिखियो

महाराजा सार्दुलसिहजी आपरै राज्यकाल मे सादुल राजस्थानी रिसर्च इस्टीटयूट री जनवरी सन् 1945 मे थापणा कर राजस्थानी भाषा रै विगसाव अर मानता सारू मोकळी चेसटा करी। ठा रामसिह डॉ दशरथ शर्मा अगरचन्द नाहटा श्री लालचन्द कोठारी जिसा चावा-ठावा विद्वान निदेशक हा। श्री नरोत्तमदास जी स्वामी श्री नाथूराम जी खड्गावत श्री अक्षयचन्द्रजी शर्मा परिषद सदस्य एव सचिव हा। श्री मुरलीधर व्यास राजस्थानी, बद्रीप्रसाद साकरिया मूलचन्द प्राणेश, चन्द्रदान चारण ओर श्री भीमपॉडिया जिसा प्रतिष्ठित व्यक्ति सहयोगी हा। श्री सुनीति कुमार चाटुर्ज्या जिसा लूँठा राजस्थानी प्रेमी सादुल राजस्थानी रिसर्च इस्टीटयूट रै मचपर पधारिया।



नृप सादुल जन हित कियो
सिरै देस हित काज
राजस्थान बणाइयो
हाथाँ सूँप्यो राज

सादुल राजस्थानी रिसर्च इस्टीटयूट बीकानेर की प्रथम वार्षिक रिपोर्ट से साभार (जन्म कथा)

बीकानेर का प्रतापी राठौड़ वश आरम्भ से ही सरस्वती का समाराधक और साहित्य एव कला का सरक्षक तथा आश्रयदाता रहा है। बीकानेर के नरेशा ने अनेको सु -कवियो सु-लेखको विद्वानो और कलाकारो को आश्रय देकर भगवती भारती के भडार की श्री वृद्धि की। उनकी साहित्य सबधी दानवीरता इतिहास मे कहावत बन चुकी है। महाराजा रायसिहजी ने अपने राज्य काल मे तीन करोड़ पसाव (करोड़ के पुरस्कार) सौ लाख पसाव (लाख के पुरस्कार) सवा तीन करोड़ नकद दो हजार हाथी पचास हजार घाड़ ओर 25 गॉव कविजना का दान मे दिये।

आखै भारत मे राजस्थानी भाषा रै विगसाव सारू लूँठा सत जैन साधु अर चावा-ठावा विद्वान बराबर साहित्य सरजणॉ मे लाग्या है। आधुनिक स्वर्गीय अर जीवित साहित्यकाराँ मे घणाँ लूँठा सिरै नाँव साहित्यकार कवि है। श्रीविद्याधर जी शास्त्री श्री अक्षयचन्द्रजी शर्मा डॉ नन्दकिशोर आचार्य श्री मनोहर शर्मा, चन्द्रदेव कन्हैयालाल सेठिया, श्रीलाल नथमल जोशी भरत व्यास मेघराज मुकुल चन्द्रसिह बिरकाळी रावत सारस्वत गिरधारीसिह पड़िहार मुकनसिह राठौड़ भीमपाँडिया गजानन वर्मा मोहम्मद सदीक धनजय वर्मा साँवर दइया यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र श्री माणकचन्द रामपुरिया श्री मत कुमार व्यास श्री गौरीशकर आचार्य गौरीशकर

मधुकर रानी लक्ष्मीकुमारी चूँडावत लक्ष्मीकात शर्मा, श्री रामदेव आचार्य गगाराम पथिक श्री चम्पालाल राका गिरधारी लाल व्यास, विद्यासागर, श्री गोविन्द श्रीमाली श्रीलालचन्द भावुक श्री बुलाकी बावरा वासु आचार्य, देवदास श्री हरदत्त सहगल डॉ बाबूलाल शर्मा, ए वी कमल डॉ शकरलाल स्वमी देवकिसन राजपुरोहित मोहनलालजी पुरोहित, दीनदयाल ओझा, चन्द्रदान चारण मनुज देपावत अन्नाराम सुदामा, हरीश भादाणी, भवानीशकर व्यास नानूराम सस्कर्ता ओंकार पारीक शिवराज छगाणी सूर्यशकर पारीक श्याम महर्षि डॉ श्रीलाल मोहता डॉ गिरजाशकर शर्मा डॉ देवी प्रसाद गुप्ता मदन केवलिया पुरुषोतम आसोपा किरण नाहटा मूलदान देपावत मस्तान, शमीम श्री बल्लभश दिवाकर श्रीलाल जोशी भवरलाल भ्रमर कान्ह महर्षि, किशोर कल्पनाकात सीताराम महर्षि चचल हर्ष श्री दाऊदयाल व्यास अजीज आजाद अब्दुल रहमान पेशकार मालचन्द तिवाड़ी रामजीवण सारस्वत, झमणलाल व्यास बुलाकी शर्मा शिव पाण्डे, नीरज दइया श्री लक्ष्मीनारायण रगा सत्यप्रकाश आचार्य रामनिवास शर्मा पृथ्वीराज रतनू, कमल रगा, मदन रगा श्री कृष्ण बिश्नोई आदि-आदि घणाँ ही लोग राजस्थानी भाषा रै विगसाव अर सविधान मानता सारू जूझता जुड़्या रैया है।

ससद मे ओजूँ सुर गूँजै

महाराजा डॉ करणीसिहजी साँसद तो राजस्थानी भाषा री सविधान मानता सारू घणी लूँठी पैरवी आवाज ससद मे उठाई अर राजस्थानी भाषा रै विगसाव सारू मोकळो ही काम कियो। राजस्थानी भाषा रा अनेक गथा नै उजास मे लावण सारू घणो मोकळो जतन कियो। राजस्थानी भाषा रा लेखका नै घणो ही आदरजोग सहयोग दियो। राजस्थानी भाषा मे काम करणियाँ विद्वाना नै आदरजोग सहयोग देवण सारू अनेकूँ ट्रस्टा री थापणा करी अर बीकानेर मे कळादीर्घा सजवाई।



अेकर ओजूँ आव
करण खड्ग ले हाथ मे
जन रो सुखड़ो लाव
निरप हियै भर साथ मे

महाराजा सासद डॉ करणीसिहजी रै मायड भाषा राजस्थानी नै सविधान री आठवी सूचिका मे आदरजोग थान-मुकाम थापित करणै रो लूँठो सकळप पूरो करणो अबै आपाँ राजस्थानी रा नव किरोड़ हेताळू लोगॉ रै हाथाँ मे है। राजनैतिक निर्णय लेय हाथ उठावाँ-वधावाँ तो सकळप पूरो हुवण मे ताळ कितीक लागै ? हाथ साधो तो खरी।

राजमाता सुशीला कुमारीजी तो राजस्थानी भाषा साहित्य-सस्कृति रै विगसाव प्रचार प्रकाशन सारू घणो मोकळो सहयोग देवै है। आप तो राजस्थानी लोक कला लोक गीत लोक साहित्य रै भडार भरण सारू हरदम त्यार रैवै है। अर समरथ सारू मोकळो सहयोग करै। डॉ करणीसिह जी द्वारा स्थापित नागरी भडार बीकानेर म राजमाता सुदर्शना कुमारी कला दीर्घा रै विगसाव मे भी घणो मोकळो सहयोग दियो है। आगै भी समरथ सारू मोकळो सहयोग रो हाथ बधासी।



करणी सूँ करणीसिह तॉई
अेक उठी है गूँज
जे सुख चावै साथ जीव नै
मायड भाषा पूज

आपॉ मायड़ भाषा राजस्थानी री सविधान मानता अर विगसाव सारू भेळी चेसटा करॉं। जुझारू कवि श्री भीमपॉडिया जी तो भरपूर चसटा अर सघर्ष कर ही रैया है। आपॉ सगळा ही भरपूर चेसटा मे लाग जावॉं तो सविधान मानता मायड़ भाषा राजस्थानी नै घणी बैगी मिल सकैली। इण मे फरक रत्ती भर ही कोनी।

निसचै ही राजस्थानी भाषा व्याकरण सम्मत घणी लूँठी-सम्पन्न भाषा है। इण भाषा रो सबदकोस विश्व री घणी नामी भाषावॉं अर हिन्दी भाषा रै सबद कोसॉं सूँ भी घणो लूँठो है इण भाषा रा लोकगीतॉं रो मिठास ससार री कोई भाषा मे कोनी मिलै। राष्ट्र प्रेम अर वीर भावना सूँ सरावोर राजस्थानी भाषा रो मुकाबलो दूजी किसी भाषा कर सकै है ? बताओ तो खरी।

> अेक परचै मे श्री भीमपॉडिया जी जोरदार पक्को सबूत देय बतायो है कि राजस्थानी भाषा स्वतन्त्र सशक्त सम्पन्न अेकरूप टकसाली भाषा है। —श्री भीमपॉडिया उवाच

देखिये —

[स्वतन्त्र गणतन्त्रात्मक भारतीय सविधान लागू होने से पूर्व ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस बम्बई कलकत्ता-मद्रास द्वारा एन हिस्टोरिकल एटलस ऑफ दी इण्डियन पैनिलसुला का प्रथम एडीशन 1949 मे प्रकाशित हुआ था। उसी म क्रम सख्या 40 41 पृष्ठ 82 से 85 तक मे पृष्ठ 82 83 पर विवरण सहित भारत की आर्यन लेग्वेजेज (आर्य भाषाओं) और पृष्ठ 84 85 पर नॉन-आर्यन लेग्वेजेज (द्रविड़ भाषाओं) के भाषागत ऐतिहासिक नक्शे प्रकाशित हुए थे। भारत की आर्य भाषाओं का यह आलोक्य नक्शा है—आप लोग प्रस्तुत नक्शे मे झॉकिये तो सही !]

गौर से झॉकिये तो इस नक्शे मे राजपूताने (राजस्थान) की प्रमुख आर्य भाषा राजस्थानी का भू-प्रदेश सम्पूर्ण क्षेत्र स्पष्टत दर्शाया हुआ है जो कि अपनी ऑचलिक बोलियो से सयुक्त-सम्पन्न समृद्ध अधिकाधिक समरस एक रूप टकसाली स्वरूप मे स्वतन्त्र परिनिष्ठित प्रादेशिक भाषा एक मात्र राजस्थानी से परिलक्षित है। निश्चय ही राजस्थान की समग्र एक प्रादेशिक भाषा राजस्थानी है जिसे भारत ही नही विश्व भर के अनेक ख्याति प्राप्त लब्ध प्रतिष्ठित भाषा शास्त्री एव विद्वानो ने समृद्ध-सम्पन्न स्वतन्त्र परिनिष्ठित आर्य भाषाओं मे गिनाया है।

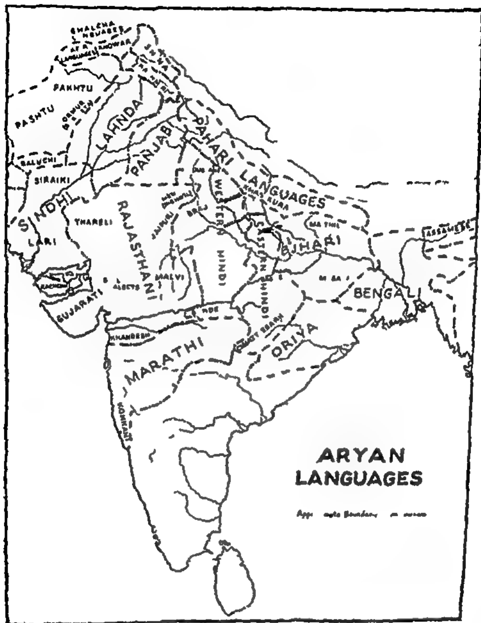
परन्तु हमारी उक्त प्रादेशिक मायड़ भाषा राजस्थानी भाषा को भारत के सविधान मे आठवी अनुसूचिका मे सम्मानपूर्वक मान नही दर्शाकर उपेक्षा भाव प्रकट किया गया है। जबकि हमारी प्रादेशिक मायड़ भाषा 'राजस्थानी भाषा स अनेक अत्यधिक छोटी-छोटी भाषाओं को सविधान में सम्मानपूर्ण मानता से महिमा मण्डित किया जा चुका है।

इसी कारण वर्षो से लम्बे अर्से से राजस्थानी भाषा को सविधान की आठवी अनुसूचिका मे सम्मानपूर्वक न्यायोचित मान्यता की माग पूरी करने हेतु राजस्थान के करोड़ो लोग आप हम आग्रहपूर्ण ज्ञापन-आदोलन करते आ रहे है जिसे चरम लक्ष्य प्राप्ति तक चलाये रखना हमारा जन्म-जात मौलिक अधिकार एव दायित्व है। विश्वास रखिये हमारी राजस्थानी भाषा भारत ही नही विश्व की अधिकाश भाषाओं की एकरूपता-परिनिष्ठता से कुछ अधिक ही एक रूप परिनिष्ठित स्वतन्त्र-समृद्ध-टकसाली स्वरूप की भाषा है।

सशक्त दावे एव सम्पूर्ण सामर्थ्य के साथ हम आदोलनरत रहे तो हमारा पुनीत मौलिक अधिकार प्राप्ति का सकल्प अवश्य ही सफलीभूत होगा। निश्चय ही हमारी प्रादेशिक मायड़ भाषा राजस्थानी भाषा को सविधान की आठवी अनुसूचिका मे निकटतम भविष्य मे ही सम्मानपूर्ण मान्यता देनी होगी। सकल्प सजोये रखे-उपेक्षापूर्ण अन्याय के बादल छटके रहगे। राजस्थानी भाषा की सवैधानिक मान्यता के विराधी असल मे राजस्थानी सपूत नही है। दरअसल मे सच्चे राजस्थानी सपूत वे है जो यह मानते है कि सम्पूर्ण राजस्थान प्रदेश एक राजनैतिक प्रादेशिक इकाई है और उसकी एक ही समृद्ध सम्पन्न अधिकाधिक एक रस एक रूप टकसाली स्वरूप मे स्वतन्त्र-परिनिष्ठित भाषा है—'राजस्थानी भाषा ।'



जनकवि श्री भीमपॉडिया जी द्वारा ऐतिहासिक एटलस मे सूँ छाप्यो आर्य भाषावाँ रो ऐतिहासिक मानचित्र साफ बतावै है कि राजस्थानी भाषा निपट निरवाळी स्वतन्त्र आर्य भाषा है।



आपाँ राजस्थान प्रदेश रा वीर सपूता मायड भाषा राजस्थानी री संवैधानिक मानता रो दिढ सकळप लेय ओक सुर सूँ आवाज उठावाँ अर राजनैतिक निरणै लेवाँ तो राजस्थानी भाषा नै संविधान वारै कुण राख सकैळो ? जागो तो खरी ।

सूरजमाल सिह राठौड़
उपशिक्षा निदेशक (सेवानिवृत्त)
चलकोई हाउस बीकानेर

राजमाता बीकानेर

गई भोम रो बाहडू

राजस्थानी भाषा मे काव्य परम्परा बड़ी समृद्ध रही है। कवि भीमपाँडिया की कृति 'गई भोम रो बाहडू' हमारे पूर्वजो की गौरव-गाथा पर लिखा गया प्रबन्ध काव्य है जिसमे बीकानेर राज्य इतिहास की अनेक महान् विभूतियो के वीरतापूर्ण क्रियाकलापो पर बड़े रोचक ढग से प्रकाश डाला है। मै श्री पाँडिया को ऐसी सुन्दर काव्यकृति रचने पर बधाई देती हूँ तथा कामना करती हूँ कि वे निरन्तर साहित्य सृजन करते हुए मायड़ भाषा राजस्थानी की सेवा करते रहे।

सुशीला कुमारी

Dr GOPAL JOSHI
Ex MLA (Bikaner)
Vice President
Rajasthan Pradesh Congress Committee (I)

'गई भोम रो बाहडू'

जन कवि श्री भीमपाँडिया रो मायड़ भासा राजस्थानी मे रचित ऐतिहासिक प्रबध काव्य रा पाचू सरगा रा केई अश सुण्या अर सुण'र जी सोरो हुयग्यो। राती घाटी री माटी री महक मन मोवे। भाव भासा अलकार, प्रकृति चित्रण मे राजस्थान री सस्कृति सामाजिक चेतना अर सूरापण री सौरभ नै घणमोली अभिव्यक्ति दी है। म्हारी बधाई अर मगल कामना है।

—डा गोपाल जोशी

गीत

प्रेरणा सुजस

जैतराव सुत जीतियो
भीवराज भूपाळ
गई भोम रो बाहडू
वज्यो वीर लकाळ
कलम कोर कीरत कथ्यो
वीरों सुजस उजास
भीव भणै सागर री पाळों
मँड्यो ख्यात इतिहास
उणी भीवराजोत रो
बीका वंश विसाल
नवलसिंह रै ऑगणै
पळकै सूरजमाल
चलकोई रो चानणो
पग पग कर परकास
राठोड़ाँ रणबकडाँ
भरसी नुँओ हुळास

चितराम

कॉंधल रणमलोत रणवको
जोधाणै सूं आयो साथ
मुँवो राज थरप्यो वीकॉणो
बीकै माथै राख्यो हाथ

श्री कॉंधल वीकै रो काको
श्री जोधै रो भुजवँध वीर
राठोड़ॉं रो सुजस वधायो
मात भोम म राख्यो सीर

श्री कॉंधल हो सुजस सुमेरु
बेजोड़ो राठोडो वीर
जन जीवण री सुख सॉंयत हित
धीर वीर मिनखापण हीर

श्री कॉंधल जद रणभोमी मे
घाड़े चढ्यो उछळतो वीर
दुमची पुसतग तग उछळता
अरिदळ बिखर भाजतो भीर

श्री कॉंधल भायॉं रो भाई
वैरयॉं रो वैरी हो जाण
सदा सजग रण राता मातो
राती घाटी सरब सुजाण

श्री कॉंधल छतरी छतरप हा
घण जोधो हो अमर सुजाण
मिनखापणी माण मरजादा
राठोड़ॉं री राखी आण

श्री कॉंधल धिन धिन राठोडो
धिन धिन धिन जननी जायो
बीकै रो साग़ी काको हो
बीकाणै रो हो पायो

श्री बीकै रो वस घणो ही
बीकाणै बसियो चहुँ ओर
आण माण मरजादा पाळी
अमर हुयो भुजबळ रै जोर

बीकैजी रै नेरो लूणो
लूणकरण सुत जैतोराव
जैतै रै कल्याण प्रगटियो
सुत दूजो श्री भीवाराव

धिन राणी कसमीरदे
सोढी जाया सूर
वीर राव कल्याणसी
भीवराज मुख नूर

ख्यात बात इतिहास मँडायो
भीव बखाणै साच
करणी कलम सवाई राखै
जग जाणै जस वॉंच

ख्यात बात इतिहास बखाणै
गढ गणेस री पळकी पाळ
गई भोम रो बाहडू बाज्यो
बीकाणै री कर रिछपाळ

भीवराज जग मे धुर थरपी
समैसार राठोडी आण
प्राण जाय पर वचन न जावै
वचन निभायॉं ही मुख पाण

जोधॉं रै जाधा ही प्रगट
सबळा सायर सिंह सपूत
राज तेज मे रग सवायो
जुलम्यॉं रै मारया नित जूत

बिनॉं जूत जुलमी कद मानै
बै तो मिनखपणै रा काळ
राज समाजू काण न राखै
मरजादा री तोड़ै पाळ

मगळाचरण

कुळदेवी म्हॉरी मॉ जगदम्बा
आ म्हॉरै सागै आ
दुसमणियॉ सूॅ करी रुखाळी
सकट सभी टळा

पूजा और पुजापो ओही
धूपूॅ ध्यान धरा
छप्पन भोग दाळ घी दळियो
रुच रुच भोग लगा

छान झूॅपड़ा घर आसरिया
राम कुटैया छा
मुळकतड़ा टाबर ऑगणियै
अन धन सभी पुरा

घणी ओपमॉ लायक भासा
वाणी मधुर गुॅजा
सातूॅ सुर मे गाऊॅ सुरीलो
इमरत रस बरसा

दिव्य दीठ दे दिव्य तेज दे
हिवडै जोत जगा
आखो विश्व अेक घर करदूॅ
घर घर मगळ गा

कण कण मे सुख सोरम भरदै
मारग सुगम बणा
पग-पग विजै दान दे मैया
लाल धजा फरुका

समरपण रा सुर

भीतडा ढह जासी गीतडा रह जासी

ख्यात वात इतिहास रा पानों मँडिया पुरखाँ रे पुण्य रा पवाड़ा अर रणखेतों मे सूरमाई रे सुजस रा अखी आखर-अमर गीत गूँज्या-वखाण्या जुग जुगॉतरॉ सुजस बधावै।

गई भाम रा बाहडू रो बिड़द धारणिया श्री भीवराजजी राठौड़ जैतावत बीका कुळ रा सिरमोड़ सूरमा कुसळ राजनेता अर समाजू सेवादार हा। तरवार री धार अर कलम री कार बॉरे सुजस रा अखी आखर--अमरगीत जुग जुगॉतरॉ ताँई गूँजता रैसी। बॉरे सुजस मे सँपाड़ा करता रैसी।

म्हारी कलम सूँ कोरीजियोड़ो आ इतिहासू प्रबधकाव्य गई भोम रो बाहडू भीवराजोत बीका राठोड़ स्वर्गीय ठाकुर श्री नवलसिहजी चलकोई रै सईकै बरस जनम दिन पर सुमरणसार-सरूप घणे मान सनमान सूँ समरपित है।

भीतों मँडिया मोडणा
गळै समे री धार
कागद मँडिया गीत पण
गळै न आखर च्यार

भीमपॉडिया, बीकानेर

पैलो सरग

पैलो सरग

सुरसत मात सारदा सिवरूँ
सिरै गजानद ध्यान धरूँ
कलम सवाई राखै म्हॉरी
लुळ लुळ विनती अरज करूँ

अगन पवन जळ थळ नभ सिवरूँ
कण कण जीव जगत आधार
मिनख जमारो पग पग फूलै
जियाजूँण सुख फळ ससार

भुजबळ कलम सारदा सारे
सबद साधना साच सँवार
वीर भोम वीरा ही थापै
न्याय धरम री काढै कार

मात सारदा कोठै व्यापै
ऊँडै हिवड़ै सोच विचार
ख्यात वात इतिहास बखाणै
घण निरमळ जीवण री धार

नव रस राग छतीसूँ रळकै
छळकै सबद सबद रो सार
अलकार ओपै उपमावै
छद ताळ लय गत ससार

अमर गीत वीरॉ रा गाऊँ
कण कण व्यापै कलम करार
धरती री धुन धरम फळावै
सुर सपै समरस ससार

वीरॉ तणी सॉभळी धरती
वीराँ रो नित सुजस उजास
वीरॉ बिनॉ जगत ॲधियारो
वीराँ रा नित निरमळ सॉस

आदू सिसटी सूँ ही चालै
जन रखवाळी राखै आस
राज तेज वीरॉ नै सूँपै
मिनखापण मे कर विसवास

मिनखा धरम अेक जग व्यापै
सदा सनातन सुजस सुजाण
धरती पूत सध्योड़ो छतरी
धार सकै धरती रो माण

सूरज देव अेक जग तूठै
करै आपरी कळा विसेस
सूरजवसी जणै सूरमो
निरमळ धरै मिनख रो वेस

कोट किरोड़ूँ किरणॉ विकसै
कण कण व्याप किरण प्रकास
वीर भोम वीरा नर प्रगटै
जीव जगत री पूरै आस

अमरा हुवै राष्ट्रकुळ नायक
अमर भारती रा सिरमोड
रणभोमी रज रळै रेत मे
जलम भोम हित काया जोड़

समैसार ही साख सँवारै
धीरज धरम धरा पर धार
अपराध्यॉ नै आप नावडै
पाप मिटा घण मेटै भार

दसूँ दिसा दसला जद नाचै
सुख सॉयत सब करदै खार
जन जन रो जीवण जद बिलखै
नेजा ढाल सजै तलवार

जननी जलम भोम रा जाया
जद जागै जद भलो विचार
जुलमी जद हद पार जुळबुळै
जद कोई लेवै अवतार

अणु परमाणू वणे आदमी
अलख निरजन लै अवतार
समैसार रो ऊदो आयाँ
कण कण रो करदै उद्धार

जाग जगत मे जद कद जागै
गीत जागरण रा नित गाऊँ
कलम करारी चालै चवड़ै
जलम भोम हित सीस चढाऊँ

सूर्यवस सिसटी मे व्याप्यो
वीर पुरुष प्रगटै ससार
समैसार सपाडे सप्या
मिनखा धरम सनातन धार

सूर्यवस सूरज सूँ चाल्यो
अखी जगत पायो विस्तार
सरब प्रथम जगती जग मानै
आद ब्रह्म प्रगट्यो अवतार

आद ब्रह्म रो पुत्र मरीची
कस्यप उणरो पुत्र सुजाण
कस्यप पुत्र प्रगटियो सूरज
सूर्यवस रो जनक सुजाण

सूरज सुत महाराज मनू सूँ
तसठवा दसरथ सुत राम
राम पुत्र लवकुस प्रगटाया
लव कुस सुत प्रगट्या सब धाम

कुस वसज दिखणादै भारत
जाय बस्या पसरया घण ठोड़
वैही राष्ट्रकूट जग जाण्या
राष्ट्रकूट सूँ ही राठोड़

राष्ट्रकूट राठोड़ राजवी
ठोड ठोड़ जा थरप्या राज
सूरवीर बळ विकरम धारी
जाण प्रजा ओढाया ताज

राष्ट्रकूट रो अरथ कथीजै
राष्ट्र वस—राष्ट्र सिरमोड़
ख्यात बात इतिहास बखाणै
राष्ट्रकूट ही है राठोड़

राष्ट्रकूट हा घणा सूरमा
सूर्यवस कुस री सतान
राज थरप दिखणादै भारत
घण पायो आदर सनमान

राष्ट्रकूट रा थभा विकस्या
घणा मोकळो बध परिवार
आखै भारत मे घण ठोड़ाँ
राज थरपियो धारमधार

राष्ट्रकूट राठोड राजवी
बळ विकरम धारी घण जाण
राज चलावण घणाँ निपुण हा
धरम करम दिढ नीति सुजाण

दिखणादै भारत मे नामी
राष्ट्रकूट हा वस महाण
राष्ट्रकूट ही राठोड़ा हा
घण वळसाळी ख्यात बखाण

विकरम सवत साढ पाँच सौ
पैलाँ हो इदर सिर ताज
ख्यात बात इतिहास बखाणै
राष्ट्रकूट राठोड़ो राज

सूरवीर इदर राजा हो
पळकै हो मुखडै पर नूर
राठोड़ाँ रो राजथान हो
घण नामी जनपद यवूर

राजा इदर पूत कृष्ण रो
नामी राष्ट्रकूट राठोड़
जुध जीत्यो जयसिंह सोळकी
राठोड़ाँ पण छूटी ठोड़

समैसार री लीकालोळी
की राठोड़ हुया बळहीण
सोळक्याँ रो वार वैयग्यो
लख राठोड़ी सगती खीण

पण की ठोड जमा बैठ्यो पग
राज दंतिवरमा राठोड़
सासण तंत्र हाथ मे काबू
घणाँ बरस तॉई बी ठोड़

वीर दंतिवरमा रो पोतो
गोविंदराज बडो राठोड़
राठोड़ाँ रो सुजस रुखाळ्यो
घणो तापियो हो उण ठोड़

पुळकेसी सोळकी माथै
राजा गोविंद करी चढाई
पण आखिर मे मेळ मिलापाँ
दोनाँ लीनी संधि कराई

गोविंद राजा रो पड़पोतो
दंतीदुरग हुयो सुरजीत
समत आठसौ इग्यारै मे
लाट देस लीनो हो जीत

सोळकी राजा वल्लभ नै
हरा दियो कर घण भेभीत
बिड़द लियो राजाधिराज रो
अर परमेसर रो जुधजीत

कोसळ कलिंग टंक अर माळव
जीत लिया श्रीसैल सुजाण
श्री वल्लभ रो नाँव धारियो
बधा घणो राठोड़ा माण

कांची केरळ चोळ पाड्य दव
सोळक्याँ नै दिया हराय
बजरट अर कन्नौज जीत नै
दी राठोडी धाक जमाय

दंतिदुरग रै पछै सभाळ्यो
काकै कृष्ण राठोड़ी राज
घण राठोड़ो सुजस वधायो
सिर पर धारयो जस रो ताज

जग नामी अेलोरा माँही
सुभ मिंदर कैलास चिणायो
सिल्प कळा मे अजब अणूंठो
राठोड़ाँ रो सुजस सवायो

कृष्णराज रै पछै हुयो भळ
दूजो गोविंदराज सुजाण
पण भाई ध्रुव राज खोसियो
खुद बणग्यो राजा ले माण

ध्रुव राजा हो घण बळसाळी
उतराखँड घण लीनो जीत
वड़ाँ वड़ाँ नै मार पछाड़्या
राजा सब हुयग्या भैभीत

रामेसर सूँ लगा अजोध्या
सगळै छायो उण रो राज
राठोड़ाँ री बधा कीरती
सिर पर धारयो जस रो ताज

ध्रुव राजा रै पछै हुयो भळ
तीजो गोविंदराज सुजाण
जीत लियो गुजरात माळवो
इतिहासाँ मे मड्यो बखाण

तुंगभदरा बेगी गंगबाड़ी
केरळ पाँड्य चोळ पर छाय
सिंघळ रो राजा अधीण कर
काँची नृप नै दियो हराय

ईंदरायुध कन्नौज राज नै
तीजै गोविंद लीनो जीत
मिहिर भोज प्रतिहार पछाड्‌या
पाल राज भी लियो सुजीत

सोरासठर मडळ चढ लीनो
अरबॉ नै भी दिया हराय
चकरायुध कन्नोजी नै भी
लीनो तुरता फुरत दबाय

राष्ट्रकूट तीजी सगती हा
भारत मे बळवीर महाण
सदी आठवी ऊदो लायो
दतिदुरग राठोड़ सुजाण

उतराधै भारत मे बधियो
बेंगी कलिंग मालवो जीत
राष्ट्रकूट राठोड राज नै
घण लूँठो नित कियो सुजीत

राठोडॉ रा पग घण मॉड्या
सुजस वधायो पग पग छाय
दुसमणियॉ नै मार भगाया
ख्यात बात इतिहास बताय

उण तीजै गोविंद री सगती
दीनी लूँठी धाक जमाय
राठोड़ॉ रो तेज बधायो
दसूँ दिसा जैकार लगाय

पछै हरा प्रतिहार नागभट
मारवाड मे दियो भजाय
राठोड़ॉ रो माण बधायो
दसूँ दिसावॉ गूँज सवाय

गोविंदराज मरयॉ रै पीछै
सुत अमोघ राजा हो जाण
उण राठोड़ै महाराज्य रो
मालक हुया वीर बळवाण

माणखेट उणरी रजधाणी
घण राठोडो राज बधायो
दुनिया भर मे चार बादसा
वॉ मे हो वो अेक सवायो

उण अमोघ री पीढि सातवी
कृष्णराज तीजो सुभ आयो
भुजबळ पाण राज सुख भोग्यो
घण राठोडो सुजस सवायो

सवत अेक हजार अेकै मे
अल मसरूदी कियो बखाण
मुरु जल जहब ग्रथ म लिखियो
मॉड्यो बोलै सुजस सुजाण

हिंदुसथानी सब राजॉ मे
राज बड़ो वळहरा सुजाण
माणखेट उणरी रजधाणी
ऊँच पहाडॉ पळकै भाण

अणगिण हाथी घोडा लसकर
पैदल सेना घण बळवाण
माणखेट रो राज राठोडो
राष्ट्रकूट रो घणो बखाण

समैसार पण कदैन चूकै
टळैन उणरी कोई काट
तीजै कृष्णराज रो भाई
खोटिग निवड्यो सफा निपाट

माळव रा पड़िहार कोपिया
माळखेट रो डोल्यो ताज
महाराज्य रो पतन आयग्यो
राठोडॉं रो रुळग्यो राज

सवत अेक हजार गुणतीसै
खोटिग ऊपर पड़गी गाज
माळव रै पड़िहारे राजा
चढ श्री हरस लूँटियो राज

लूँठी सेना करी चढाई
घण बाज्या घोडॉ रा पोड़
लुँटगी माणखेट रजधाणी
रुलग्या राष्ट्रकूट राठोड़

खोटिग रो उतराधिकारी
दूजो करक राज हो जाण
बळ हटियो दुरबळ घण राजा
खुसा दियो राठोडो माण

सोळकी राजा तैळप चढ
घणो कियो उतपात बधाय
करक राज सूँ राज खोसियो
छाती माथै फौज चढाय

गग बस रै गोलवॉतक
मारसिघ की कियो उपाय
राठोडॉ सिरदारॉ सागै
राज बचॉवण करी सहाय

तीजै कृष्णराज रै बेटै
चौथै इदर नै दे राज
गादी सूँप कियो निजराणो
राठोडॉ रो सारण काज

पण नॉ पार पडी कोसीसॉ
ढबियो नी राठोडो राज
मारसिघ अर इदर राजा
अनसन कर मर कियो अकाज

पण राठोड़ मुलक घण पसरया
ठौड़ ठौड हो उण रो राज
समैसार पण उथळ पुथळ मे
गया राज घण हुया अकाज

नन्न कीरती राज तुग रा
सिळालेख राठोडा जाण
बुद्ध गया मे मिल्या बखाणै
इतिहासॉ परमॉण सुजाण

राठोडॉ री साख घणैरी
दिखणाधै भारत म जाण
बॉरी घण जागीरॉ पसरी
काठ-लाट-सौदती सुजाण

सवत नौसौ पैताळीसै
राज राठोडो हो गुजरात
राष्ट्रकूट बसज सासक हा
घण नामी इतिहासॉ ख्यात

पण पीछै गुजरात राज नै
आप राज मे लियो मिलाय
माणखेट रै कृष्ण दूसरै
समैसार री नीत समाय

सवत बारैसौ पिचियासी
सोळक्यॉ घण तेज तरार
माणखेट नै जीत लियो जद
राठोडो छूट्यो अधिकार

समैसार रै उण सकट मे
घणी कठिण वेळा ही जाण
तो भी कायम हो सौदति मे
राठोडॉ रो राज सुजाण

मध्य प्रॉत अर राजपुताणै
और बदायूँ मे लै जाण
उण सकट री घड़ियॉ मे भी
हो राठोडो राज सुजाण

मध्यप्रात रै भानपुरै अर
मध्यप्रदेश रै बेतुळ मॉय
विक्रम सदी सातवी तॉई
राठोड़ी अधिकार बताय

सवत नौसौ सतरै मॉही
ख्यात बात इतिहास कथाय
पथारी भोपाळ राज मे
राठोडॉ रो राज बताय

राजपुताणे मे भी बोलै
घण लूँठा राठोड़ा राज
थान हटूँडी अर धनोप मे
पळकै हा राठोडा ताज

सवत अेक हजार तेसठ तक
राजपुताणे म घण छाय
ख्यात बात इतिहास बखाणै
राठोड़ाँ रा राज सवाय

विकरम सदी ग्यारवी तोंई
थान बदायूँ म हो राज
राठोडा घण तेज तापिया
पळका करता हा सिर ताज

प्रतिहारा कमजोर पड्या जद
लियो राज कन्नोज दबाय
पण थिर राख सक्या नॉ सावळ
राठोडा जुध गया हराय

चद्रदेव गाहड़वाळो आ
हमलो कर चढियो घण गाज
लूँट पाट कर राठोड़ाँ सूँ
खोस लियो कन्नौजी राज

तदसूँ बै गाहड़वाळाँ रा
बणग्या हा लूँठा सामत
पण राठोड़ आपरी खिमता
नामी हा राजा श्रीमत

सवत बारैसौ पचास मे
साबदीन गोरी ले फौज
गहड़वाळ राजा जयचद नै
हरा खोस लीनो कन्नौज

जयचद गाहड़वाळ हारियो
डूब मरचो जा गगा माय
काळवियाँ रो भोजण बणग्यो
हिम्मत हार हबोळा खाय

उण जयचद घण कुजस कमायो
जियो जितै कर कोझा काज
मिनखा धरम कदै नाँ पाळ्यो
पनपायो नित जनखा राज

राष्ट्रकूट राठोड़ी साखाँ
दिखणादै भारत सूँ चाली
जुँआ जुँआ रजवाडा थरप्या
मुख मडळ पळकती लाली

राठोड़ाँ रै हियाँ जोस हो
भुजबळ पाण दिखाळ्यो जोर
होस होसळो कदैन त्याग्यो
रणराती नैणा री कोर

समेसार हारचा जीत्या पण
जुध मे लड्या सूरमाँ साथ
धाक जमाई आखै भारत
राठोड़ाँ रा लाम्बा हाथ

रणखेताँ सूँ मुख नाँ मोड़्या
कदैन भाज्या बण रणछोड़
माणखेट सूँ साखा पसरी
उण साखा रा ही राठोड़

अेक चद्र राठोड बदायूँ
जद थरप्यो राठोडी राज
जन जन आदर दियो मोकळो
धणैमान ओढायो ताज

दूजो राजगिदी पर बैठो
चद्रपाळ सुत विग्रहपाळ
तीजो राजगिदी पर बैठो
विग्रहपाळ सुत भूवनपाळ

चौथो राजगिदी पर बैठो
भुवनपाळ रो सुत गोपाळ
पचम राजगिदी पर बैठो
गोपाळै रो तिमुनपाळ

छठवो राजगिदी पर बैठो
छोटो भाई मदनपाळ
सतवो राजगिदी पर बैठो
मदनपाळ सुत जयचद राव

अठवो राजगिदी पर बैठो
जयचद पूत हरिसचद राव
हरिसचद सुत सेतरामजी
सेतराम सुत सीहा राव

सीहाजी रै आसथानजी
प्रगट हुयो राठोड़ो राव
धिन राणी उछरँगदे जायो
आसथान रै धूहड़ राव

धूहड़जी रै रायपाळजी
रायपाळ रै कान्हो राव
धिन किल्याण देवड़ी जायो
कान्है रै जालणसी राव

जालणसी रै छाडो जलम्यो
छाडैजी रै तीडो राव
धड़ भागण तारादे जायो
तीडैजी रै सलखो राव

सलखै रै मलिनाथ प्रगटियो
भळै प्रगटियो वीरम राव
वीरम रै चूँडोजी प्रगट्यो
चूँडैजी रै रिणमल राव

रिणमल री राणी भटियाणी
भलो प्रगटियो जोधो राव
नानाणै मे जलम्यो जोधो
नानाणै पळ वणियो राव

मेवाड़्याँ नै कूट भजाया
जिण कब्जै मडोर कियो
रावळ वरसल री मदताँ सूँ
चढ पाछो मडोर लियो

जोधो बैर बाप रो लेवण
जा पूग्या सीधो मेवाड
राठोड़ाँ री आण निभाई
राणैजी री फौज पछाड

घोड़ा पाय पिछोळाँ धिरिया
जोधोजी आया मडोर
जैजैकार हुई राठोडी
सुभ ऊगी सोनळिया भोर

जोधाराव गजब हो जोधो
बैर्‍याँ ऊपर चढतो धाय
राठोड़ाँ रो सुजस बधायो
ख्यात बात इतिहासाँ छाय

वीर विकरमी रिणमलजी रो
सुत नामी हो जोधो राव
बैर्‍याँ री छाती पर चढतो
मार उछाळो करतो घाव

सवत चवदैसौ बोतरियै
माह बैसाख वदी री चौथ
सुभ बुधवारै वीर जलमियो
जोध राव श्री रिड़मीलोत

सुभ सवत पनरैसौ दस मे
जा जीत्यो मडोवर धाय
मारवाड री परधा मोंही
राठोड़ाँ री धुरी थपाय

चिड़िया नाथ महर कर दीनी
गढ धातण री ठौड़ बताय
अखी राज जोधै रो थपसी
जुगाँ जुगाँ ताँई जस छाय

सवत पनरैसौ पनरै री
जेठ सुदी ग्यारस सुभ आय
राठोड़ाँ री महमाँ मोटी
दियो जोधपुर नगर वसाय

चिड़िया नाथ रिसी घण लूँठो
चिड़िया टूँक मेक तपतो
प्रभु सुमरण करतो मन भरतो
हरी नॉव हिवड़ै धरतो

चिड़िया टूँक दुरग गढ थाप्यो
गढ मेहराणो वजै सवाय
जगचावो गढ भलो चिणायो
करणी हाथाँ नींव लगाय

सकट टाळ घणा जुध जीत्यो
जीत नगारा दिया घुराय
राठोड़ाँ रा पॉव जमाया
दुसमणियाँ नै पगाँ लगाय

अमर नॉव जोधै जस लीनो
घणा ऊजळा करिया काम
सवत पनरैसौ सैताळै
जोधै राव लियो बिसराम

सन ग्यारैसौ चौराणूँ मे
मचियो घण घमसाण
महमद गौरी आ अठै
मसळ्यो भारत माण

ख्यात बात इतिहास मँडायो
जनगण मुखाँ बखाण्यो जाय
महमद गौरी दिल्ली दाबी
पछै लियो कन्नौज दबाय

सवत बारैसौ पचास मे
साबुदीन गौरी री फौज
जयचद गाहड़वाळै सूँ ही
खोस लियो सासण कन्नौज

साही सेना सूँ जद हारयो
गहड़वाळ जैचद कन्नौज
पकड़ जेळ मे जडण मारणै
छाती चढगी गौरी फौज

उण बेळा जैचद पछतायो
लख्यो न कोई और उपाय
जैचद गहड़वाल झट भाज्यो
डूब मरयो जा गगा मॉय

डूब्यो राज गहड़वाळाँ रो
हाथाँ सूँ खुसग्यो कन्नौज
करी बदायूँ पर नित घाताँ
राठोड़ाँ पर कोप्या रोज

सवत बारैसौ तेपनवै
कुतबदीन अेबक घण छाय
राज बदायूँ राठोड़ाँ रो
फूट फरेबी लियो खुसाय

इणतर राठोड़ाँ दुख छायो
गहडवाळियाँ काढी रीस
रजपूती पर कळँक लगायो
ऑतड़ फडा दॉतडा पीस

सेतराम सुत हरिसचद्र रो
थभ बदायूँ मे राठोड
राठोडी जस लोक बसायाँ
थापै हो रजपूती जोड़

गहड़वाळियाँ री घण घाताँ
मन माथो हुयग्यो बेहाल
सेतराम री काया छीजी
राठोडाँ री छीजी पाळ

सेतराम घण सॉसाँ घिरियो
बारूँमेर घिरायो काळ
राज बदायूँ रो बीखरियो
मिनख धरम री टूटी पाळ

सकट घिरियाँ लोक बिगड़ियो
सेतराम लीनो सन्यास
राठोड़ाँ रो लोही खिड़ियो
सह न सक्यो टूटी घण आस

सेतराम सुत सीहो रूळग्यो
खाखो विळखो हुयो सुजाण
गहड़वाळियाँ री करतूताँ
राठोड़ाँ री उतरी पाण

छोड वदायूँ री धरती नैं
राष्ट्रकूट राठोड़ी भाण
मारवाड़ मरुभोमी आयो
सेतराम सुत सिहो सुजाण

सवत तेरैसौ आसरियै
पाली आया सीहा राव
भुजवळ सूँ आ थान थरपिया
राठोड़ाँ रा जमिया पाँव

वस पाली रै आसै-पासै
राज खेड़ मे लीनो थाप
राठोड़ी विकसावण लड़ियो
पग पग पर रण रळियो आप

पाली मे पग घणा मँडाया
थाप सक्यो नाँ पाली राज
साही फौजाँ सूँ किचरीज्यो
तखत मिल्यो नाँ मिलियो ताज

ख्यात बात इतिहास बखाणै
सीहो हो राठोड़ी पायो
छतरी धरम पाळ रण रळियो
जग आखै मे जसड़ो छायो

सवत तेरैसौ तीसै मे
काती वद वारस दिनवार
सीहा राव रणाँ रण लड़ता
अमर हुया हा धाम पधार

सन् बारैसौ तेवोतर मे
रण भोमी मे आयो काम
दुसमणियाँ रै घेरै माँही
सीहा राव लियो विसराम

बीठू गाँव धाम पाली रो
सीहाराव समायो राम
मारवाड़ मे सिरैमौड़ है
राठोड़ाँ रो तीरथ धाम

सीहै रो सुत आसथान हो
रणरँगियो राठोड़ो भाण
राठोड़ाँ री पत राखण नै
ठोड़ाँ-ठोड़ाँ किया ठिकाण

आसथान गादी सभाळी
पण पाली नाँ सँभळी हाथ
साही फौज चढी छाती पर
समरथ बिनाँ विखरग्यो साथ

आसै-पासै ईडर दाबी
लड़ भिड़ दुसमणिया पछड़ाय
पण छोटै भाई सोनग नै
ईडर दीनी भाव थपाय

साही फौजाँ सूँ टकरायो
आसथान जूझ्यो रण माँय
आखर फौज चढी छाती पर
प्राण त्यागग्यो सरग सिधाय

सन बारैसौ इकराणै मे
रण भोमी मे आयो काम
दुसमणियाँ सूँ घिर्‌यो घिरायो
आसथान लीनो विसराम

मारवाड मे पाली नगरी
घण नामी बिणजाराँधीण
पाली री धरती आ दाबी
खिलजी साह जलालूदीन

आसथान रो सुत धूहड़ हो
रणबको राठोड सुजाण
सूरवीर सेना नायक हो
रजपूताँ री राखी आण

धूहड़ राव बैठ गादी पर
दियो राज नै की विसतार
आसै-पासै गॉव डेढसौ
दाब लिया तलवारॉ धार

प्रतिहारॉ नै घणॉ खदेड़्या
अेकर तो दाब्यो मडोर
पण आखिर प्रतिहारॉ भिड़तॉ
गयो सरग प्राणॉ नै खोर

सवत तेरैसो छॉसठ मे
पॅचभदरा रै तिगड़ी गॉव
दुसमणियॉ सूॅ लडतो भिड़तो
रण भूमी मे गयो समाय

रायपाल गादी पर आयो
पाछो दाब लियो मण्डोर
काबू नही हुई पण धरती
रण लड़ियो-भिड़ियो घणघोर

मालाणी री धरा दबाई
लीनी सगती घणी बधाय
भाट्यॉ सूॅ भिडियो रणबको
रण भोमी मे दिया हराय

राव कान्ह गादी पर बैठो
लियो बाप रो राज सॅभाय
आछा करम किया आगी बण
सुख सायत सूॅ राज चलाय

राजगिदी जालणसी बैठो
शूरवीर बलवीर सुजाण
उमरकोट रा सोढॉ सूॅ भिड
रण जीत्यो राठोड़ॉ पाण

भीनमाळ रा सोळकियॉ नै
जीत विजै डको बजवायो
रण भोमी मे हरा सीख दे
विरथा करियो गरव गळायो

जालणसी रा सुत छाडोजी
पछै राव गादी पर आया
वीर घणा बळवाण घणा हा
राज धरम सुभ करम कराया

उमरकोट रा सोढॉ सूॅ भिड़
रणभोमी मे हाथ दिखाया
दड दियो सोढॉ नै भारी
दड भेट मे घोड़ा लाया

जैसलमेर राव पर चढ़िया
राज खोस गादी उतराया
उण री बेटी नै परणीज्या
गादी पर पाछा बैसाया

पाली सोजत भीनमाळ अर
गढ जालोरॉ करी चढाई
ऑक्स मे ला कर घण चूक्यो
रण मे जीत सदा ही पाई

सोनगरॉ चौहाण देवड़ॉ
पण हुय भेळॉ घात लगाई
छाडोजी आखर मे घिरग्या
त्याग्या प्राण वीर गति पाई

सन् तेरैसौ चमाळीस मे
रण भोमी मे आया काम
दुसमण री फौजॉ सूॅ भिडतॉ
छाडै राव लियो विसराम

छाडैजी रो सुत तीडोजी
राठोड़ी रॉवड़ हो जाण
महावीर बळवीरो जोधो
सूरवीर हो घणो सुजाण

राव राजगादी पर आयो
छाड़ैजी रो तीडोराव
लियो बाप रो बदळो साचो
सोनगरा चौहाण हराय

भीनमाळ पर कब्जो करियो
राठोडॉ रा रग सवाया
वाळेचा अर भाटी-देवड़ा
रणभोमी मे मार नसाया

पग-पग पर माया घण जोड़ी
जस जीत्या सनमान बधाया
दुसमणियॉ रो करण खातमो
सोळक्यॉ नै घणा छकाया

आखर दुसमण मिळ चढ आया
जद सक्ट रा बादळ छाया
सीवाणै री रखवाळी मे
रण मे जूझ्या प्राण गॅवाया

तीडैजी रो सुत सलखोजी
पछै राव गादी पर आयो
भली भॉत धरती रखवाळी
राठोड़ॉ रो *माण* बधायो

जनता नै सुख सायत सपी
पग-पग लीनो सुजस सवायो
राठोडॉ रो इण धरती पर
इणतर राज बधतो आयो

सलखै रो सुत मलीनाथ हो
दूजो वीरम बीर सुजाण
राठोड़ो सनमान वधायो
रजपूतॉ री राखी आण

मलीनाथ हो घणो साहसी
घणो विकरमी घण बळधारी
जीत महेवा री धरती नै
राठोड़ॉ री धाक पसारी

सिध माळवै री सीवॉं सूॅ
जोड़ सीव सू सीव बॅधाई
वैभव सगती बधा मोकळा
सुभ रावळ री पदवी पाई

चूॅडोजी वीरम रो सुत हो
बाळकपण गादी पर आयो
छव वरसॉ री छोटी ऊमर
खतरॉ मे जीवण विगसायो

चूॅडैजी नै मिल्यो सासरो
सासरला ईंदा पड़िहार
दियो दायजै मे मडोवर
वस्यो बठै ही घर परिवार

बडो हुयो जद राज जमायो
राठोडॉं रो माण सवायो
घण लूॅठा रणखेतॉ मॉही
बळ विकरम परताप दिखायो

सन् चवदैसौ तेईसै मे
आयो रणखेतॉ मे काम
राठोड़ॉ री धाक पसारी
चूॅडैजी *लीनो* विसराम

चूॅडैजी रो सुत रिणमल हो
वीर विकरमी घणो सुजाण
पण कान्है नै गादी सूॅपी
महर घणी किरपा री ताण

जुध जीत्यो मडोवर रिणमल
राठोड़ॉ रो राज बधायो
रिणमल रो नित धूॅसो बाजै
मारवाड़ मेवाड़ सवायो

बहन आपरी हसा बाई
राणै लाखै नै परणाई
मोकळ हो भाणेज राव रो
उण री प्रभुता घणी बधाई

सन् चवदैसौ अड़तीसै मे
मार दियो पडयतर छाय
मेवाड़ै मे हत्या करदी
रिणमल धरती गयो समाय

सीसोदाँ मडोवर दाब्यो
कबजै लियो कराय
जोधो काँधल जा बस्या
गाँव काँवनी जाय

जोधा काँधल साँवठ्या
गाँव काँवनी माँय
घण लूँठी सेना सजी
दळबळ लियो बधाय

सवत पनरै सौ दस बरसै
सीसोदाँ नै मार भजाय
मडोवर पाछो लेलीनो
जोधै काँधल दोनाँ छाय

सनीवार सुद जेठ इग्यारस
पनरसौ पनरै री साल
भलो जोधपुर थरप्यौ जोधै
चिडिया टूँक दुरण गढ घाल

घण मोटी महमाँ विगसाई
गढ लूँठो छायो मेहराण
करणी हाथाँ नीव दिवी ही
सरब गुणाँ री खाण सुजाँण

धिन किनियाँणी चारणी
धिन चारण धोराँ रजथाण
हाथाँ माँडी जवर झूँपडी
बिनाँ तगारी घण सनमाँण

देसाणो दस कूटवो
खुलिया है दस द्वार
राठोडाँ री कुळ देवी
करणी कीरत कार

जोधै रो घण वस बधायो
घणो फळाप्यो धुर रजथाँण
पूत हुया पडपोता प्रगट्या
लड़पोताँ घण पायो माँण

धिन राणी नौरगदे जायो
जोधैजी रै बीको राव
उणी कूख वड भागण जलम्यो
भुजवँध धजवँध बीदो राव

सवत् चवदैसौ पिचाणमै
सावण सुद पूनम परभात
धिन राणी नौरग साँखली
बीको जायो पूत सुजात

पूत दूसरो बीदो जायो
बीकै रो भुजवँध हो भाई
नैंवो राज थरपण नैं निसरथा
कुरु जाँगळ मे धूम मचाई

दोनूँ भाई घणा सूरमा
जोधैजी रै कुळ मे आया
जाय जाँगळू राज थरपियो
घण राठोडी रग सवाया

बोही राज जाँगळू बजियो
आगै जायर बीकानेर
माँ करणी सिर छत्र धरायो
बीकै माथै करदी मेर

कुरु जाँगळ री धरती माथै
बीकै रो घण वस बधायो
मरु भोमी री माया मोटी
जगळ मे मगळ सरसायो

नागफणी पर कलम भीव री
तीखी कलम सवाई जीत
भीव भणूँ सागर री पाळाँ
खुलाँ कठडाँ गाऊँ गीत

वेद पुराणाँ जाणियो
जग जाँगळ परदेस
धरती सोनो नीपजै
आखी अखी हमेस

महाभारत रै काळ मे
महतव हो घण खास
जबरा कोरू-पॉडवा
घोड़ा चरता घास

धोरा धुरपट ऊजळा
रूपळ निरमळ रेत
पूनम चॉद उजास मे
पळकै सोनल खेत

ऊपर आभो मुळकतो
नीचै बाळू रेत
सरद पुनम री चॉदणी
हरखै हरियळ खेत

धिन धरती मन मोवणी
ऊडो निरमळ नीर
स्याम धरम घण मानखो
ऊँडी सूँडी पीर

हेताळू घण आदमी
जितरो ऊँडो नीर
हेत निभावै ऊजळो
धरम पाळ नित धीर

मिनखा धरम सदा सूँ मोटो
धरम सनातन सीर
इमरत बिरखा हुवै मोकळी
नूँत जिमावै खीर

ओ जॉगळ परदेस जॉगळू
अठै धणी कुदरत री मेर
बारै मास बदळती चालै
छव रितुऑ घण घेर घुमेर

फागण चैत मधुर रस झरती
रुत बसत री चलै बहार
रूँख रूँख मे नूँई कूँपळॉ
मिमझर भरै फूल फुलवार

रग बिरगा फुलड़ा महकै
तितळ्यॉ फुदक भरै फुदकार
काळा किसन भॅवरियॉ भूँ-भूँ
भॅवरॉ री गूँजै भणकार

भॉत भॉत रा पॉख पॅखेरू
आळॉ डाळॉ करै किलोळ
कोयलडी री कुहुक सुरीली
कानॉ म दै इमरत घोळ

होळी री धमाळॉ गूँजै
चगॉ पर चिमटी झणकार
थाई थपकी थाप थपै जद
गूँजै गढ गूँजै गिगनार

ठडी मीठी रात चानणी
चदो चढै अकास
धोरॉ पर रूपाळी चॉदी
सोनै रै आभास

घुड़ला घूम गीत गरणावै
गवरा रा मेळॉ मनवार
फागणिया फरफर लहरावै
पवन वेग पल्ला पळकार

फुलड़ा बीण गवरजा पूजै
ईसरजी री पाघ सॅवार
रग बिरगी उडै गुलालॉ
रुत बसत री कर मनवार

मॅहदी मॉड मॉडणा मुळकै
मूमल ठुमकॅ चालै
घेर घुमाळा घुमा घाघरा
धमचक धूमर घालै

करै गवरजा री आरतड़ी
वर कन्या वपरावै
आसा पाळ आसका पूरे
पूजा रो फळ पावै

मास चढै वैसाख जेठ जद
गरमी री रुत आवै
आम आमली अमलाणी मे
घोळ खीचड़ो खावै

लूँआँ रा लपकारा लागै
गरमी गैरी चेतै
भूत भतूळा डूँड उठावै
भरै आँखड़्याँ रेतै

काळी पीळी आँध्यों उमटै
घिर घिर घणी घिरावै
धूड़ै रा धपरोळ धरावै
घर कोठा भरजावै

जीव जिनावर सगळा तड़फै
रूँखाँ मे लुकजावै
ठडी छँयाँ मानखो जोवै
रूँखाँ तळै भुळावै

ठडी मटकी छाण नाळ री
नापासर री लावै
कोई छाणै भोळासर री
पी पाणी मुळकावै

लागै माह आसाढ सावणो
नुँआ बादळा छावै
मेह बरसै जद घणो मोकळो
भर्‌यो भादवो जावै

ताळ तळायाँ डैर भरावै
तैजो घण गरणावै
करसा खेत खड़ै हरियाळै
हरखै कोड करावै

धान पान सरसायाँ मुळकै
खेत खळाँ पग धावै
समैसार नेपै मे हरखै
फूल्या नही समावै

आसोजाँ मे सरद साँपड़ै
सरद पुनम सरसावै
झीणो झीणो तपै तावड़ो
चढती धूप सुहावै

काती दीप जगा पूजावै
लिछमी री कर घण मनवार
मिगसर खेत खळाँ नै लाटै
अन धन सूँ भरसी भडार

फळी टीडसी लोइया काचर
मटकाचर बपरावै
भाँत भँतीला तीवण रोटा
ओट भोभरिया खावै

डेराँ बैठा सिग्ड़ा सेकै
मोरण मोर चबावै
झाड़ झाड़खा झोळी लावै
सुरख बोरिया खावै

काकड़ियाँ री फाँक फाँक मे
खाटा मीठा रस सरसावै
लालम लाल सिदूरा सुरँगा
मीठा गुटक मतीरा खावै

पोस माघ सी पड़ै मोकळो
ओढ भाखला कामळ सोवै
ठडा ठार करै सगळाँ नै
डाँफर घण काँपे थररावै

ताव तेजराँ टाबर टोळी
बूढळिया दुख पावै
दावा पड़ै दाझता जावै
पान फूल झुळसावै

पतझड़ री रुत इसीज आवै
सालो साल फुरावै
कुदरत आपो आप फळती
थिर वासती लावै

धरती री धुन इसीज चालै
सै रितुआँ सरसावै
आसमान रो वरण फोरती
चकरी चलती जावै

धीरै-धीरै मुलक मे
आय बस्या की लोग
भुजबँध धजबँध भोगणैं
भाग - सुभागाँ भोग

जाट जोइया साँखला
भट भाटी चौहाण
चोयल मोहिल खीचिया
बिरम पूत बिरमाण

क्यामखानी डीडुआ
रजवट चारण भाट
भुटा बलूचा बाघड़ा
गूजर छीपा राठ

जाट घणा जाडा बस्या
खाँपो खाँप खिचाँण
चौकी राज चलाँवता
लठुवाई रै ताँण

केइअेक गाव फसादाँ वाब्या
लाठी सोटाँ लोग दबाय
जनखाँ जनता नै डरपाया
दसलाँ लूँट लोकधन खाय

ढाणी ढाणी गाँवड़ा
छोटा घणा मुकाम
खेती पाती धन-पसू
पेट नराई काम

अठै न कोई राज हो
नाँ कोई हो ताज
धरा सुततर साँवठी
सारै सबरा काज

की दसला जनखा अठै
धन माया रै रोग
जँगळी भाव पळाँवता
लठुवा भूँडा लोग

होकलिया हुड़काँवता
बैठ तिबारी माँय
चिलमाँ भरता हाथ सूँ
सोता खीवड़ खाय

चौकी राज चलाँवता
हरता पर घर नार
आपस मे भिड़िया इसा
भिड़ भिड़ मुवा गँवार

राज धरपियो साँखलाँ
समैसार परवाँण
माड़ो मुड़दो ही चल्यो
घढ़ा सवया नाँ पाण

राज धपायो साँखलाँ
पाळी लूँठी आस
विगत साँखलाँ री मिलै
ख्यात बात इतिहास

धुर जगदेव पँवार रै
डाभ रिसी अवतार
उण रा पोता पोतड़ाँ
त्यागी जात पँवार

डाभ रिसी रै धोम रिसी हो
उण रो बेटो धरमदेव
सुत दूजो धरणी वराह हो
उणरो बेटो बाहड़ देव

बाहड़ सुत सोढो अर बाघो
बाघा पूत वैरसी जाण
वैरसीह हुय गयो साँखलो
आ बसियो बो रूँण सुजाण

राजपाळ उण वैरसीह रो
उणरो बेटो हो महिपाळ
महिपाळै रो रायसिंह हो
रूँण त्याग दीनो ततकाळ

रूँण त्याग वो गयो जाँगळू
सुगनाँ लीनो मुखडोमोड़
प्रथीराज री नार अजाँदे
दहियाणी बस थरपी ठोड़

गुपत गुढो घर माँड रायसी
बस्यो जाँगळू जाय सुजाण
कोट जाँगळू कनै बस्यो है
रूँण उजाड़ण री मन ठाण

बसै अठै दहियाँ रा डेरा
कुँवर कोई नाँ मानै काण
नार साँखलाँ री जळ भरताँ
कुँवर गिलोलाँ मारै ताण

धीरज धरम रायसी पाळै
औसर रो घण राखै ध्यान
आखर दहिया किया पाधरा
फिरा जाँगळू म निज आण

जीत रायसी वीर साँखळै
वधजै कियो जाँगळू कोट
दहिया सगळा कूट मारिया
धन दौलत घण बाँधी पोट

राणो हुयो रायसी लैंठो
पूत [illegible] हुयो सुजाण
[illegible] राणो हुयो [illegible]
उणरै पूत [illegible] [illegible]

कँवरसीह रै पूत राजसी
उणरै पूत करमसी जाण
करमसीह हर भगत होयग्यो
भाई मूंजो राण सुजाण

मूँजै रो सुत ऊदो राणो
ऊदै रो बेटो पुनपाळ
पुनपाळो घण हुयो सूरमो
बाँधी घणी राज री पाळ

पीछै हुयो जाँगळू राणो
पुनपाळै रो माणकराव
पीछै राणो नापो साँखलो
घिरग्यो दुसमणाँ दोखी दाव

दुसमण सगळा हुया अेकठा
नापो ढाव सक्यो नाँ राज
ताज तखत सब खुसग्या जाणै
लुटती जावै पग-पग लाज

नापो भाज जोधपुर पूग्यो
मदद करण री करी पुकार
सगती बिनाँ राज नाँ ढबसी
आखर मन म मानी हार

बहन साँखली नौरगदे ही
जोधै री राणी घर नार
ढाब सकै तो राज ढाबलै
सावळ करलै सोच विचार

जे चोकै न भेजै जाँगळू
तो कदै न हुयसी राज
रोग सयाणो आदर देसी
सिर पर धरसी सांगो ताज

नौरंगदे रा बीका-बीदा
दोनूं सूरवीर हा पूत
धीर वीर गभीर घणा हा
राज काज मे हा मजबूत

राज जॉगळू री सब बातॉ
जोधैजी रै पूगी कान
हाथॉ आयो राज ढाबसॉ
बीको-बीदो पासी मान

काको कॉधल साथ भेजसॉ
भळै घणॉं ही दुरसी साथ
मॉ करणी री मेर हुई तो
राज जॉगळू आसी हाथ

राठोडॉ री ख्यात गूॅंजसी
जोधॉ री हुयसी जैकार
आखी धरती धिन धिन कैसी
बीकै री करसी मनवार

गढ गणेस सिर नाऊँ

कणकण खणखण हरपळ अरपण
भाव बोध दुलराऊँ
धिन धरती रै धुर आधीटै
चरण चॉकतो जाऊँ

राती घाटी री टोकी पर
गढ गणेस सिर नाऊँ
ख्यात बात इतिहास मॅंडाया
गीत जीत रा गाऊँ

इण धरती रा गीत अमर सुण
बीक बीद कॉधल मुळकावै
आजादी रो गीर गीरवो
रातो लालम लाल लखावै

आसै पासै बोझ बॉठका
फोग भदूरा भावै
धुर लाहोरी कोट कॅंगूरॉ
गूॅंज वीर गरणावै

समैसार री वात अनोखी
कुण भूलै विसरावै
साचै मन सूॅं कान लगायॉं
ओजू गूॅंज सुणावै

झोला खॉंती पड़ी किलगी
भाज कामरा जैतो आवै
बीस हथी तलवारॉं पळकै
मॉ करणी छिव छावै
भीव रो तुनतुनियो वाजै

दूजो सरग

दूजो सरग

श्री कॉंधल बीकै रो काको
श्री जोधै रो भुजबॅध वीर
लूँठो वीर लड़ाको जोधो
खीच मारतो तीखो तीर

राज जॉंगळू री सुण बातों
सगा सॉंखलॉं री सुण पीड़
नुँओ राज पाछो थरपासॉं
वेग मिटासॉं दुख री भीड़

सुण हामळ कॉंधल बीकै री
नौरॅंगदे मुळकी मन मॉय
धीर बँधा नापै नै बोली
राज आपणो जासी नॉंय

जोधैजी दरबार तेड़ियो
हळकारा भेज्या ततकाळ
भाई बँध सरदार सॉंवठा
सब आया मरजादा पाळ

कॉंधल सिर मसळै चिंता मे
बीकै बिन फीको दरबार
बीको बीदो अजूँ न आया
समैसार चालै ससार

बीको बीदो मोड़ा आया
कॉंधल मुळक्यो कर खखार
भर्‍यो-तर्‍यो दरबार उडीकै
आ बैठ्या कॉंधल रै लार

कानाँ बाती लख कॉंधल सूँ
जोधैजी री निजर तणाई
भर दरबार मारियो तानो
खामोसी सिरदारॉं छाई

काका भतीजा करै जोजणॉं
नुँओ राज थरपण री काई
आपॉं क्यूँ कोइ करॉं वरजणॉं
सिरै चढायॉं जाणॉं भाई

जोधै राव मुळक मन मॉंही
बात करी उथळी विसतारी
सिरदारॉं रो ध्यान खिंचायो
इचरज भर देखै दरबारी

लोकसभा मे तानो मार्‌यो
जोधा राव भर्‌यै दरबार
कॉंधल बीको काको भतीजो
कानाँ बाती करै विचार

लूँठो कोई राज थरपसी
नूँओ कोई भुजा पसार
ऊँडो सोच डूँगरॉं चढसी
देखॉं कदैक मन मे धार

देखो लोगॉं काको-भतीजो
मुळकै पुळकै मूँछ पलार
जाणै धजाबँध धारी बण
चढजासी घोडा सिणगार

घडी अेक पग थमैन धरती
जाणै जबरो कियो करार
दुरण जोग घडियॉं दुरजासी
नेजा धार ढाल तलवार

देखो लोगॉं भुजा फरूकै
लालम लाल नैण रतनार
झॉंक झरोखॉं देखो भाळो
दळबळ सेना कितीक त्यार

कॉधल उठ ललकार बोलियो
उठ बीका झट हुयजा त्यार
जकी रावजी मन मे चीती
वाही राम पाडसी पार

आपॉ राज लुंओ ही थापॉ
जगदम्बा री काढॉ कार
घडी अेक नॉ थमॉ अठै अब
नेजो सॉभ ढाल तलवार

दळ-बादळ घोड़ा सिणगारॉ
राठोडा चढसॉ असवार
सजन सनेही साथे सजसी
चढो चढो घुड़ला सिणगार

उठो उठो रणबकॉ जाधॉ
हाथो हाथ खॉच तलवार
दुरणै री सुभ घड़ी आयगी
चढो चढो घोड़ा सिणगार

रणबकॉ राठोडॉ चालो
लुंआ राज धरपण मन धार
उठो उठो सब पाणीदारॉ
राम करैलो बेड़ा पार

कॉधल बीको बीदो उठिया
उठ्या टाळवॉ पाणीदार
भाई बधू उठ्या मोकळा
सगा सनेही अर सिरदार

उठ्या केई सेना रा नायक
सँभ्या घणॉ घोड़ा असवार
तीरदाज धनुरधर उठिया
नेजा धार ढाल तलवार

उठ बोल्यो नापोजी मामो
राव सॉखलो सबद उचार
हुयो जॉगळू अब बीराणो
म्हॉरो तो उठग्यो दरबार

सगती बिनॉ राज नॉ सभळ्यो
बिखर गयो म्हॉरो दरबार
म्हॉसूं देस जॉगळू छूट्यो
काट चढ्यो म्हॉरी तरवार

उठ बीका बीदा चालो तो
बॉध लेवॉ खिडियो दरबार
कॉधलजी साथै चालै तो
हूँ लेऊँ घोड़ो सिणगार

थॉरो राज बँध्यॉ मुळकासूँ
हूँ चाकर बण चौकीदार
धीर धरम विसवास बँधाऊँ
वचन निभासूँ पाणीदार

बो सुभ मगळ दिन घिर आसी
तखत चढै बीको भाणेज
राज जॉगळू बँधियॉ राजी
बधसी म्हॉरो गरब गुमेज

मॉ करणी सिर छत्र धरासी
किरप चारणी करसी आप
राज तेज पापॉ मे खोयो
मिटसी म्हॉरो करियो पाप

कॉधल अर बीकै सूँ बोल्या
जोधाजी सुभ सबद उचार
नापैजी रै साथै जाओ
करो जागळू रो उद्धार

मॉ करणी री किरप घणी है
आखै लोक करै कल्याण
लोक मँगळ री लगन लगाओ
सुख सॉयत री लेवो आण

सत री जोत जगा हिवड़ै मे
जा बॉधो बीकै रो राज
काको भतीजो रळमिल चालो
करणी मॉ सारैली काज

सब सिरदारों सामै बोल्या
जोधोजी निज मन मुळकार
नुँओ राज थापण जो चावै
वेग हुवो घोड़ों असवार

बीको-बीदो काँधल सँभिया
कमर कसी घोड़ाँ असवार
सागै फौज सजी उभी है
सिध कर चालो मन मुळकार

म्हाँरो सुभ आसीस आपनै
आप सिधावो भलो विचार
विजै तिलक लिलवट पर काढो
नेजा साझ ढाल तलवार

माँ करणी मगळ घण करसी
भरसी थाँरा भोग भखार
दूध दही घी नदी ववासी
गऊ माता री सेवादार

बीको बीदो काँधल मुळकै
मुजरो कर दुरणै नै त्यार
चढो चढो आगै बध मुळको
वेग चढो टळवाँ सिरदार

काँधल रूपो मॉडण मँडळो
नाथूजी काका है साथ
भाई बीदो अर जोगायत
मामोजी नापोजी साथ

कामदार लालो लाखणसी
चौथमल कोठारी साथ
बछावत वरसिंह साथै है
सगळा वीर विकरमी साथ

भळै घणाँ ही वीर चढ्या है
बेलोजी साहणी पड़िहार
विक्रमसी प्रोहित साथै है
सालोजी राठी सऊकार

सुभ आसोज सुदी दसमी दिन
पनरैसौ सताइसै साल
सिधकर विदा हुया बीकोजी
तज मेहराण गढ़ाँ री पाळ

चिड़िया टूँक दुरग तज चाल्या
सज दळ बळ राठोड़ सुजाँण
काँधल बीको कको भतीजो
नुँओ राज थरपण मन ठाँण

श्री बीकै रो रेवत घोड़ो
घणै गुमर सूँ घालै चाल
मुख मडळ पळकै राठोड़ो
हाथ पळकतो धजवँध भाल

गाजाँ बाजाँ ढोल ढमाकाँ
घुरै नगारों रा धमसाँण
छँटवाँ सूरवीर घण राँधड़
साँगळिया मूँछाँ दे ताँण

धर कूँचा धर मँजळाँ चाली
राठोड़ाँ री फौज बधाय
साँझ पड़ी मडोवर पूगी
नापै दीनो सख बजाय

गौरैजी रा दरसण करिया
सिझ्या रा मडोवर आय
दसूँ दिसा सुख साँयत दीसै
साँझड़ली मगळ बरसाय

चारूँमेर पँखेरू वोलै
चक चक चिड़ियाँ री चहकार
मोर कबूतर फुर फुर बैसे
आप आपरै डेराँ जार

गायाँ ढीकै बछड़ा कूदै
साँझ ढळी बाखळियाँ माँय
झिरमिर दूध दुहारचाँ दूवै
आसै पासै सूँ धुण आय

थान देवरॉ मिंदरॉ वाजै
गूँज नगारॉ री गरणाय
झालर सख टिकोरा वाजै
दसूँ दिसा झणकरॉ छाय

रातीबासै सेना ढाबी
गौरेजी रै थान मुकाम
धीर वीर सगळा विसरामै
आप आप रा साधै काम

ससतर पाती री पूजा कर
नेजा पूज ढाल तलवार
काका भतीजा सगळा मुळकै
कूदै नाचै भुजा पसार

राम रसोई बणी लापसी
ऊपर घी री पुरसै धार
जीमजूठ सगळा मुळकावै
आपस मे मुळकै मनवार

सोपै वेळा ढळी जाजमॉ
विसरामै सब थान मुकाम
आखै लोक नींद ली मीठी
गौरेजी रै लूँठै धाम

रातावासो लियो मुळकतॉ
दूजै दिन उठिया परभात
आखो लोक उठ्यो सॉभळियो
गौरेजी री पूरी जात

न्हाय धोय पूजा मे बैठ्या
बीकोजी मुळक्या परभात
भैरूँजी री मूरत लाधी
पूजा रै वेळै मे हाथ

देख सॉखलो नापो बोल्यो
गौरोजी चालैला साथ
सुभ मगळ आपॉरै छासी
लूँठो राज थमासी हाथ

परभातै परसाद चूरमो
भोग भरायो सगळै लोक
सेना सब हथियार सॅभाया
गौरैजी नै मन मे गोख

ले परसाद चूरमो चढिया
दुरो दुरो री गुँजी टेर
नेजॉ नेजॉं धजा फरूकै
बजै नगारा घेर घुमेर

घोडा हिण हिणॉर हुकारै
जैकारा गुँजै चहुँ ओर
हळवॉ हळवॉ सेना चाली
घण बोल्या मीठोड़ा मोर

सूरज लालम लाल पळक्यो
चढतो घण मुळकै गिगनार
पॉख पँखेरू उडै गिगन मे
मीठी चिडियॉ री चहकार

चारूँमेर रूँखड़ा फुरकै
पवन वेग लहरॉ लहराय
पान फूल डाळ्यॉ हरखावै
हरखै हरियाळो वनराय

खीप फोग मुळकै खेजड़ियॉ
झड बैर्यॉ लुळकै मनवार
लालम लाल बोरिया लुळकै
झीणी पूँन चलै झणकार

फुदक फुदक तितळयॉ घण नाचै
भॅवरॉ री भीणी भणकार
डाळी डाळी हिलकै हरखै
गूँ-गूँ री गूँजै गुजार

खेत खेत सीवॉ पर निरखै
करसॉ रा कुळकै परिवार
बीकैजी री जय जय बोलै
राठोड़ॉ री जैजैकार

मीठा बोलै मोर टहूकै
ढाणी बसती रूँखाँ डाळ
कठैक ढाणी गॉव गॉवडा
ऊजळिया धोरॉ री पाळ

गॉव गोरवॉ महक मची है
गायॉ री गूँजै ढिकार
टोघड़िया बाछडिया नाचै
टोकरियॉ मीठी टणकार

पग-पग मारग मिलै लोगडा
दळ बळ आगै बधतो जाय
बीकैजी री जय जय बोलै
कण कण मुळकै मुळक सवाय

सुहणा साचा सुगन सॉतरा
आसॉ पासॉ मन मनवार
उछळै कुदै मार फदाका
घण नाचै हिरणॉ रा डार

भैरूँजी री मूरत सागै
सौ घोड़ा लूँठा असवार
पैदल सेना चलै पॉचसौ
बधती जावै मन मुळकार

बीका फौज सतोमत चाली
देसणोक मे पूगी आय
श्री करणी रा दरसण करिया
आखी फौज आसीसॉ छाय

श्री करणी श्रीमुख फरमायो
सुण बीका तूँ ध्यान लगाय
अठै थारो परताप वधासी
जोधैजी सूँ सुजस सवाय

अठै ब्रासिया घणॉ मोकळा
लुळ धारा पायनॉमी हुयसी
दसूँ दिसावॉ सुजस पसरसी
थारो राज सवायो बधसी

श्री करणी मॉ थॉरी जय हो
बीको बोल्यो सबद उचार
आखी सेना जय जय बोली
माता आगै भुजा पसार

श्री करणीजी श्रीमुख बोल्या
सुण बीका तूँ ध्यान लगार
श्री भैरूँ सागै आयो है
मडोवर सूँ किरप करार

इणरी सेवा आछी करजे
चित मन पूजा लगन लगार
तूँ अबार चॉडासर जा बस
हुयसी थारी जैजैकार

थारी सेना राज थपासी
गुँजै राज री जैजैकार
घण तपसी राठोड़ मुलक मे
राठोडाँ री जैजैकार

श्री करणी मॉ री आज्ञा सूँ
बस्यो गॉव चाण्डासर जाय
तीन बरस चाण्डासर बसियो
छव बरसाँ देसाणै आय

तीन वरस कोडमदेसर रह
मॉ करणी रो हुकम बजायो
भाव भगत गौरोजी पूज्या
श्री भैरूँ रो थान थपायो

पछै वरस दस रया जॉगळू
फिर फिर सगळा गॉव बसाया
सालोसाल जमानो आछो
धान-पान भडार भराया

घोड़ा बध्या चार सौ हुयग्या
नौकर चाकर संग बधायो
हुयो जाँगळू आखो कबजै
श्री बीकै रो राज थपायो

समै सार चूकै नहि बीको
देसणोक पखवाड़ै जावै
माँ करणी सूँ मिलै बरोबर
दरसण कर नित हुक्म हलावै

श्री बीकै री भाव भगत सूँ
माँ करणी राजी घण छावै
हुक्म पाळ धरमी जस जीतै
राठोड़ाँ रो राज बँधावै

अेक दिवस करणी माँ बोली
जोवाँ आसा पासाँ म्हे
आछो देख ठिकाणो बीका
अबै तन्हे परणासाँ म्हे

आछा करम करै तूँ बीका
मिनख धरम नै पाळै है
आछो राज करै धरती पर
पाप-जुलम नित गाळै है

पूगळ राज राव सेखै नै
रात ध्यान सुमरायो हो
मै करणी सोयाप गाँव मे
भाई कह बतळायो हो

वर दीनो कर सफळ कामना
बो म्हारा गुण गावै है
हर चवदस देसाणै आवै
दरसण लाभ कमावै है

श्री करणी दूजी चवदस नै
सेखै नै फरमायो है
सगपण अेक साँतरो लाई
जोग सुजोगाँ आयो है

बीकै रो परताप घणेरो
वध्यो-वधै मै जाणी है
सेखा थारी रगकँवर नै
बीकै नै परणाणी है

सेखो बोल्यो करणी ब[illegible]
ओ सगपण अनुकूल न[illegible]
और हुक्म सब माथै मा[illegible]
पण ओ हुक्म कबूल नई

सेखा थारी अक्ल चराई
सगपण चूक कुनामी हुयसी
थारै जिसड़ा लोग हजारूँ
बीकै रा पायनाँमी हुयसी

नाट गयो पूगळगढ सेखो
करणी सूँ ले सीख सिधायो
हुक्म टळायाँ फँस्यो जाळ मे
पड़्यो जेळ मे घण पछतायो

सेखो राव धाड़वी बणग्यो
लूँट धाड धरती धन खावै
मालोमाल हुयो नाँ ओर्जूं
नित धावै नित धाड धड़ावै

धाडो मारण गयो अेक दिन
फँस्यो नगर मुलतान घिरायो
थाणैदार पकड़ सेखै नै
सेवादाराँ सूँप झलायो

सेवादार बाँध सेखै नै
सागै जा मुलतान पुगायो
कायम जुलम कियो धाड़ेती
सेखेजी नै जेळ जड़ायो

जेळ सड़तो सेखो सुमरै
हुक्म अदूली हूँ कर आयो
पूगळ गढ मे खबर हुई जद
आखो लोक अणेसाँ छायो

साथ हरै नै ले देसाणै
सेखै री ठुकराणी आई
अरज करी करणी रै आगै
विपदा मेट करो सँकळाई

ऊँचों कोट कॅंगूरा मुळकै
तोरण बॅंध्यो विसाल
राव सेखै री गढ़पोळों मे
जासी घूमर घाल
बनै री घोड़ी केसर नाचै झूम

गढपतिया सिरदार जनेती
जॉनण करणी आप
राठोड़ॉ री जैजैकारॉं
जस जीतण री छाप
बनै री घोड़ी केसर नाचै झूम

मोरत साध वानसी तोरण
गढपतियॉ री साख
हरख बधावॉ लाडॉ कोडॉ
घणा पिदासी खाख
बनै री घोड़ी केसर नाचै झूम

जोधैजी रो कुँवर लाडलो
तोरण बनसी जाय
आखो लोक आसीसॉ देसी
मगळ वेळा मॉय
बनै री घोडी केसर नाचै झूम

कॉधल रो भतीजो बीको
गढपतियॉ सिर मोड़
भाई बीदो चॅवर ढुळावै
चालै कॉधो जोड़
बनै री घोडी केसर नाचै झूम

पूगळगढ सेखै री बेटी
रगकॅंवर सॅग ब्यॉव रचासी
राठोड़ॉ री फिरी दुहाई
मॉ करणी री कीरत छासी

हळवॉ हळवॉ जान चढती
जा पूगी पूगळ गढ मॉय
भरपूरी मिजमानी सागै
बीको तोरण वानण जाय

ऊँची प्रोळ वानियो तोरण
गढ म बॅंटै बधाई है
लोग करै इचरज घण लूँठो
करणी जानण आई है

बीन बीनणी चॅवरी चढिया
फेरॉं री सुभ वेळा आई
करणीजी मुळतान जेळ सूँ
सेखै नै साथै ही लाई

श्री बीकै सॅग ब्यॉव रचायो
रगकॅंवर बेटी परणाई
घण मिजमानी दियो दायजो
छप्पन भोगॉ जान जिमाई

ब्यॉव हुयॉ सगळा जन हरख्या
पूगळ गढ मे बॅंटै बधाई
कर मिजमानी सूँप दायजो
पछै जान नै सीख विराई

सीख लुगायॉ ओळूँ गाई
मगळ गीत कोयलड़ी गायो
अेकर धुड़ला पाछा घेरो
गढ पूगळ गूॅंज्यो गरणायो

रगकॅंवर बैली मे बैठी
रुणझुण बैल जुताया है
ओळूँ रा सुर धीमा पड़ग्या
नैणॉ नीर ढळाया है

रगकॅंवर अब हुई पराई
सेखै री ऑख्यॉ भर आई
झरतॉ नैंण गळगळॉ दीनी
बेटी नै आसीस सवाई

दुरगी जान ढळी पूगळ सूँ
घरॉ जॉगळू नै जावै
देखै सो ही लोग-लुगाई
वर वधु नै आसीस बधावै

मनड़ै मे थुथकारा नॉखै
मगळ गीत बधावा गावै
ढाणी-ढाणी गॉव नगरियॉ
परणी जान निरख सुख छावै

कपिल सरोवर रै घाटॉ पर
धिरती जान लियो विसराम
आसॉ - पासॉ ईरॉ - तीरॉं
घोड़ा ऊँट ढाबिया धाम

नीरो चारो घणो नीरियो
हरियळियॉं रूँखॉ री छॉव
जान ढबी रूँखॉ रै नीचै
जाणै कोई बसग्यो गॉव

कपिल सरोवर भरयो लबालब
तिरियॉ मिरियॉ खाय हबोळ
न्हावै धोवै सकळ जनेती
काया ली इमरत मे घोळ

कपिल मुनी रा दरसण करिया
सॉंझ पड़ी आरतड़ी गाय
जीमा जूठो कियो जनेत्यॉं
सुखी घणा परसादो पाय

अगली मजळ चढ्या जनेती
हळवॉं हळवॉ बधता जाय
सोनळ भोर जॉंगळू पूग्या
बीन बीनणी लिया बधाय

घोड़ा हिण हिणॉर हुकारै
बीकैजी री फिरी दुहाई
राठोड़ॉं री जैजैकारॉं
मॉं करणी री घण सकळाई

घर घर मगळाचार गुँजावै
सरब जॉंगळू बैठै बधाई
पूगळ गढ़ सेखै री बेटी
रगवॅंवर पुत्रवधू सवाई

मन थुथकार आसीसॉ छावै
दरसण कर कर लोग लुगाई
धन्य भाग करणी री किरपा
राठोड़ॉ री फिरी दुहाई

रगकॅंवर बीकै री सोभा
राठोड़ॉ री है प्रभुताई
मॉ करणी सिर छत्र धरायो
किरप करै सपै सॅकळाई

चढती रात ढोल गरणावै
आज जॉगळू री छिब न्यारी
रात चानणी इमरत बरसै
सुख री घड़ी घणी बिसतारी

रगकॅंवर सुख सैजॉ पोढी
बीक कुँवर री मैड़ी मॉंय
बरसॉ बरस जियै रॅंग माणै
सातूँ सुख रसभरियॉ छाय

बीकै नै परणायॉ पीछै
करणी मॉ देसाणै जाय
राजलोक सब भेळो हुयग्यो
बीन-बीनणी धोक लगाय

गाजॉं बाजॉं करणी मॉं नै
देसणोक नै विदा कराई
काका कॉंधल बीदो भाई
सब राठोड़ॉं धोक लगाई

नौकर चाकर गया पुगॉंवण
देसणोक जा ठेठ पुगाई
करणी रो परताप घणेरो
लुळ लुळ बिनवै लोग लुगाई

पग-पग ऊभा दरसण पावै
आसीसॉं दै करणी माई
गढ़ मे जाय ढूँपड़ी बैठी
घरॉं गया सब लोग लुगाई

श्री करणी पूजा मे लागी
ध्यान मगन मनड़ै मुळकावै
नौकर चाकर भगत मोकळा
मढ मे हरदम आवै जावै

आप आप रा करम ऊजळा
देसाणै मे करता जावै
गउऑं चरै ओरणॉं मॉंही
धरम करम सनमान बधावै

समैसार बीको सिध जावै
देसणोक करणी दरबार
राज तेज महिमॉं घण सपै
ज्यूँ-ज्यूँ बधै राज रो भार

तन मन समैसार सैठीजै
मॉं करणी सूँ भेट कराय
मारग दरसण लेवै मोकळो
देसणोक जा दरसण पाय

राजकाज री नीती समझै
सासण रा गुरुमन्त्र जपावै
भेद मुलक रो राख ऑंगळ्यॉं
जुलम मेटणा जतन उपावै

नौकर चाकर घरवादारा
सूबॉं सेवादार बधाया
गुणी गुपतचर बधा अहेरी
पागी थाणैदार लगाया

कुण अपराध लोक धन लूँटै
कुण लहुवा अपराध कराय
कुण पाजी जनलोक पिड़ावै
के अभाव है पतो लगाय

अरथ तन्त्र पर काबू कर कर
राजकोष सैठो सपावै
तन मन धन रखवाळै सेना
समैसार नित सग बधावै

दिन दिन दूँणो रात चौगुणो
घण ऑंकस चहुँओर धपावै
अपराध्यॉं रा मिटै हूँसळा
छोड़ कुमारग मारग आवै

जगळ राज अबै नॉं चालै
राज जागळू रो समझावै
श्री बीकै री फिरी दुहाई
मॉं करणी सिर छत्र धरावै

चौकी राज अबै नॉं चलसी
चौबाटॉं पर न्याय चुकावै
गॉंव पच परमेसर व्याप्यो
सकट मिटता लोग लखावै

घण आतकी अबै न कोई
दसला जनखा कूट नसावै
श्री बीकै री जैजै बोलै
राठोड़ॉं रो राज बधावै

मरजादा री पाळॉं धरपी
जोगा जोगी करम करावो
न्याय धरम सूँ भरी कचेड़ी
लोगॉं थे सुख सॉंयत पावो

जाट हुया पानामी सारा
बीकै रै सरणै आया
राठोड़ॉं री फिरी दुहाई
करणी री छतरी छाया

भट भाटी चौहान सॉंखला
जाट जोइया काबू करिया
चोयल मोहिल खीची खाती
घण अपराध करता डरिया

क्यामखानी डीडू रजवट
चारण भाट बाध डरपाया
भुटा बलूचा गूजर छीपा
ऑंकस री परधा मे छाया

घण अपराधी हुया पाधरा
छोड़ कुमारग मारग आया
श्री बीकै री फिरी दुहाई
राठोड़ॉ रा रग सवाया

दूध दही घी ढाणी ढाणी
गॉव नगर कसबॉ उरळोई
खीचड़ खाय राबड़ी रोटी
राम खीचडी राम रसोई

समैसार रितुऑं फळ फळती
तीज तिवारॉं धूम मचावे
भागोभाग जमाना नेपै
खेती पाती खड़ मुळकावे

दिन दिन बधै मुलक चौफेरॉं
पग-पग करसा मगळ गावे
गाजॉ-बाजॉ मेळॉ-मगरियॉ
नर नारी टाबर सुख छावे

दस कूँटो देसाणो मुळकै
राज जॉगळू री पुण्याई
सुभ सुराज राठोड़ी सपै
मॉं करणी नित करै बड़ाई

आप सदेही करणी मुळकै
सगळॉ नै आसीस सवाई
बीका राज जॉंगळू विकसै
राठोड़ॉं री फिरी दुहाई

न्याय मिलै चवड़ै चौगानॉ
जात पॉंत रो भेद न कोई
लदुवा तत्र अबै नॉ चालै
सुभ राटोड़ी नीति सॅजोई

धीरज धरम धार समरसता
श्री बीकोजी राज चलावै
करै लोक कल्याण पगोपग
घण राठोड़ी मान बधावै

मॉं करणी सिर छत्र धरावै
राज करै देसाणी माई
जनता राज सतोमत सपै
लेखो राखे पाई-पाई

सवत पनरै सौ पैतीसै
कोडमदेसर गया सिधाय
गौरेजी रा दरसण करिया
बीकैजी लुळ धोक लगाय

सगी साथी साथ घणैरो
काको कॉधल बीदो भाई
गढ घालण रो मतो उपायो
आछी ठोड़ अेक थरपाई

घण मजूर कारीगर लगिया
ऊँडी खोदी नीव भराई
सेखैजी नै खबर हुई जद
हाथोहाथ वरजणॉ आई

सेखै राव सनेसो भेज्यो
आप अठै गढ़ मत थरपावो
जाय जॉगळू री परधा मे
मन चावा गढ कोट चिणावो

मानी नही वरजणॉ बीकै
कॉधल बीदो मतो न ढाय
सुण सेखो घण हुयो बिराजी
पण बॉंनै की कहियो नॉय

भाटी भेळा हुया मोकळा
सेखै नै दी खुली सुणाय
छाती माथै पण गढ़ घतियॉ
जमी आपणी रैसी नॉय

सेखो बोल्यो भायॉं बेल्यॉं
हूँ तो चवड़ै आऊँ नॉय
गढ घतणै री नीती पळटै
इसड़ो कोई करो उपाय

कलकरणै केहरोत कनै जा
भाट्याँ सगळाँ करी पुकार
कोडमदेसर मे गढ़ घातण
बीको आयो है मन धार

कलकरणो सज सेना आयो
जोड़ आदमी दोय हजार
राठोड़ाँ सूँ लियो मोरचो
जुध करणे री धार विचार

सेखै नै सदेस करायो
थे भेळै आ रळो अवार
काची वेदन काट देवाँ तो
सुख सॉयत री बँधसी कार

सेखै भेज्यो दियो पडूतर
म्हारो माथो फाटै आज
जद म्हाँरै आराम आयसी
हूँ आसूँ थाँरै ही काज

कलकरणै सदेस पुगायो
थे मत आज्यो आज अबार
माथो तो घण दिनाँ दूखसी
अै राठोडा आया द्वार

बीकै काँधल बीदै नापै
बेलै करियो साथ विचार
आपाँ नै के करणो चहियै
निरणै करलो आज अबार

नापो बोल्यो सुगन साँतरा
आ है ठोड़ घणी सुभ जाण
राज आपणो थिर थित रैसी
घणी पीढियाँ बधै सुजाण

काँधल कहियो भली बात है
धर आछी म्हाँरै मन भाय
इयै ठोड़ ही सुभ गढ माँडाँ
राठोड़ी जस बधै सवाय

कलकरणै रो आयो सँदेसो
अठै आप गढ़डो मत घालो
गढ़ घाल्याँ सूँ राड़ हुवैली
परै जाँगळू री हद चालो

पण बीकै अर सगळाँ साथ्याँ
कलकरण री बात न मानी
राठोड़ाँ री रीत न जाणै
कलकरणो है घण अज्ञानी

कलकरणो सेना सज आयो
राठोडाँ पर करी चढाई
बीकै कियो सामनो सज धज
घण ललकाराँ फौज बधाई

नेजा ढाल लियाँ तलवाराँ
राठोड़ाँ रणरग चढायो
भाटी मारया झपट तीन सौ
रणचडी रो खपर भरायो

कलकरणो केहरोत बडेरो
ऊमर ही घण अस्सी साल
काया मे बळवाण घणो पण
भाज मुवो हुय लालम लाल

भाटी भाज छूटिया रण सूँ
मद छकिया हुयग्या रणछोड़
बिजै हुई बीकै री रण मे
घण धमक्या घोड़ाँ रा पोड़

पण भाटी दगो नित राखै
घण अणमणिया दुखी विचार
राठोड़ी गढ़ भलो न लागै
आँख्याँ राती खारमखार

बीको बोल्यो धीरज धाराँ
ऊँतावळ मे उळझाँ नॉय
पैलै कवै गिटाँ क्यूँ माखी
गढ घालाँ क्यूँ राड़ बधाय

नापै अर नेरै नै भेज्या
दूजी जोवो ठोड़ सवाय
बठै चाल लूंठो गढ घालॉ
सुख सॉयत लॉ राज थपाय

वै आया राती घाटी मे
टोकी माथै चढिया आय
नागोरॉ मुळतानॉ सामा
दीसै दो मारगिया जाय

बचिया दोय लियॉ ऊभी है
गाडर कैर झॉस रै मॉय
ल्याळी चार लागिया लारै
पण गाडर सध सीग भुंवाय

नापै दाकळ मार ल्याळियॉ
करी ताडना दूर भगाया
इण सुभ जागॉ गढ घालॉला
थिर थित रैसॉ नेरा भाया

तेड़ो भेज दियो नापैजी
कॉधल बीको बीदो आया
आ धरती तो घणी सॉतरी
गढ घालण रा सुगन सवाया

राठोड़ॉ थुथकारो घाल्यो
भलो घलावो गढ इण ठोड़
राठोड़ॉ रो माण बधैलो
बाजणवो घोड़ॉं रा पोड़

नापो नेरो सुगन जॉचणै
भळै गया हा केई ठोड़
अेक ठोड़ इसड़ी भी देखी
अजब अजूबी सूनै खोड़

सूतॉ अेक रूँख रै हेठै
भुरट सिराणै देख्यो आप
मुख मे घाल्यॉं पूंछ आपरी
मार कुडाळो बैठ्यो सॉप

नापो नरो उठ्या पग लीना
चल्या सॉप री लीकालोळ
लीक पूगगी जठै धरपदी
राती घाटी मे गढपोळ

नापो बोल्यो जिण ठोड़ॉ पर
बैठ्यो सॉप कुडाळो मार
समैसार लूंठो गढ घलसी
राठोड़ॉ री जैजैकार

सवत पनरैसो बैयाळै
बीकै कुँवर सुजस घण छाय
राती घाटी री टोकी पर
गढ गणेस सुभ लियो घलाय

सवत पनरैसौ पैताळै
बीकै घण तप तेज बधाय
बीकानेर नगर सुभ धरप्यो
घर घर मगळ गीत गवाय

श्री बीकैजी राज थरपियो
करामात करणी री देख
ख्यात बात इतिहास बखाणै
किणी कवी रो कथियो लेख

(सवत) पनरैसौ पैताळवै
सुद बैसाख सुमेर
थावर बीज थरप्पियो
बीकै बीकानेर

जलम भोम है भीव री
कलम कथै सतसेर
ख्यात बात इतिहास मे
धिन धिन बीकानेर

राजस्थानी रग मे
चालै कलम कमाल
टीपाटीप कसूँबलो
रॅग रूड़ो रॅंग लाल

बीकाणै रै थभ सूँ
प्रगटे सूर विसाळ
मात भोम रा चानणा
अमर भीव भुरजाळ

बीकै रो परताप घणो हो
ठोडॉ-ठोड़ॉ गॉव बसाया
कुआ बावड़ी ताल तळायाँ
पग-पग हरियल रूँख लगाया

धन धरती धाडेत लूँटता
देस जॉगळू धुर देसाण
राठोड़ॉ नै ठोड़ भुळाई
करणी सरणॉ आप सुजाण

गाय धारणी धुमा कामड़ी
पवन वेग मारी फटकार
जुलम्यॉ रा टोटा ही उडग्या
मिनखापण री खिचगी कार

कॉधल रा कॉधा मचकीज्या
बीकै री चाली तलवार
नेजॉ पर धज लाल फरूक्या
राठोड़ो गाज्यो परिवार

बीदै री घोड़ी जद कूदै
जद बाजै रण मे तलवार
दुसमणिया ऊँडा जा दुबकै
झाल सकै नाँ उणरो वार

भाई बघू सैण साईंणा
चक डाँडी माँडी चौफेर
धारण धरण कतड़ाँ गूँज्या
बीकै थरप्यो बीकानेर

विकरम पनरैसौ पैताळै
सुद बैसाखी आखा बीज
गढ गणेस री करी थरपणा
ऊगतड़ी सुभ आखातीज

अणपूछ्यो मोरत थरपायो
भोग लग्यो अमलाणी खीच
दसूँ दिसावॉ गीत गुँजाया
जुलम्यॉ रा पसवाड़ा पीच

मिनखापण रो पाणी ऊँडो
काढ लियो कमधजियॉ सार
जन जन रो हिवड़ो धीजायो
न्याय धरम डडो फटकार

सुख रा सूरज चॉद उगाया
जैजैकार करी गिगनार
करणळ री किरपा घण गूँजी
धरती पर घण धीरज धार

जोधैजी नै खबर हुई जद
मरजादा री बॅधगी कार
पूत हुवै तो बीकै जैड़ो
हुवै वीरता रो अवतार

धिन मायड़ धणियाप जचावै
मोरँगदे गोदी सिणगार
गढ मेहाण नगारा गड़क्या
डकॉ री बकी गुँजार

नुँवो राज राठोड़ो थरप्यो
भुजबळियाँ री साख पसार
मिनखापण रो माण वधायो
पग पग हुई जुलम री हार

गाँव गुँवाड़ाँ ढाणी-ढाणी
पणघट-पणघट पाणी-पाणी
पग-पग पर इमरत रळकायो
मिनखपणो ही राजा-राणी

इण धरती पर राज न कोई
ढाणी ढाणी बसता लोग
कोरू पाँडू अठै विचरता
सेवण घास ऊगता फोग

घोड़ा चरता घास मोकळो
ताल तळावॉ पीता नीर
गाय भैस ओठारू पळता
मिलतो घणो दूध अर खीर

दसला केई चोरटा बसता
करता अठै सूगला काज
हरण करता नार पराई
चलता अठै तिबारी राज

पहलो राज सॉखलॉ थरप्यो
पण बॉसूँ नॉ ढबियो राज
जाट जोइया भाटी भिड़ता
बध बध करता घणा अकाज

खबरदार बीको जद गूँज्यो
बद हुई दसलाँ री धूँस
ऑगण बाखळ लूँट मची तो
सिर पर पड़सी अणगिण खूँस

लूँट पाट चोरी नॉ चलसी
मत करजो अपराध अजाण
चौबाटाँ पर चूक डॅडीजे
राठोड़ाँ री फिरगी आण

करणी रा किरपाळ कसीज्या
जन जीवण रा पोरैदार
कण-कण मे सुख सॉयत व्यापी
दसलॉ रा उठग्या दरबार

लिखमी नाथ टेकरी छायो
नागणेचजी री बळिहार
सुख सॉयत मे बसी नगरिया
बीकाणै री जैजैकार

जात जात रा आवै जातरी
गॉव नगर कसबॉ बसवावै
सुख सॉयत लख सरण सुरक्षा
नर नारी फूल्या न समावै

साह जैन ओसवाळ महेसरी
आय बस्या घण अगरवाळ
बिणजारॉ घण बिणज टोरियो
साच धरम मरजादा पाळ

गढ मे बीको सैर मे कीको
राज तेज सुख सॉयत लावै
दसलो जनखो अेक न पनपै
न्याय धरम सूँ राज चलावै

हाकम अफसर नौकर चाकर
जुलम कोई करणै नॉ पावै
जॉच परख पड़तालॉ परखै
अेक जुलम जीवण रुळजावै

सिद्ध दोस हुँवताँ ही पळ मे
आछी भली नौकरी जावै
जेळ जड़े सौ गुणो दड दे
इज्जत आब सभी उतरावै

समैसार बिरखा सुभ बरसै
खेत जमी घण धान निपावै
घास पात नीरै चारै सूँ
पसुवॉ पाण घणी पळकावै

राठोडॉ रो डको बाजै
दिन दिन राज सवायो छावै
जाट जोइया घणाँ निवाया
बीकै री जैकार गुँजावै

पण की लतुवा जाट चौधरी
चौधर मे भूल्या भरमावै
मिनख पणै री काण न मानै
पर बेटी पर नार हरावै

भाट्यॉ नै काबू कर बीकै
हॉसळ करली लूँठी जीत
चारूँ मेर चौखळै हुयग्या
छोटा मोटा घण भैभीत

गाजॉ वाजॉ राज थरपियो
राती घाटी जद गढ घाल
गढ गणेस मे उछब मनायो
जद पूज्या घण नेजा ढाल

राठोड़ी तलवारॉ पळकी
जद जनता घण खुसी मनाई
लतुवॉ रो आतक मिटैलो
लेखो लेसी पाई पाई

पण केई जनखा घण सालै
चौक्यॉ बैठा फोडा घालै
छानै छुपकै दसला नाचै
बैठ तिबारचौं दारू मालै

भुजबळ मे भरमाया भटकै
खोटी निजर ऑगणॉ ताकै
जुडळी बणा फिरै गळियॉ मे
करड़ी मीट डरॉवण झॉकै

लतुवा घण आतक मचावै
चौकी बैठा हुक्म चलाय
करणी रै दरबार पुकारी
जनता मॉगी बेग सहाय

करणी हुक्म दियो बीकै नै
बेग मुलक है काबू करणो
गॉव सेखसर रै गोदारै
पॉडू जाट लियो है सरणो

जाटॉ रो लतुवो नेता जद
आ लाग्यो बीकै रै पॉव
राठोड़ॉ री फिरी दुहाई
जैजैकारॉ गूँज्या गॉव

गॉंव गॉव मे हुयो पसारो
ढाणी-ढाणी पसरी बात
लतुवॉ रा पग धूजण लाग्या
घण छाती धड़कै दिन रात

ख्यात बात इतिहास बखाणै
नामी प्रेम कथा बतळावै
घणी फूटरी मळकी जाटण
सकळ ढाणियॉ गॉंव गुँजावै

गॉंव सेखसर रो घण लतुवो
पॉडू हो गोदारो जाट
अर दूजो लतुवो पूलो हो
गॉंव भाड़ँग रो सारण जाट

नार जबर पूलै सारण री
मळकी ही घण तेज तरार
पॉडू माथै घणी रिझाळू
पॉडू हो जबरो दातार

अेक रात मळकी यूँ बोली
पूलै सेती होठ फुलार
जे दातार हुवै कोई तो
पॉडू सो होवै दातार

दातारी रै तानै माथै
पूलै लीना भँवर तणाय
मळकी नै घण कोझी कूटी
दारू री खूँमारी मॉय

पूलो बोल्यो मार खूँसड़ॉं
काढी गाळ सूगली नार
पॉडू पर इतरी रीझी तो
बी रै ही घर जा रडार

मळकी बोली घर बूडा रे
थारै मॉचै नॉं आऊँ
जे थारै मॉंचै आऊँ तो
भाई रै मॉचै आऊँ

मळकी कियो रूसणो भारी
पूलै सूँ मुखड़े नॉं बोलै
जे पूलो बतळावै तो बा
डावै पग री जूती खोलै

पॉडू नै सदेस भेजियो
रमग्यो है मन थारै मॉय
थारै साथ करूं घरवासो
बैगो आ म्हॉनै ले जाय

पॉडू पूत नकोदर सागै
भेज दिया गोदारा सात
सातूं ही गोदारा लतुवा
गॉव गया भाड़ंग चढ रात

पाय सनेसो मळकी निसरी
मन मे होय घणी राजी
सवा पोर चढती रातडली
सग नकोदर चढ भाजी

आ मीठी मॉ कह बतळाई
पूत नकोदर लेग्यो साथ
घण लतुवा गोदारा सागै
जा पूगी पीळै परभात

मळकी आय सेखसर बडगी
पॉडू री घरवाळी बणगी
पण पॉडू री नार पैलडी
देख सौत मळकी नै तणगी

मळकी गॉव सेखसर बसगी
पण दिन घणॉ पडी नॉ पार
पॉडू री पैली घरवाळी
मळकी ऊपर खावै खार

रॉडाराड मिटावण मळकी
जोय लिवी फिर नूंई थॉव
गॉव गोपलाण रै नेड़ै
बसा लियो मळकीसर गॉव

मळकी जद भाड़ंग सूं भाजी
सारण जाट हुयो भेळो
मळकी री रूसॉवण मेटण
भाड़ंग मे मॉड्यो मेळो

गोठ जीम मळकी तेड़ाई
समझाइस री उण वेळा
पण मळकी री छयॉ न दीसै
हुया बात रा दस ढेळा

पूलो बोल्यो मळकी नै तो
ले भाज्यो पॉडू गोदारो
कह्यो सारणॉ बात खूटगी
रह्यो देखतो ही बेचारो

आपॉ अबै नावड़ॉ कोनी
सारण बोल्या पडै न पार
पॉडू रै लारै बीको है
सोच करण मे कोई न सार

नरसॅग जाटू कनै चालियॉ
जे वो झगड़ो लेवै झाल
तो की पार-पड़ै जाणीजै
सब चालो तो पूगॉ हाल

आखर सगळॉ मतो उपायो
बॅचणै रो है अेक उपाय
दुळक्या जाट सिवॉणी कानी
नरसॅग जाटू तेड़ण जाय

कॅवर पाळ कसवो सिघमुख रो
मळकी रो नानो हो जाण
बैणीवाळ रायसळ दुरियो
मळकी रो हो बाप सुजाण

गॉव भाडॅग रो पूलो सारण
मळकी रो खुद खसम सुजाण
धाणसियै रो अमरो सोहुवो
भुआ बेटो भाई जाण

सूंई रो चोखो सियाग हो
मासी बेटो भाई जाण
लूँदी गॉव रो कानो पूनियो
हो पूलै रो भाई सुजाण

इतरा जाट गया हुय भेळा
पूग्या गाँव सियाणै जाय
घणै माण अरदास करी घण
नरसग जादू लाया मनाय

नरसग जादू सग साथ ले
चढ आयो ले फौज सजाय
पाँडू माथै करण चढाई
जाटाँ री घण मदत कराय

जाटाँ घण जैकार गुँजाया
नरसग जादू री जय बोल
पाँडू गोदारे नै मारों
बजा दिया घण गैरा ढोल

कर देवण रा वचन दिया घण
राजाई रो बिड़द दियो
नरसग रै सरणै नित रैसाँ
सगळाँ जाटाँ कौल कियो

गाँव गाँव री चौधर चलती
आपस मे भिड़िया घण जाट
राँडा राड़ मच्योडी रैती
लटुवा करता माराकाट

सीयाणै रो नरसग जादू
आय चढ्यो लाघड़ियै गाँव
लूट पाट कर गाँव बाळियो
आप बाप रो काढण नाँव

पाँडू और नकोदर दोनूँ
दुखी गळगळा भाज्या जाय
सिधमुख मे डेरा बीकै रा
जाय बठै लाग्या झट पाँव

बोल्या थाँरी परधा मरग्या
नरसग जादू सावत जाय
पूलो जाट रळयो है सागै
अब तो म्हाँरी करो सहाय

लाघड़ियै घण लूँट पाट क
नरसग लाँपो दियो लगाव
भाई वधू पूलै भेळ
अेको कर सै लाया बुलाय

जद बीकै काँधल सज सेना
सीवाँणे पर दिवी चढाय
सिधमुख सूँ दो कोस आँतरै
ढीकै गाँव पूगिया जाय

आधी रात मारियो नरसग
बीकै री तलवार पछाड़
दो टुकड़ा नरसग रा करिया
मिटा दिवी सब राँडी राड़

इसड़ी जबर जाटणी मळकी
घण जाटाँ नै दिया मराय
राठोड़ै बीकै रै चरणाँ
सब जाटाँ नै दिया झुकाय

जुलमी जाट भागिया सगळा
गाँव गाँव दापळिया जाय
समझ गया बीकै काँधल री
खिमता आगै सीस निवाय

जाट सकळ आ सरणो माँग्यो
राठोडाँ री फेर दुहाई
म्हे नाँ कदै कुमारग चालाँ
माँ करणी री खैर मनाई

गाँव गाँव जा सुध बुध लीनी
खुसी हुया सै लोग लुगाई
राठोड़ाँ रा रग सवाया
बीकैजी री फिरी दुहाई

करणी रो तप तेज ऊजळो
बीकाणै पर घण सँकळाई
रोग-सोग-पीड़ा नाँ पनपै
कण-कण मे छाई सुखदाई

नरबद बरसळ और मोयलाँ
सारँगखाँ उतपात मचायो
बीकै काँधल फौज सजाई
राठौडाँ रो सग चढायो

आमो सामो रणरँग चढियो
मार काट तलवार बजाई
सारँगखाँ पर काँधल धायो
बीक मोयलाँ फौज-चढाई

नरबद बरसल मर्‌या जग मे
बाकी भाज्या पूँछ दबाई
राठोडाँ री जीत हुई जद
बीकैजी री फिरी दुहाई

काबू करियो जाय द्रोणपुर
हँसी खुसी दिन सात बिताया
बीदैजी नै दियो द्रोणपुर
बीकोजी बीकाणै आया

सारँगखाँ हसार बिराजै
फोजदार है मौज मनावै
बीकाणै री परधा मोँही
बध बध घण उतपात करावै

मोहिलवाटी री धरती जो
बीदै रै हाथाँ सूँपाई
पण सँभ वैरीसाळ सिधायो
दिल्ली जाय पुकार मचाई

लोदीसा बहलोल हुक्म दे
सारगखाँ सँग फौज चढाई
बीदै री धरती हित ऊभी
काँधलजी री फौज सवाई

काँधलजी री वात अजब है
जद बै उछळ घोड़ियै चढता
अेकै भजकै रै सागै ही
दुमची तग लगाम टूटता

इसड़ो सूरवीर जोधो हो
राठौड़ो रोंधड़ हो भाई
बध बध वार खपाखप करतो
दुसमणियाँ री हुवै सफाई

काँधल री तलवार पळकती
ज्यूँ आभै मे बीज चमकती
लपलपाट करती ही चलती
दुसमणियाँ री भीड़ लपकती

मारकाट बा इसडी करती
रणखेतों मे माथा धरती
जो चढतो उणरी चकरी मे
साबत गयो न रण सूँ फिरती

धिन काँधल री माँ जनमायो
इसो सूरमो दूधो पायो
रणभोमी रो हीर काँधलो
गोदी मे हीरो पळकायो

श्री काँधल रणमलोत रणबको
जोधाणै सूँ आयो साथ
नुँवो राज थरप्यो बीकाँणो
बीकै माथे राख्यो हाथ

श्री काँधल बीकै रो काको
श्री जोधै रो भुजबँध बीर
राठौड़ाँ रो सुजस बधायो
मात भोम मे राख्यो सीर

श्री काँधल हो सुजस सुमेरू
बेजोड़ो राठोड़ो वीर
जन जीवण री सुख सोंयत हित
धीर वीर मिनखापण हीर

श्री काँधल जद रणभोमी मे
घोड़े चढ्यो उछळतो वीर
दुमची पुसतग तग उछळता
अरिदळ बिखर भाजतो भीर

श्री कॉधल भार्यां रो भाई
वैर्‌यॉं रो वैरी हो जाण
सदा सजग रण रातो मातो
राती घाटी सरच सुजाण

श्री कॉधल छतरी छतरप हो
घण जोधो हो अमर सुजाण
मिनखापणो माण मरजादा
राठोड़ाँ री राखी आण

श्री कॉधल धिन धिन राठोड़ो
धिन धिन धिन जननी जायो
बीकै रो सागी काको हो
बीकाणै रो हो पायो

श्री कॉधल रो वस घणो ही
बीकाणै बसियो चहुँ ओर
आण माण मरजादा पाळी
अमर हुयो भुजबळ रै जोर

गॉव साहबै जा कॉधलजी
लगा मोरचा थाण थपायो
देख फौज सारॅंगखॉं कॉप्यो
झटपट दळबळ घणो बधायो

कॉधलजी राजासर आया
लूँठो दळबळ साज सधायो
जा मारयो हिसार रो कॉठो
धन असबाब घणो हथ आयो

वार चल्यो सारॅंगखॉं धायो
कॉधलजी रै ऊपर आयो
टूटगया दुमची तॅंग पुस्तग
जद कॉधल घोड़ो कूदायो

सारॅंगखाँ कॉधल पर आयो
हमलो बोल हस्यो मुळकायो
तलवारॉं री पड़ी चौकड़ी
कॉधल चारूमेर घिरायो

कॉंधल सॅंभ तलवार उठाई
सारॅंगखाँ रै सिर पर वाही
पण सारॅंगखाँ दुबक टळायो
फौज चढी कॉंधल पर आई

कॉंधलजी अेकलड़ा पड़ग्या
तलवारॉं रा घाव लगाया
मार काट दुसमण घण मार्‌या
लड़ता भिड़ता सरग सिधाया

खबर हुई बीकाणै गढ म
बीकैजी प्रण कियो सधाय
कॉधलजी रो वैर लियाँ ही
भोजन करसूँ थाळ सजाय

खाली दूध टक दो पीवै
बीकोजी व्रत पाळ निभावै
सारॅंगखाँ पर जा चढणै री
त्यारी मे दिन रात वितावै

जोधैजी नै खबर कराई
सॅंभ आयो श्री जोधो राव
चढ हिसार रै कॉंठै झाँसै
सब राठोड़ा बधिया धाय

सारॅंगखॉं री फौज भाजगी
मर्‌या घणा दुसमण दुख पाय
सारॅंगखॉं नै मार गिरायो
कुँवर नरै बीकावत जाय

राठोडॉं री जीत हुई जद
ढोलॉं रा गड़क्या ढमकार
बीकॉं जोधॉं री जैकारॉं
राठोडॉं री जै जैकार

घणै गुमर री बात अेकपण
बीकाणै इतिहास मॅंडाय
कॉधलजी रो बदळो साझ्यो
ससारै इतिहास सवाय

कलम कयूँ मन हूँस बधावै
बासॉ उछळै ऊँचो नाड
कुँवर नरो बीकावत धिन धिन
सारँगखॉ नै दियो पछाड

ओ छतरी रो हो छतरापो
हियै गोखलो बारबार
नॉ गोखो तो किसडा छतरी
बोझॉ मे फेको तलवार

भवत् पनरैसो सैताळै
आसाढी वद छठ दिनवार
सारँगखॉ नै मार पछाड्यो
राठोड़ॉ री जै जैकार

बीका जोधा सँग राठोड़ा
विदा हुवै जद पूर्‌यो काम
गाजॉ बाजॉ ढोल घुरॉतॉ
पूग्या अपणै थान मुकाम

पण जोधैजी वाचा मॉग्या
बीकैजी सूँ वचन बँधार
अेक लाडणूँ मॉग्यो देदै
थारै हाथॉ जको अबार

दूजो वचन जोधपुर मॉही
जितरी माया जुड़ी अबार
तूँ भायाँ सूँ बँट मत लीजे
दावो करै न कर तकरार

दोनूँ वचन दिया पण मॉगूँ
तखत छत्र थॉरी तलवार
हूँ सूजै सूँ मोटो बेटो
मन्हे मिलैला अरज सिकार

कह्यो राव जोधै सब सामै
भेजूँ बेग जोधपुर जाय
पूजनीक चीजॉ सब थारी
जाय भेजसूँ वचन निभाय

सकळ मानसी बेटा पोता
हूँ मानूँ थारो अधिकार
ख्यात बात इतिहास भणैला
हूँ जाऊँ सत वचन बँधार

राठोडॉ री भरी सभा मे
निसचै निरणो हुया वजार
जोधोजी जोधाणै टुरिया
कर बीकै सूँ कौल करार

पीछै सुगन सॉतरा साझ्या
जोधोजी जोधाण सिधाया
पगाँ धोक आसीसॉ छाया
बीकोजी बीकाण सिधाया

सवत पनरैसा सैताळै
श्री जोधोजी धाम पधार्‌या
जद सातळजी गादी बैठा
पूजनीक सब साज सँवार्‌या

थोड़ोसो ही राज कियो पण
जद सातळजी धाम सिधाया
सूजोजी गादी पर बैठा
पूजनीक सब साज सजाया

समचार मिलिया बीकै नै
कोल करार किया सुमराया
पूजनीक जिनसॉ लावण नै
बेलोजी पड़िहार सिधाया

बेलोजी जोधाणै पूग्या
सूजैजी नै अरज कराई
पूजनीक जिनसाँ सै मॉगी
बीकै नै देणी फरमाई

सूजोजी बोल्या बेलै नै
म्होंनै भी जिनसाँ चाहीजे
खुलो खुलासो दियो पड़ूतर
अै जिनसाँ क्यूँकर देईजे

बेलोजी धूठा घिर आया
समचार सारा वतळाया
सला करी बीकैजी गढ मे
अमरावॉ मुसद्यॉ सॅग भायॉ

सला करी सब राय विचारी
अेक बात सगळॉ ही धारी
फौज सजा जोधाणै धावो
सिंध करणै री करली त्यारी

खेडॉ सारू आया लडाकू
तीन हजारी सेन सजाई
द्रोणपुरै बीदो सॅग सॅभियो
अरडकमल भी फौज रळाई

राजासर सूँ आयो राजसी
रावत सेना लाय मिलायो
श्री वणीर बाघावत पूग्यो
ले सेना घण साथे आयो

काकोजी मॅडळोजी आया
फौज आपरी साथै लाया
पूगळ सूँ हरोजी आया
तीस हजारी सूर सजाया

बीकैजी री फौज सवाई
पूगी देसणोक घण छाई
मायड़ खुद आसीसॉ दीनी
राठोड़ॉ री साख बधाई

श्री करणी माँ खुद फुरमायो
बीका भलो हुवै सिंध करलै
वधी फौज राठोड़ी आगै
धरकूचॉ धरमॅजळॉ भरलै

श्री बीकोजी गया जोधपुर
श्री सूजै लीनो गढ साझ
की सायी भेज्या सॉमेळै
बीकै माथै उछळ्या गाज

कोस अेक उरियॉ जोधाणै
फौजॉ री मुठभेड़ हुई
सूजै री घण सेना भाजी
बीकै री जैकार हुई

पैठ सहर मे सेना गाजी
सारो सहर भिळायो है
बीच बजारॉ भगदड़ माची
बीकै रो दळ छायो है

गढ मेहराण उपरळी तोपॉ
आग उगळती गोळा बरसै
बीका फौज बधी गढ घेर्‌यो
पाणी बिनॉ गढैरी तरसै

आखर राव सूजै री माजी
जसमादे हाडी कहवायो
गढ मे बैठ करो समझौतो
बात करॉ सदेस पुगायो

गयो वैद लाखणसी गढ मे
बछावत वर सिंध सिधायो
साथे गयो सॉखलो नापो
बेलोजी पडिहार सवायो

सूजैजी रा घणॉ हजूरी
हाकम मुसदी गढ मे आया
आमा-सामा बैठ विचारै
समझौतॉ रा सूत सुणाया

बीकाणै रा मुसदी बोल्या
साचो धरम थॉरो जे जागै
जोधैजी रे धाम पधार्‌यॉ
बीकै रो हक पहलॉ लागै

धीरज धरम धारियॉ सुख है
सुख सॉयत रो करो विचार
जोधैजी रो क्वल निभावो
मिनखापण मरजादा धार

सूजैजी रा मुसदी बोल्या
आ थाँरी है साची बात
द्रोणपुरै री सघी बोलै
अब क्यूं करै कोई भी घात

काँधलजी रो वैर चूकियों
पछै द्रोणपुर पाछा आया
बीकोजी जोधोजी भेळा
बैस परसपर वचन बँधाया

बीकैजी रा मुसदी बोल्या
बीकोजी वचनों नै पाळै
पण जोधै रा गादीधारी
खींचताँण वचनाँ नै गाळै

सूजैजी रा मुसदी बोल्या
पैठ कोट रुपिया है जिणरा
लेय फौज पाछा मुड़ जावो
धन धरती कब्जै है उणरा

नाँ मानो तो थाँरी मरजी
म्हे भी हाँ रजपूत सवाया
बँटवारो म्हे देसाँ मरियाँ
खुला खुलासा वचन सुणाया

बीकानेरी मुसदी मुडिया
बीकैजी रै पासै आया
बै जोधै रा वचन न पाळै
रण राता उनमादाँ छाया

बीको बोल्यो उठो सूरमाँ
खोस लेवो गढ करो चढाई
जोधैजी रै धाम पधार्‌यॉ
बीकै री है सब प्रभुताई

लूँठो हमलो गढ पर बोल्यो
मार काट कर फौज सिधाई
बीकै रा जैकारा गूँज्या
सूजै री घण फौज कँपाई

सूजैजी रो राम निकळग्यो
गढ मे बोल्या लोग लुगाई
जोधैजी रै धाम पूगियॉ
बीकैजी री सब प्रभुताई

बीकोजी है अबै बडेरा
बीकाणै रो है पग मोटो
सूजोजी छोटा बीकै सूँ
जोधाणै रो है पग छोटो

बीकै री आज्ञा सिर माथै
सूजो है धारण रै जोग
आज्ञामान वेदना टाळै
सुख सॉयत पावै सै लोग

सूजो जा माजी सूँ बोल्यो
थे जावो मॉ उणरै पास
थॉ जायाँ ही बात सळटसी
मानो थे म्हारी अरदास

सूजैजी री माजी [illegible]
जसमादेजी हुया [illegible]
श्री बीकैजी खनैं [illegible]
सूजै री वदळण [illegible]

जोधैजी री ढाल सूँपदी
बीकै रै बाँधी तलवार
सगळी चीजाँ इतरी सूँपी
पूजनीक ही भली बिचार

तखत छत्र अर चँवर सूँपिया
सूँपी ढाल और तलवार
लिछमीजी री मूरत सूँपी
नागणेचजी भुजा अठार

भँवर ढोल वैरीसाळ—नगारो
करँड भुँजाई दिवी कटार
पूजनीक सगळा नग तेहरै
घोड़ो दीनो दळ सिणगार

पीछै सीख लिवी माजी सूँ
पाछी फौजाँ लीनी घेर
देसणोक करणी कर दरसण
गढ दाखळिया बीकानेर

दूदैजी री मदद करी नर
माँ करणी रो हुकम हलायो
बीकैजी कर जतन जावतो
मेड़तियो वरसिंघ छुडायो

खड़ेळै निरवाण रिड़मले
बीकाणै घण कियो बिगाड़
बीकैजी ले फौज सिधाया
रिड़मल भाज्यो नीची नाड़

रिड़मल मिल हिंदाल चढाया
रेवाड़ी रै कांठै आया
बीकोजी उठ करण सामनो
ले राठोड़ी फौज सिधाया

मार काट तकड़ी घण माची
घण तकड़ो राठोड़ी राम
रिड़मल अर हिंदाल दोऊँ ही
अेकै साथै आया काम

सवत पनरैसौ इकसठ म
आसोजी बद तीज सुनाम
राठोड़ा श्री राव बीकोजी
सरग सिधारया पूगा धाम

आखी नगरी सोक सँतापी
आँख्याँ हुयगी गीलीगार
राठोड़ाँ री पलकाँ सूजी
झुर-झुर घण रोया नरनार

तीजो सरग

तीजो सरग

सवत पनरैसौ इकसठ मे
आसोजॉ सुद तीज सँवार
श्री बीकोजी धाम पधारया
दस कॅंवरॉ सॅग तज परवार

मॉ करणी सिर छत्र धरायो
लिखमी नाथ सहाय करी
राठोड़ॉ री फुलवारी ही
बीका नगरी हरी भरी

जन जन गहरो सोग प्रगटियो
बीको राव पधार्यो धाम
पग पग धरा ऊजळी धरती
अमर नाम घण अमरा क्रम

राव नरो गादी पर आयो
बीको राव पधार्यो धाम
कुॅंवर नरो बीकावत नामी
कुॅंवर पदॉ जग पळक्यो नाम

जद हिसार रै कॉठै झॉसै
सज राठोड़ी फौज चढाई
सारॅगखॉ सूॅं लियो मोरचो
मेटण नै भूॅंडी जुलमाई

कुॅंवर नरो बीकावत नामी
घुड़ सवार हो इसड़ो भाई
नेजै रै पळकारॉ उछळै
दुसमणियॉ पर करै चढाई

उण जुध भिड़्यो नरो बीकावत
राठोड़ॉ रो झण्डो गाड़्यो
कॉधलजी रो बदळो घेर्यो
सारॅगखॉ नै मार पछाड़्यो

सवत पनरैसौ पच्चीसै
काती सुदी चौथ दिनवार
कुॅंवर नरैजी जलम लियो हो
रॅगकॅंवर रै पेट सॅवार

सवत पनरैसौ इकसठ मे
सुद आसोज पुनम दिनमान
नरो राव गादी पर बैठो
गढ गणेस मे घण सनमान

पण कुदरत री है गत न्यारी
नरो उमर थोड़ी ही लायो
सवत उणी माघ सुद आठम
राव नरोजी धाम सिधायो

सवत पनरैसौ इकसठ मे
फागण बदी चौथ सुभवार
लूणकरण जी गादी बैठा
बीकानेर सज्यो दरबार

सवत पनरैसौ छाईसै
माघ सुदी दसमी सुभवार
लूणकरणजी जलम लियो हो
रॅगकॅंवर रो पेट सॅवार

बीकैजी रै ऑगण जायो
राव नरै रो भाई है
नरै राव रै धाम पधार्यॉ
गादी मिली सवाई है

सवत पनरैसौ बासठ मे
चैत सुदी चवदस सुभवार
देसणोक री करी जातरा
लूणकरणजी जा दरबार

बीकाणै री राजगिदी पर
मॉ करणी री है घण मर
लूणकरणजी ले आसीसॉ
आया है गढ बीकानेर

गढ बीकाणै घुरै नगारा
मीठी वॅटै बधाई है
लुॅआ रावजी गादी बैठा
घर घर खुसियॉ छाई है

मॉ करणी री किरप घणेरी
घण सुध बुध वपरावैली
राठोडॉ रा जैजैकारा
धर आखी गूॅंजावैली

बीकै री ही माया लूॅंठी
पण अब लूॅंठी नॉय
समेसार फटकारो लागै
भाग भुॅवाळी खाय

बीकै धरती घणी बॅधाई
राज धरम मन चाय
लूणकरणजी रै आतॉ ही
सगळी खिडती जाय

भोम माफिया बदळत दीसै
लूॅंटपाट कर खाय
चारूॅंमेर असॉयत पसरी
जमी दाबता जाय

जनता रै तळतळियो तसियो
दिन दिन बधतो जाय
लोग लुगाई घण अणभणिया
टाबरिया दुख पाय

के करणी सूॅं चूक हुई है
के कुदरत री काण
के रावळ रुळियारॉ रूळगी
रजपूतॉ री आण

नीवत वदळी धणॉ भोमियॉ
भाई वटण धाय
अेकल सगती राज पाट री
दुकड़ा हुॅवती जाय

आप आपरा पेट सॅभाळै
अप सुवारथ सपाय
पग-पग राड़ मचावै रॉघड
लोक सकटॉ छाय

जातीवाद पनपग्यो पाछो
ढाणी - ढाणी गॉव
जनखा नचूॅं नचूॅं कर नाचै
लतुवा सीस उॅचाय

राज धरम दूटतड़ो लागै
राठोड़ॉ री पाळ
ठालॉ भूलॉ तसिया गारॉ
दियो मिनखपण गाळ

धीकड़सिंघ पूॅंछडसिंघ उठिया
जाटा सोट भुॅवाय
जॅगळी राज लावणो चावै
गॉव उजडता जाय

चारण अेक अरज अरपाई
करणी रै दरबार
लूणकरण सूतो खूॅंखावै
समझ नींद मे सार

खूॅंटी ऊपर टॉग दिया है
नेज ढाल तलवार
जुलम्यॉ जाग हुई घण जाग्या
कर जुलमॉ वधवार

सीस सॅभायो धणॉं भोमियॉं
सीवॉ मे सूॅंसाय
राज तेज बिन हुयो भूॅथरो
जनता घण दुख छाय

करणी हेलो दियो लूँणसी
सूतै लूणकरण नै आय
बीकै रो परताप मिटावै
गढ मे क्यूँ सूतो खूँखाय

बीकै राज चलौतो इसड़ो
चालै ज्यूँ सुराज गणराज
तन मन धन जन हितौं निरमळो
सबळो सदा सुरछ्या काज

माँ करणी खुद हुक्म सुणायो
लूणकरण उठ फौज सँवार
जनहित मे कल्याण वासतै
नेजो उठा ढाल तलवार

लूणकरण झट उठ्यो सौंभळ्यो
सिध्यो बध्यो ले फौज सँवार
घण दसलौं नै काबू करिया
पेलै ही भचकै कर वार

सवत पनरैसौ छासठ मे
ददरेवै चढ दमन करायो
दबा दियो विदरोह सौंवठो
मानसिंघ चौहान हरायो

सात मास लड़ किय्यो सामनो
मानसिंघ चौहाण डरायो
छुट भाई घड़सी रै हाथौं
मालसिंघ रणभोम मरायो

नगर फतैपुर मे दौलतखाँ
और रगखाँ नितरा भिड़ता
सदा जमी रो झगड़ो झोयों
रोज क्यामखानी ऊळझता

बीकाणै री परधा मॉही
समैसार उतपात करॉता
घण दोसी दसलौं उमरावौं
लूँट माल ले सरण दिरॉता

सुण लोगां री पीड़ मिटावण
लूणकरणजी फौज चढाई
घेर फतेपुर नगर भिळायो
राठोड़ाँ री फिरी दुहाई

सवत पनरैसौ गुणतरै
जीत फतैपुर सधी कीनी
गाँव एक सौ बीस भेट ले
पाछी भोम फतैपुर दीनी

बायल राजपूत विदरोही
सीवाँ पर उतपात मचाँता
घण दसलौं नै पाळ बायला
भारी लूँट पाट करवाँता

लूणकरण ले फौज सिधायो
बायलवाटी पर चढ धायो
चढ हिसार सरसै रै कॉठै
गाँव चारसौ चाळिस लायो

राव लूणसी जीत जुधौं मे
जितरा गॉव फँटाया है
हाथो हाथ मिला रजवाड़ै
घण परवध बँधाया है

सवत पनरैसौ सितर मे
कौई कुमतड़ी केठा आई
महमदखाँ नागोरी सासक
गढ बीकाणै करी चढाई

लूणकरण जी करण सामनो
घण रण रूड़ी फौज सजाई
आधी रात किय्यो चढ हमलो
पण नागोरी फौज भगाई

महमदखॉ घण घायल हुय्यो
घायल हुय नागोर भजायो
लालम लाल लोही सूँ लथपथ
सिर धुण धुण मनड़ै पछतायो

समैसार गागो चढ आयो
अवसर लख जोधाणो राव
गढ नागोर घेर कब्जै मे
लूँठो राव मारियो दाव

महमद अरज करी बीकाणै
लूणकरण सूँ मॉगी साय
सेना सज चढ गया रावजी
पाछा आया मेळ कराय

सवत पनरैसौ सितर मे
लूणकरणजी रचियो ब्यॉव
महाराणा चित्तौड़ रायमल
अपणी बेटी दी परणाय

सुणॉ अेक लालो चारण हो
जैसळमेरॉ कियो प्रवास
रावळ जैतै हँसी उडाई
राठोड़ॉ री लैण तपास

रावळ जैतसिघजी बोल्या
तानो मार कियो अभिमान
जितरी भोम फेरदै घोड़ो
राठोड़ॉ नै करदूँ दान

लालो पाछो फिर बीकाणै
लूणकरण सूँ मिलियो आय
करी बात जेसाणै रावळ
ज्यूँ री त्यूँ कह दिवी सुणाय

राठोड़ॉ झट मूँछ मरोड़ी
रावळ री है कॉई मजाल
राठोड़ी रण री झळ झेलै
भाजण मे नॉ लगसी ताळ

घण लूँठी राठोड़ी सेना
साथ सिधायो लूणो राव
चढ जैसाणै करी चढाई
झटपट मार्‌यो लूँठो दाव

जैसाणै रै रावळ जैतै
सेना आधी रात सजाई
घणै गुमर सूँ हमलो बोल्यो
राठोड़ी सेना पर धाई

पण राठोड़ी सेना आगै
रावळ नॉ टिकियो छळ छाय
जीवतड़ो रावळ अपड़ीज्यो
छूट्यो धीवड़ियाँ परणाय

लूणकरण रा बेटॉ सागै
धीवड़ियॉ परणाई ही
घणो मोकळो दियो दायजो
आछी सीख दिराई ही

लूणकरणजी सीख लेय फिर
पाछा आया बीकानेर
राव सीव विसतारण लाग्यो
ठौड़ ठौड़ चढ घेरा घेर

कॉंतळियो बागड़ियो नरवद
डीडवाणियो लियो सिवाण
नारनौळ पर करॉ चढाई
सेना आगै करॉ प्रयाण

पण थकिया केई रणबका
लैण चाय गढ मे बिसराम
घण लूँठा सिरदार विमुखिया
छुट्टी दुरग्या थान मुकाम

सवत पनरैसौ तैयासी
राव लूणसी फौज सजाई
नारनौळ पर चढती वेळा
करणी खुद बीकाणै आई

लूणकरणजी दरसण करणै
श्री करणी रै डेरै आया
जद करणी फरमायो लूणा
नारनौळ पर चढ मत भाया

नारनौळ पर जा चढणै रो
समै ठीक ही नही अबार
पण मानी नीं राय रावजी
करण चढाई हुयग्यो त्यार

नारनौळ चढणै रा दिनड़ाँ
जैतसिंह पर घणों विराजी
लूणकरणजी चढती वेळा
क्यों नीं बोल्या हुया न राजी

करणी बोली लूणकरण तूँ
नारनौळ पर चढणै धीजै
म्हारी बात मान चढतों ही
जैतसिंघ नैं की तो दीजै

राव बोलियो जैतसिंघ नै
हूँ काँई देऊँ औ भाठा
करणी बोली बस अब लूणा
मिलै जैत ने ही औ भाठा

घणी जाणती खुली खुलासा
करणी सब भविष्य री बातॉं
गिरह नखत काळ री भाषा
अर जीवण पर हुँवती घातॉं

हूँणहार नीं टळै रावजी
इणी बात नैं नीं जाणी
दरसण कर गढ मे आया है
बैठ पियो मीठो पाणी

श्री करणी बैली जुतवाई
देसणोक मढ गई सिधार
नारनौळ चढ लड़सी भिड़सी
लूणकरण ली काती धार

नारनौळ पर करण चढाई
लिखी लूणसी निसचै धार
बीकाणै सूँ चढ्या रावजी
पूग्या देसणोक दरबार

पीछै फौज वधाई आगै
डेरा दिया द्रोणपुर जाय
द्रोणपुरै सूँ फौज चढाई
ढोसी मे पग लिया जमाय

नारनौळ सूँ तीन कोसड़ाँ
उरियाँ डेरा लिया लगाय
समचार सुण सेना आई
नारनौळी नवाब कँपाय

कछावा अर तँवर काँपिया
डर छायो मनड़ाँ रै माँय
लूणकरण री सेना लूँठी
रण रँगियों झळ झलसी माँय

समझौतै री बातॉं चाली
नारनौळ रै मीर नवाब
पण मानी नीं अेक रावजी
हमलै री घण मारी दाब

कल्याणो बीदावत भाटी
हरो जोइयो तिहुण पाळ
चौथो राय मलो सेखावत
च्यारॉं रळ मिळ गूँथ्यो जाळ

कर नवाब सूँ गुपत बारता
दियो हूँसलो घणो बधाय
नेम धरम सूँ वाचा दीना
लूणकरण री फौज भिळाय

भगी घातसों रण मे लड़तों
सेना री तोड़ीला धार
फौजों मे भगदड़ मचजासी
लूणकरण नै लेसॉं मार

उदैकरण भिळ आयो फौज मे
तिहुण पाळ सूँ राय मिलाय
और हरै भाटी नै अपणै
सागै कर लीनो समझाय

पीछै अे तीनूं ही मिलिया
मिल नवाब सूं बात कराय
ऊँडी घात विचारी सगळाँ
भेद कठै भी खोल्यो नाँय

दूजै दिन नवाब सँभ आयो
लूणकरण रै डेरै माँय
और रावजी साथ सारै सूं
उठ मिलिया की सामा जाय

अचाचूक ही मची लड़ाई
दोनूं फौजाँ भिड़गी आय
आमा सामा घोड़ा उछळ्या
सूरवीर तलवार बजाय

लूणकरण री फौजाँ भागी
अचाचूक भगदड़ मचवाय
दगो करणियाँ दगो करायो
छळ बळ करता चूक्या नाँय

लूणकरण रो लसकर टूटो
छळगारा भाज्या छल छाय
राठोडा लडभिड घण खपिया
जुध जीतण पण नही उपाय

तलवाराँ री पड़ी चौकड़ी
राव लूणसी गया घिराय
घोड़ा कटग्या तीन राव रा
फिर पाळा ही लड्या भिड़ाय

घणो लोक मरियो इण जुध मे
दोनाँ पासी नास मिलाय
राव लूणसी घायल हुयग्या
अण गिणती रा घाव लगाय

संवत पनरैसौ तैयासी
सावण बदी चौथ दिनवार
ढोसी गाँव रया रणखेताँ
लूणकरणसी सरग सिधार

रंगकुँवर रो दूधो चूंग्यो
रंग रंग रे रंग सवाय

बीकैजी रो वंस बधायो
राठोड़ाँ जैकाराँ छाय

बीकानेर सवाया रंगाँ
धिन धिन लूणकरणसी राव
जलम भोम री रखवाळी मे
धाम पधार्‌यो धावोधाव

लूणकरणसी धाम पधार्‌याँ
लूणकरण सुत जैतो राव
बीकाणै री राजगिदी पर
आयो वीर राव पद पाय

लूणकरणसी दानी मानी
वीर साहसी बाप समान
बीकै रो परताप बधायो
राठोड़ाँ रो विकस्यो थान

घण उदार गुणियाँ रो गाहक
राव प्रजापालक हो जाण
दानसीळ दातार सूरमो
कळजुग रो हो करण सुजाण

बारै पुत्र सूरमा जलम्या
जलम भोम रो सुजस सवाय
राव लूणसी धाम पधार्‌यो
सुरग सिधायो रण रँग छाय

करणी धिन धिन कह आसीस्यो
जियो जितै सिर छत्र धराय
जनता री सेवा घण साधी
सुख साँयत री साख बधाय

लूणकरणसी सागै जुध मे
वीर अनेकूं आया काम
कुँवर प्रताप नेतसी जूझ्या
वीर बैरसी सिधग्या धाम

मोहित देवीदास सिधायो
रणभोमी मे आयो काम
नारनौळ रै रण मे जूझ्या
गया लूणसी सागै धाम

चौथो सरग

चौथो सरग

सवत पनरै सौ छैयाळै
काती सुद आठम दिनमाण
लूणकरण बीकाण राव रै
ऑगण जलम्यो जैत सुजाण

धिन राणी लिखमॉदे सोढी
जैतसिह जायो रणवीर
दानवीर दातार सूरमो
मिनख धरम पाळक हो धीर

सवत पनरै सौ तैयासी
वद बैसाख चौथ दिन छाय
लूणकरण रणखेत रळायो
लड़ ढोसी मे धाव लगाय

लूणकरण जी धाम पधार्यो
जद मिलियो गढ समचार
तुरत नगर री करण सुरक्षा
सभ्यो जैतसी ले तलवार

जैतसिह गढ कडो घिरायो
सॅग सेना चौकस हुसियार
कल्याणो बीदावत आयो
चढ गढ पर करणै अधिकार

पण जैतै री त्यारी मै लख
सॉयत धार लिवी मन मॉय
सोग करण बतळावण मानै
बीदावत दी बात फुराय

गोडा बोळावण हित आयो
सो तो बात लिवी मै जाण
सावधान अब जैतो आसूॅ
घणॉ दिनॉ मै राखी काण

तुरता फुरत द्रोणपुर भाज्यो
कल्याणो गढ बैठ्यो जाय
धरक जमारो काची ताकी
बीकाणो लैवणग्यो धाय

जैतसिह रै मन रो कॉटो
हूॅ क्यूॅ बणियो घण पछताय
म्हारी के कूवत बीकाणो
राज ढाबलूॅ सेन सजाय

सवत पनरैसौ तैयासी
सावण वदी अमावस वार
लूणकरण सुत वीर जैतसी
बीकाणै ली गादी धार

लूणकरणजी धाम पधार्यॉ
राव जैतसी पाट विराज्या
गढ मे राज तिलक री वेळा
मगळ साज नगारा बाज्या

निजरॉ निरख जैतसी देख्यो
द्रोणपुरी कल्याणो आयो
नस नीची कर घणो लजाळू
हाथ जोड़ियॉ घण सरमायो

कल्याणै रो अपजस छायो
गढ मॉही जाणै सै लोग
मुॅह काळो कर आ ऊभो है
बिनॉ बुलायॉ कर घण सोग

राज तिलक री रीत पूरियाँ
राव गया करणै विसराम
कल्याणै सूॅ मुख नॉ बोल्या
जद वो गयो आपरै धाम

पीछै राव गया देसॉणै
मॉ करणी रै धाम सिधाय
दरसण मेळा किया भलैरा
ली आसीस सवाई छाय

सुभ सुगनॉ सूँ सीख लैवतॉ
गढ बीकाणै दुरया सिधाय
भल परवेस्या गढ गणेस मे
राती घाटी पीछा आय

सवत पनरैसौ पिचतरै
माघ सुदी छठ सुभ दिनमाण
राव जैतसी रै ऑगण मे
लीनो जलम कॅवर कल्याण

धिन सोढी राणी कसमीरॉ
ऊजळ कूख जण्यो कल्याण
थाळ्यॉ भर भर बॅटै घूघरयॉ
बोरयॉ भर भर सुभ नारेळ

गढ मे नार धेनडिया गावै
खुसियॉ री है रेळमपेळ
गढ रखवाळा भाई भतीजा
खाय मिठाई कर कर केळ

लोग लुगाई दैण वधाई
गढ गणेस मे धूम मचावै
धेनड गीत बधावा गावै
गुड री भेल्यॉ घणी बॅटावै

कोड करै आखो बीकाणो
आखी धरती मे सुख छावै
पग पग जतन गॉव ढाणी मे
डागळियॉ चढ थाळ बजावै

राव जैतसी मन मुळकावै
साई बधाई घणी बॅटाय
लोग लुगाई टाबर मुळकै
हरख हरख सगळा हरखाय

गाजॉं बाजॉं ढोल ढमाकॉं
गढ म गूँज नगारा छाय
पिडत विरम पुजारी सगळा
चिरजीवी आसीसॉं गाय

भाई बधू सगा सबधी
सॉवत सरब सभासद आय
राव जैत नै देवै बधाई
मगळ भाव सकळ प्रगटाय

मॉं करणी री मेर घणी है
मन मुळकै सिर छत्र धराय
राज तेज रो तिलक करती
राखी मोळी हाथ बॅधाय

समझी राज काज री नीती
सब मुसदयॉ सूँ राय मिलाय
धीरै धीरै राज काज नै
घण ऑंकस मे लियो कसाय

अरथ तत्र रो रूप परखियो
आमद खरच बही सब देख
लेखो लियो सभा मे बैठ्यॉ
आज तॉई रो सगळो लेख

गॉव गॉव री करी जातरा
ढाणी ढाणी निरख सवाय
कुण लतुआ चौक्यॉ पर बैठ्या
मद छक चौकी राज चलाय

दसला दोखी जनखा जोखी
कुण जनता नै दुखी कराय
राज सभा मे लेखो देवै
हाकम मुसी सच बतळाय

सवत पनरैसौ चौरासी
राव जैतसी सेन सजाय
कल्याणै बीदावत माथै
हमलो कियो द्रोणपुर जाय

कल्याणो बीदावत भाज्यो
लुकतो छिपतो जान बचाय
जाय लुक्यो नागोर खान रै
लियो आसरो घण डरपाय

कर कबजो अधिकार द्रोणपुर
वीर जैतसी लियो सँभाय
बीदै रै पोतै सॉगै नै
दियो द्रोणपुर थान सुँपाय

राव जैतसी सेना साजी
सॉगै नै दळपती बणाय
भेज दिवी सिधाणकोट पर
तिहुणपाळ पर दिवी चढाय

राव जोइयो तिहुणपाळ हो
लुक छिप भाज्यो रातो रात
गढ भॉंग्यो सिधाणकोट रो
सॉगोजी जीत्या परभात

फिरी दुहाई जैतसिंघ री
बीकाणै री जै जैकारी
मॉं करणी री जै जै बोली
राठोडॉं री जै जैकारी

बिजै कियो सिघाणकोट नै
राव सिधाया बीकानेर
गढ परवेस्या खुसी मनाई
सेस जातरा करस्यॉं फेर

देसणोक जा मॉं करणी रा
दरसण करिया जैतैराव
की थोडॉं दिन कर विसरामो
आसीसॉं ले चढिया राव

किरसाणा सै करै किलोळॉं
ऊभा खेत खळॉं रै मॉय
धन धरती सगळी ही नापी
राज सीव मे जिकी समाय

भाई बधू सगा पिछाण्या
सीसकटी रा सॉवत जाण
जनता री रक्षा मे जूझ्या
सेना नायक सकळ सुजाण

सीवॉं री रखवाळी निरखी
परख्या सब हाकम सिरदार
जन जन सूँ भेटा कर जैतै
गॉव गॉव सूँ ली मनवार

करणीजी सदेस भिजायो
धिन जैता तूँ भलॉ विचार
धिन धरती सूँ नेह जतावै
लोक राज री आही कार

कुआ बावड़ी ताळ तळायॉं
पग पग पणघट प्रगटै प्यार
ढाणी ढाणी गॉव नगरियॉं
मिनख धरम री जै जैकार

दसला जनखा पळै न कोई
उवतॉ सीस कुवळ दै जाय
वो राजा ही सदा सनातन
म्हॉरी इण परघा रै मॉय

पछै राव गढ कोटा आया
आय कियो की दिन विसराम
राती घाटी मे गणेसगढ
सुख मे फूलै सदा सिलाम

गढ बीकाणे आ परवेस्या
मन मे घण परमॉणद छाय
सेस जातरा पछै करॉला
मॉं करणी रै धोक लगाय

लोक सभा मे बैठ जैतसी
जन सुख दुख री पूछै वात
कूँण करै जनखापण माडो
करै कबाड़ॉं सूँ जनघात

गॉव गॉव सूँ आवै जातरी
गढ गणेस देखण नै आय
राती घाटी री माटी पर
गॉड मॉडणा गॉव सिधाय

गॉव पचोटा केई आवै
राज सभा रा दरस कराय
आप आपरी अरज करावै
मॉग बतावै गढ मे आय

श्री सूरज नै अरघ चढावै
राव जैतसी जळ री धार
सुभ कासी रो थाळ बाजियो
झणक उठ्यो झण झण झणकार

बालो पॉखॉ बारै आयो
धन्य धन्य सुभ घडी सुजाण
धिन सोढी राणी कसमिरदे
मुळकी सरब गुणॉ री खाण

सवत पनरैसौ सितत्तरै
सुद आसोज दस्यूँ सुभ छाय
राव जैतसी रै ऑगणियै
भीवराज प्रगट्यो सुत आय

आण माण मरजादा पाळै
गीत हरख गावै गढ नार
दसूँ दिसावॉ हुयो चॉनणो
सूरज जी री साख सॅवार

ढोलण ढोल बजावै गढ मे
मीठो मगळ गीत उगेर
हरख कोड हरखावै सगळा
गढ मे गूँजै मीठी भेर

भीवराज जलम्यो कुळ तारू
सूरज जिसड़ो लियॉ सरूप
भळकै भाल अधर मुळकावै
रग रूप मे सुघड़ अनूप

राती घाटी आज महकगी
गढ गणेस हरखै चौकाण
घर घर मीठी बॅटै बधाई
ज्यूँ राठोड़ कुळॉं री काण

जोसी खोल टीपणो बॉंच्यो
गिरह नखत सुभ भाव सॅजोग
ख्यात बात इतिहास मॅडासी
सौ वरसॉ जीवै सुख भोग

दळपतियो दळबळ दरपासी
छतरी धरम निभासी आण
दीन दयाल दरप दुख दळसी
दस दिस सरब सवायो माण

सुगन सॉतरा सरब सॉवठा
सुजस सपसी सुभ सिरमोड़
स्याम धरम कुळ वस उजळसी
माया बधसी लाख किरोड

तपसी सूरवीर अवतरियो
सदा बधासी कुळ री साख
टिकै न सामा हार भाजसी
दुसमण दोखी लाखोलाख

पग पग विजै पताका फहरै
लूँठै होदै पासी माण
क्दै न त्यागै साच सतोमत
सकळपी राठोड़ी आण

बडॉ बडॉ री मदत करैलो
सूर घणै सकट मे जाय
जुध भोमी मे लडै सूरमो
इसड़ो तेज प्रगटियो आय

घोड़ॉ रो घण हुवै पारखी
रण जीतै घोड़ॉ असवार
राठोड़ॉ रो मॉण बधासी
नेजा ढाल सजै तलवार

सवत पनरै सौ पिचियासी
मिगसर बद सात्यूँ सुभवार
राव जैतसी गयो जोधपुर
राव गाँगै री मदत पधार

सेखै गाँगै वैर बधायो
सेखो आयो सेन सजाय
सरखेळो दौलतखाँ सागै
मिल गाँगै पर चढिया धाय

राव जैतसी अर गाँगोजी
रळमिळ चढिया सेन सजाय
सेखै री सेना सूँ भिडिया
सेखो पड़ियो घावोघाव

मरताँ साँस उपरला लेताँ
सेखो बोल्यो वचन उचार
जैत राव थाँरो के खोस्यो
क्यूँ करियो थे म्हाँ पर वार

जमी कारणै काको भतीजो
म्हे लडता हा म्हाँरै वार
मो गत हुई थाँरी गत हुयज्यो
अखी नही कोई ससार

इतरी कह सेखोजी पौढ्या
दोऊँ नेतरा लिया तिरेड़
सेखो धाम पधार्‍यो लडताँ
रण भोमी मे रळग्यो खेड़

सेखै रा कर ससकार सब
डेरै जा जीमण मनवार
भोजन भेळाँ बैस करायो
घणो दिखायो सिसटाचार

गाँगोजी सेखै सूँ बोल्या
भँवर घोड थाँनै दूँ भेट
थाँरी मदत जोधपुर रहियो
अरज साँभळी ठेठमठेठ

सवत पनरैसौ चौराणूँ
चैत वदी दूजाँ दिनमान
करणी हाथ गुँभारो चिणियो
बिनाँ तगारी चिणियो थान

जाळाँ री लकड़ी छत छायो
अजब देवरो लियो चिणाय
आप श्री करणी सँभ दुरगी
जैसळमेराँ गई सिधाय

गाँव जाँगळू रो विसनोई
सारँगियो हो सागै अेक
गाडै रो खाड़ेती लूँठो
मिनखाँ माँय मिनख हो नेक

जैसळमेर जैत रावत री
घण गळगी काया री चाम
सकळप लियो जातरा करसूँ
देसणोक करणी रै धाम

पण करणी लख भाव भगत रा
जा पूगी खुद जैसळमेर
रावळ अेक मँजळ दुर सामो
दरसाँ आय भाव भर खैर

करणी फेर्‍यो हाथ किरप रो
कचन हुयग्यो जैत सरीर
रावळ कह्यो मात हूँ आसूँ
देसणोक दुर जात बहीर

करणी बोली जात सफळ है
हूँ खुद आई होय बहीर
थारै भाव भगत घण राजी
कचन काया किन्यो सरीर

जय करणी माँ थाँरी जै जै
घणै भाव सूँ कर जैकार
रावळ साथ दुरग्या करणी रै
पाळा ही करता जैकार

पीछै रावळ ले करणी नै
जैसळमेर गढाँ मे आया
दिन पनरै राख्या करणी नै
भाव भगत सुभ दरस सवाया

घठे अेक ऑधो खाती हो
असी बरस ऊमर परवाँण
करणी बोली मूरत घड़दै
दूँ म्हारी काया मुजबॉण

माता हूँ ऑधो कारीगर
बूढो हूँ पण अेक सुथार
हूँ कूँकर घड़दूँ मूरतड़ी
थॉरी ही काया री कार

करणी कह्यो जोय म्हॉ सामो
सुण सुथार तूँ निजर पसार
जद सुथार जोयो हुय सामो
ऑख्यॉ पळकी जोत भरार

आधो हुयो जाळ ऑख्यॉ रो
निजर हुई बाळक री कार
श्री करणी री खैर मनाई
लुळ लुळ दीनी धोक सुथार

पछै घडी मूरत करणी री
उण काया रै ही परवॉण
करणी जा खारोड़ै देवळ
पॉच दिनॉ री बण महमाण

पीछै गई बैंघटी करनळ
हरबूजी रै पूगी गॉव
धण मनवार करी हरबूजी
हरबू जिसो बिसो ही नॉव

करणी बोली सुण भाई हरबू
कर सतोस घणो धन सार
हूँ राजी घण आज हुई हूँ
ले थारी मीठी मनवार

पछै गॉव गड़ियाळै पूगी
सूर उगाळी रै ही साथ
गड़ियाळै मे खुदी खराड़ यॉ
ढवी तळायॉ माथै मात

गाडै सूँ उतरी करणीजी
जद पूछी सारंगियै बात
अठै सून जाग्यॉ म मायड़
के कारण क्यूँ उतरी मात

पीछै मार झचोळो बैठी
ध्यान मगन करणी मॉ आप
आपो आप अगन झल निसरी
गई जोत सूरज मे थाप

सवत पनरैसौ पिचाणमै
चैत सुदी नोमी गुरुवार
देवी करणी देह सागी सूँ
परम धाम मे गई सिधार

जैसाणै रै रावत जैतै
देसणोक पूजा भिजवाई
अरु रूपै रो तोरण भेज्यो
आछी भाव भगत अरपाई

बो बूढो सुथार खुद आयो
देसाणै मूरत घड़ लायो
भाव भगति आछी दरसाई
मॉ करणी रो हुकम हलायो

सवत पनरैसौ पिचाणमै
चैत सुदी चवदस सनिवार
देसणोक गूँभारै मॉही
देवळ थरपी भलॉ विचार

देसणोक दस कूँटो जग मे
नामी है करनळ रो धाम
मढ मॉही थापी किनियाणी
सकळ लोक रा सारै काम

राठोड़ॉ री कुळ देवी है
बीकै पर राखी घण मेर
दसूँ कूँट सूँ आवै जातरी
धिन देसाणे बीकानेर

नागफणी पर कलम भीव री
तीखी चालै कलम कटार
भीव भणूँ सागर री पाळॉ
धिन करणी री किरप अपार

म्हॉं पर भी करणी री किरपा
उणरी मेर मनावॉ खैर
जीवण री हर घड़ी ऊजळै
मन मुळकै आणद री लैर

सुरसुत मात सारदा सिवरूँ
खुलॉ कठड़ॉ गाऊँ गीत
छोळमछोळ गुँजावै धरती
पग पग मँडसी म्हारी जीत

गीत श्री सूरज जी री साख रौ

सवत पनरैसौ चुराणमै
चैत वदी दूजळ सुभवार
देसणोक मढ विनॉ तयारी
करणी हाथॉ चिण्यो गुँभार

जाळॉ रा लकड़ा धर माथै
मढ री छात मँढी गिगनार
ध्यान जोग घण करी तपस्या
ऊँडी सूँडी ओम उचार

समैसार साध्यो श्री करणी
बरस अेक सुभ सारमसार
ऊँडै मन मे मतो उपायो
जैसळमेर सिधावण धार

गाडै रो खाड़ेती सारँग
भोम जाँगळू रो बिसनोई
गाडो जुपा टोरियो सागै
भाव भगत दुरियो सँग सो ही

सारँगियै बिसनोई सागै
करणी जैसळमेर सिधाई
चारण कोई न सागै लीनो
मनड़ै समझ कोई अवखाई

चारण भगत बजै भारी पण
सेवादार कोई नॉं लीनो
कै कारण की समझ न आवै
मायड़ कोई न परचो दीनो

रावळ जैसळमेर जैतसी
घण पीड़ीज्यो पीड़ चिराय
विनॉ बुलायॉ जा परचायो
हाथ फेर दी पीड़ मिटाय

गड़ियालै री खरड तळाई
मार झवोळ समाध लगाई
ध्यान जोग अगनी लपटाई
श्री सूरज री जोत समाई

सवत पनरैसौ पिचाणमै
चैत सुकल नवमी गुरुवार
मिली जोत मे जोत परम प्रभु
श्री करणी जी धाम सिधार

आखर दरसण लाभ कमायो
अतस सारँगियै बिसनोई
श्री सूरज री साख खड़ी है
विधि नै टाळ सकै नां कोई

धरम धार धणियाप न ओकळ
सरबजात सनमाँण समरपै
दसूँ दिसावाँ दस दरवाजा
भीव भगत ध्यावै सो सपै

आँधी आँख्याँ दे परचायो
हियै चानणो कर सरचार
हाथाँ मूरत घड़ी अनोखी
असी बरस रै बिरध सुथार

सवत पनरैसौ पिचाणमै
चैत सुदी चवदस सनिवार
उतरा फाल्गुणी सुभ नखतर
मूरत धर थरपी गुभार

देसणोक मे सज्यो देवरो
श्री करणी रो धाम सजाय
अणगिणती नरनार जातरू
दरसण लाभ लेवै हरखाय

नाग फणी पर कलम भीव री
खुलाँ कळड़ाँ गावै गीत
भीव भणै सागर री पाळाँ
छोळमछोळ गुँजावै गीत

तुनतुनियो बाजै रे
भीव रो तुनतुनियो बाजै

साह बाबर रो पूत कामरो
सासण करतो हो लाहोर
पग सीवाँ पसरावण चाल्या
जग मे आप जतावण जोर

सवत पनरैसौ पिचाणमै
चढ्यो कामरो गढ भटनेर
इणी बरस मे धावो बोल्यो
गढ गणेस चढ बीकानेर

चढा फौज लाहोर नगर सूँ
चढ्यो कामरो गढ भटनेर
तगड़ी फौज चढा छाती पर
घेर लियो गढ चारूँमेर

खेतसिघ काँधल रो पोतो
रखवाळो हो गढ भटनेर
ले तलवार खेतसी लड़ियो
राठोड़ी सेना नै लेर

तीर तोप गोळाँ री बिरखा
करी कामरै गढ भटनेर
मुगली फौज घणी भारूँ ही
घण विछग्या लासाँ रा ढेर

कर केसरिया बागा कूद्या
खोल दियो गढरो मुख द्वार
घण राठोड़ा लड़्या सूरमा
लपक लपक चालै तलवार

मुट्ठी भर राठोड़ी सेना
जलम भोम हित दे बलिदान
आन बान राठोड़ी राखण
गजब लड़ी रण रै मैदान

कचरघाण लोही सूँ लथपथ
मरया घणाँ ही मुगल पठान
खेतसिघ तलवार भिळायो
धाम सिधायो रणरँग थान

आखर गढ लेलियो कामरै
मुगल फौज री हुयगी जीत
गढ मे बड़ घण गोठ रचाई
पण मन मे हा घण भैभीत

बधा हुँसळो चढ्यो कामरो
गढ घेरायो बीकानेर
राती घाटी गढ गणेस पर
बजा बजा भारी रणभेर

जैतसिघ नै भेज्यो सनेसो
हुयजा तूँ म्हारै आधीन
गढ मे फेर दुहाई म्हॉरी
मॉड मान म्हॉरी आईन

क्यो जैतसी दियो पडूतर
बीकै रै वसज अनुसार
जाय कामरा नै कह्दीजो
जो करणो कर धार विचार

अठै नही काकड़िया कॅवळा
खाय गादड़ा जीभ पलार
राव जैतसी लड़णो जाणै
राठोड़ॉ री फौज सजार

मलीनाथ सातळ राठोड़ॉ
रणमल जोधा वीर सुजाण
लूणकरण दूदा गॉंगा ज्यूँ
बीका भान्या मुगळ पठाण

बाही काण कणूँके म्हॉ मे
याही है राठोड़ी आण
राव जैतसी भी उण भॉती
गरव गाळसी थारो जाण

दूत लेय सदेसो मुड़ियो
कह्यो कामरै नै झट आय
दियो फौज नै हुक्म कामरै
करो वार नॉ खाली जाय

राव जैतसी जिदो पकड़ो
इण मे जाणो जीत सवाय
देखॉं कूँकर गरब गळासी
घण राठोड़ी सेन सजाय

जुध रा बाजा घणॉं बाजिया
दियो कामरै हुक्म सुणाय
हलचल मची फौज मे भारी
पण मुगलॉ रा पॉव कॅपाय

सामै दीसै आग उगळती
लाटॉ लती गढ रै मॉय
राठोड़ॉ रै जैकारॉ मे
राव जैतसी री जै छाय

जैतसिघ चेत्यो झटपट ही
सिरदारॉं सॅग कियो विचार
अेकर आपॉ लेवॉं पछेती
गढ सूँ बारै करॉ किनार

राती घाटी छोड़ सिधावॉ
गढ नै करदॉ खुलो खुलाय
आस पास मैदान सॅभाळॉ
फोगॉं मे लॉ फौज बिछाय

मुगळॉ नै गढ मे आवणदॉ
जसन मनासी गोठ करासी
दारू पी-पी मौज करैला
गढ जीत्यॉ री खुसी मनासी

आधी रात ढळ्यॉ आ घेरॉ
मुगलॉं नै गढ मे दॉ मार
मॉ करणी रो हुक्म ओही है
मुगल भाजसी जासी हार

राठोड़ॉ री फतै हुवैली
मुगल मरैला घण गस खाय
भळैन आवै कदै कामरो
राती घाटी मे चढ धाय

भोज राज रूपावत रैसी
की राठोड़ी सेना साज
मुगल फौज सूँ लड़सी भिड़सी
भगी घालसी रण रॅग गाज

सवत पनरैसौ पिचाणमै
सुद आसोजी छठ दिनमाण
साह कामरै हमलो करियो
गढ बीकाणै घेरो ताण

लूँठी फौज सजा घण आयो
ससतर पाती तोप सवाय
आग उगळता गोळा फैंकै
तीखा तीर बरसता जाय

मिली सूचना जैत राव नै
राव गया दैसाणै धाम
करणी जी रै गूँभारै मे
हाजर लुळ लुळ अरज कराय

राती वासो दियो राव जी
करणी ऊभी चक्र चलावै
करणी ही बीकाण रुखाळै
करणी दुसमण मार भगावै

माँ करणी दिसटॉग दियो है
राव सामनो करी पछेत
दुसमण नै गढ मे रोड़ीजे
पछै रात नै राखी खेत

मुगली फौज किलै मे बड़सी
जसन मनासी फिरसी गैळ
घण मतवाळो हुवै कामरो
दारू पी-पी रेळमपेळ

करणी री किरणॉ नाचैली
करणी लडसी हाथ हजार
मुगली फौज हुवै चमगूँगी
इसी पड़ै करणी री मार

पड्या पड्या सूता रैजासी
साह कामरो जासी हार
भळै कामरो कदैन आवै
गढ बीकाणै रै दरबार

राठोडॉ री जीत हुवैली
म्हारी है आसीस सवाय
थारी सेना करै रुखाळी
माँ करणी सिर छतर छवाय

गढ पर विजै कामरो समझै
मुगल फौज गढ मे चड़ छासी
बजा जीत रो भेर नगारो
मन मुळकाय मगन हुय जासी

मुगली फौज जीत मे पागल
जसन मनासी गोठ करासी
दारू पी-पी हुसी बावळा
गढ जीतण री खुसी मनासी

आधी रात ढळ्यॉ आ घेरॉ
दारू रा मतवाळॉ छावॉ
अचाचूक हमलो कर आपॉ
मुगलॉ री छाती चढजावॉ

हर हर महादेव कर आपॉ
राठोड़ॉ री सेना साज
आधी रात पछै गढ माथै
टूट पड़ॉ आपॉ सब गाज

आपॉ हुया सगठित आसॉ
राठोडॉ री फौज जमात
पकड़ कामरै नै रण राखॉ
मारॉ ऊगतड़ै परभात

मतो उपायो पूरो करियो
छोड दियो गढ जैतै राव
आस पास जगळ मे डेरा
घण राठोडा फौज सँभाय

औसर जाण कामरो चढियो
गढ गणेस पर धूम मचाय
मुगली सेना बड़ी कोट मे
हुई जीत रो ढोल बजाय

गढ गणेस पर धावै चढियो
गयो कामरो गढ रै मॉय
सूनो गढ देख्यो जद जाण्यो
राठोड़ा डर गया भजाय

मार काट सूँ डर राठोड़ा
केसाँ कोस भाजग्या दूर
गढ छोड्यो बनवास करण नै
जैतसिंघ हुयग्यो मजबूर

सूनै गढ मे बड़्यो कामरो
मुगल पठाणी सेना छाय
मार काट डरग्या राठोड़ा
जाण्यो दीनो राज भिळाय

गढ मे लियो रात वासो कर
मुगली फौजाँ गोठ जिमाय
दारूड़ी पी हुया छकाछक
गहरा गैळीज्या गढ माँय

ससतर पाती पड़्या कठै ही
आप कठै ही पड़्या सुँसाय
हुयो कामरो खुद बेचैतै
घोड़ा ऊभा पूँछ हिलाय

गढ मे जाणै सोपो पड़ग्यो
गैरा गैळ्या मुगल पठाण
दारू री भभकार उठी है
सोयो कामरो खूँटी ताण

आधी रात ढळी घाटी जद
राठोड़ा आया गढ धाय
मार अचाचक हमलो बोल्यो
मुगलाँ री सेना पर छाय

मार धाड मे मुगल घिराया
तलवाराँ री भारी मार
नेजावाँ री बँधी चौकड़ी
निकळण रो नाँ दीसै द्वार

चेताचूक हुया की मुगला
उछळ कूदग्या आधी रात
ससतर पाती हाथ न लाग्या
धूजण लाग्या सब रा गात

मुगल घणैरा काट नाँखिया
चारूँमेर खून रा खाळ
लाय पळीता लगा किलै मे
केई जीवता दीना बाळ

केई मुगल उघाड़ा भाज्या
खाली कछियाँ भाज्या जाय
फोग बाँठकाँ मे फँस मरिया
मरग्या खोड म भटक तिसाय

लुकतो छिपतो निकळ कामरो
भीताँ कूद गयो गढ बार
मुठियाँ भीची दिया ततैया
साथै हा सैनिक नग च्यार

मारग भटक्या खोड रळाया
मुगल भाजिया नाठा जाय
सीस कामरै रै साज्योडी
पड़ी किलगी झोला खाय

सोधी पण सोधी नाँ लाधी
रळी धूड़ मे दबकस खाय
प्राण बचावण री लागी ही
छोड़ किलगी नाठ्यो जाय

लाधी कदै अेक चारण नै
दियो छोटड़ियो गाँव बसाय
ख्यात बात इतिहास बखाणै
लोग लुगाई सै बतळाय

जा लाहोर कामरो थमियो
जीती बाजी पूग्यो हार
प्राण बच्या पण खैर खुदारी
कदैन खाई इसड़ी मार

थापाँ मुक्का लाताँ खाई
बचण तलवाराँ री धार
गढ पिछवाड़ै री मोरी सूँ
पड्यो कूदणो मरण विचार

बारी बारी पॉच कूदिया
प्राण बच्यॉ भज आयॉ हॉ
तिसॉ मरतॉ खोड़ॉ भटक्या
घण भूखा घण धायॉ हॉ

लुक्ता छिपता घणा दिनॉ फिर
गढ लाहोरॉ आया हॉ
इसड़ी मार पड़ी बीकाणै
गपलागोळी खाया हॉ

तीर तोप तलवारॉ गोळा
गढ गणेस मे रहग्या लार
जीण कसाया पूँछ हिलाता
घोड़ छोड आया गढ बार

फौज कटी घण मुगल पठाणी
धन माया सब रैगी लार
लूँट पाट रा हीरा मोती
पन्ना लाल सभी बेकार

राठोड़ॉ सूँ भिडणो खोटो
तौबा खुदा बचावै ढाळ
इसडी मार न भूलूँ बिसरूँ
जे भूलूँ तो काळोकाळ

गढ गणेस मे दिनड़ो ऊग्यो
सै जोवै चानण परभात
गढ नै सार सॅवारै निरखै
राव जैतसी सब रै साथ

जैतराव राठोड़ॉ निरख्यो
पड़्यो कचरियो बॉयोबॉथ
गढ मे कादा कीच इसो है
अणगिण लासॉ कटिया माथ

कचरो साफ हुवै नाँ दस दिन
इसड़ो कचरो पसरयो आज
खून मॉस रा खिड्या लोथड़ा
लाधो अेक टूटियो ताज

घावो घाव हुया घण मुगला
गढ घाटी मे बिखरया है
घण लोही रा खाळ खिडाया
पग-पग माथै छितरया है

राती घाटी लाल तळाई
इसा घणॉ सैनाण पड्या
फोग्गा-बोझॉ सड़ै लासड्यॉ
राठोड़ा इण भॉत लड़्या

मार पछेती लड़्या सूरमा
बरसॉ घणॉ गूँजसी गीत
साह कामरो इसो भाजियो
राठोड़ॉ री नामी जीत

गढ गणेस राती घाटी रो
बीकाणै री नाक है
देसाणै री करणी मॉ री
जमी जमाई धाक है

मारवाड़ नवकूँटो छायो
अठै रच्यो महमॉ मडाण
घणा उजळा आखर बोलै
ख्यात बात इतिहास पुराण

सवत पनरैसौ इठियासी
मारवाड मे हुयो अजोग
राज भोग री घणी लालसा
कोझो काळो भरियो भोग

पटक बाप गॉगै नै गढ सूँ
राव मालदे लीनो राज
दुस्ट भाव हळका घण माडा
आई नही बरततॉ लाज

सवत पनरैसौ इठियासी
जेठ बदी दूजाँ दिनवार
राव मालदे राज सॅभाळ्यो
बाप राव गॉगै नै मार

जोधाणै रै राव मालदे
घण पाळी मनड़ै मे खोट
बीकाणै रो करण विधूँसण
छळ बळ करी चोट पर चोट

गढ बीकाणै तपै जैतसी
रणबंको राठोड़ सुजाण
दसूँ दिसावाँ जस पसरायो
सूर्यवंस रो भळकै भाल

पण मन धार जग मॉडण री
मालदेव चढियो रणरग
अचाचूक बड़ग्यो काकड़ मे
आ धमक्यो सेना ले सग

सेना बीस हजारी साझी
घेर लियो सोवो रण खेत
बीकाणै पर चढ्यो मालदे
भाईपै पर राळी रेत

सुण हमलै री वात जैतसी
गाज उठ्यो मारी ललकार
भालो भळक उठ्यो हाथाँ मे
जोरावर पळकी तलवार

हेलो दियो फौज नै घालो
मालदेव माडी है जग
राती घाटी गूँज उठी जद
सूरवीर चढिया रणरग

भाई भतीजा सगा सनेही
दळपतिया सजिया असवार
टळवाँ टळवाँ सज्या सूरमा
ससतर पाती सब सिणगार

हाल समै चढती वेळा ही
अचाचूक सौदागर आया
काबळिया - कधारी घोड़ा
बिणजाराँ सौदागर लाया

घोड़ा देख जैतसी धीज्यो
करलीनो सौदो मन धार
दोय लाख रुपियाँ मे लीना
सगळा ही घोड़ा विणजार

घोड़ा लख मन घणो मुळक्यो
घण धुथकार कँवर कल्याण
भीवराज मनड़ै हरखायो
लख घोड़ा घण पाँणीवॉण

काबळिया कधारी घोड़ा
राव जैतसी लीना मोल
मालदेव हमलो कर चढियो
बाज उठ्या रण जगी ढोल

हुक्म कामदारॉ नै दीनो
दोय लाख करदो भुगताण
काबळिया कधारी घोड़ा
सज जासी सोवै मैदान

राव जैतसी रण सज चढियो
भाई बधू कुटुम समेत
झटपट जाय मोरचो लीनो
दळबळ ले सोवै रणखेत

राठोड़ाँ रोंधड़ रणरँगियाँ
रणभोमी मारी ललकार
घण भाला तलवाराँ भळकी
सूरवीर जूझण नै त्यार

फौजाँ देख काळजो काँप्यो
राव मालदे डरप्यो जाण
पग चिपग्या धरती पर जाणै
धँसग्या पेट उतरगी पाण

हमलो कर चढिया पण आगै
बधणै मे दीसै नाँ सार
धड़ धड़ धूजै राव मालदे
दापळिया जोधा मन मार

हिम्मत हार्‌यॉ जाय मालदे
कर कर ऊँडो सोच विचार
पिरतक हार सामनै दीसै
आगै बधियॉ पड़ै न पार

चिपग्या दॉत रूँआळी कॉपै
चुप हुयग्या लूँठा सिरदार
ऊभो काळ सामनै दीसै
राव जैत गूँजै ललकार

बेटा पोता भाई भतीजा
सगा सबधी घण मर जासी
पग-पग खून खिंडैलो रातो
रजपूतण रॉडों बध जासी

घर खाली हुयसी ऑगणिया
राजपाट सगळा रुळजासी
मार काट मचजासी भारी
मिनखॉ पर धोरा फिर जासी

पण लारै गढ बीकाणै मे
के गूजरयो कॉई फैताळ
आई बात घणी अणहूँणी
केठा कॉई रचियो जाळ

कामदारियॉ इसडी करदी
किया नही रुपिया भुगताण
हुकम अदूळी करी हरार्म्यों
केठा कॉई मन मे जाण

घोड़ॉ रो नॉ मोल चुकायो
सौदागर हुयग्या नाराज
सेना रै लारै लारै ही
रण खेतॉ मे पूग्या भाज

हुयो तकादो रणभूमी मे
सौदागर आया है लार
राव जैतसी सुण घण कोप्यो
गढ जावण रो कियो विचार

दरबारी नै साचचेत कर
घोड़ॉ माथे जीण कसाया
साथ लियो रामै नै चढिया
छानै गढ बीकाण सिधाया

साथ लियॉ सौदागर पूग्या
रात पौर बीत्यॉ बीकाण
रुपिया गिणा दिया गढ मॉही
राव जैतसी आप सुजाण

धीज गया सौदागर बोल्या
रणखेतॉ म्हॉ करदी चूक
अदाता थे रण मे जुपिया
सूर उजाळो थॉरी कूख

जीत हुयॉ म्हे रुपिया लेसॉ
अठै पधारण रो नहि जोग
जाणॉ म्हॉरी अकल निकळगी
भटक गया म्हे छोटा लोग

राव जैतसी हठ पर उतरया
पण बॉ रुपिया लिया न जाण
रणखेतॉ पूगो जुध जीतो
फतै हुवै पावो घण माण

इणतर देर हुई पूगण मे
दुरया सईदॉ नै गढ दाब
राव जैतसी सोवै चाल्या
जलम भोम री राखण आब

भोजराज रूपावत भेज्या
साथ किया पच्चीस सवार
राव जैत रणखेतॉ जावै
सूरवीर मनड़ो मुळकार

पण डेरॉ म हाको फूटयो
राव नीसरया है रणछोड़
सब सिरदार पूगिया भेळा
कठै गया म्हारॉ सिरमोड़

दरबारी पण झूठ बोलियो
पौढ्या है डेरै दरबार
पण तकरार करी सिरदारॉ
मिलणै री म्हॉरै दरकार

जद माधव दरबारी बोल्यो
आवण मे अब लगैन देर
ऑ घोड़ॉ रो मोल चुकावण
राव गया गढ बीकानेर

सुण सिरदारॉ मनॉं विचारी
गळत धारणा लीनी धार
राव गया बीकाणै गढ मे
छाड आपणै पर जुध भार

छानैं राव गया बीकाणै
पाछा नही पधारै राव
आपॉं पड़्या अेकला रण मे
झाल सकॉ नहि रण रा धाव

यै सगळा भेळा ही बोल्या
राव जैत रै तबू मॉय
आपॉ चालो थान मुकामॉ
रण री झळ अब झलसी नॉय

अरजनसिंघ महाजन रो मालक
द्रोणपुरै रो बोल्यो राव
राव किसनसिंघ राजासर रो
सॉईदास साहबाराव

श्री वणीरजी चाचवाद रो
घदसेण सारूंडा राव
सिकराळी रो मॉडळोत हो
वीर भारमल चढग्यो ताव

वीर रूपसी बाणीदै रो
घडसीसर रो देवीदास
सूरसिंघ बीदावत बोल्यो
जा परतापसिंघ रै पास

गारब रो डूँगरसिंघ बोल्यो
राव वैरसी पूगळ राव
जैमलसर रो करणो भाटी
बीठणोक रो धनो राव

भाटी किसन खारबारै रो
सगळॉ सागै कियो विचार
सौ चाकर तबू पर छोड्या
मुड़ चढिया लूँठा सिरदार

खाली छोड़ मोरचा सगळा
बिखर गई बीकाणी फौज
राव विनॉं रण राग न गूँजै
दूजै किण पर करै धरोज

बीकानेरी फौज खिंडी जद
दुरग्या जाण मुड़ता खोज
खाली साझ मोरचा बधगी
राव मालदे री सब फौज

समझ्यो सगळा डरता भाज्या
लड़नै री आसग खूटी
मालदेव रो बध्यो हूँसळो
अमर हुई आसा टूटी

घड़ी दोय झाँझरकै पूग्या
राव जैतसी रण री धार
आ ऊभा डेरॉ रै सामा
सागै सताईस सवार

दुसमण री फोजॉ चोकस ही
राव मालदे दी ललकार
राव जैतसी डेरै ऊभो
हमलो बोल अबै लो मार

राव जैतसी काठो घिरग्यो
गिणती रा सागै असवार
राव मालदे सामो दीसै
रणचडी बाजी तलवार

घोडो चढा दियो खुद जैतै
मालदेव पर साध्यो वार
लपलपाट करती पळक्ती
गळवदी झटकी तलवार

वाळ वाळ क्टणै सूँ बचग्यो
मालदेव आडी दी ढाल
पण टुकडा कर दिया जैतसी
हाथाँ थमी ऊछली ढाल

घोडै री करणोती काटी
वाह रे जैता वाह
थारै सा दस बीस हुवै तो
सब रै लागै दाह

खपक खपक चालै तलवारों
घण नेजा रळकायाँ जाय
तलवारों री बँधी चौकड़ी
घायल हुयो जैतसी राव

पण अेकल असवार जैतसी
रण बको जूझ्यो राठोड़
सूरवीर अणगिण रण मारया
गूँज उठ्या घोडै रा पोड़

सवत पनरैसो अठाणमै
चैत वदी ग्यारस री भोर
दुसमण री फौजाँ रै घेरै
राव जैतसी-लड़ियो घोर

आखर पड्यो जैतसी धरती
लड़ भिड़ अमर हुयो रणखेत
सोवै री धरती पर सोयो
सरग सोवणी रळियो रेत

इतरा राजपूत रण रँगिया
जैतसिघ साथै रणखेत
जलम भोम री रखवाळी मे
जूझ जूझ रळग्या रण रेत

सोनगरो सारँगदे जूझ्यो
वाय गाँव रो खुद सिरदार
बेळासर रो राम साहणी
सागै सरगाँ गयो सिधार

दरबारी माधव रँग रळियो
प्रोहित लिखमीदास सुजाण
राव जैतसी सागै जूझ्या
तज तज गाँव सोवै मे प्राण

अमर लेख अमरों रा आखर
जलम भोम हित माँड्या जाय
सुजस सूरमाँ रो जग व्यापै
ओळयाँ आखै लोकाँ छाय

जुध रा हाल जाण रूपावत
भोज राजजी कियो विचार
मालदेव मन रो घण मैलो
गढ भेळण नाँ चूकै धार

कर भेळा कुँवरों नै भेज्या
सरसै मे रखवाळी माँय
कुटुम कबीलो सगळो सागै
हुयो सुरक्षित सरसै जाय

पीछै राव मालदे उचक्यो
गढ बीकाणो लियो घिराय
राती घाटी री माटी पर
फौजाँ लीना पाँव जमाय

गढ रा रखवाळा ललकारया
तलवारौँ रा चालै दाँव
मालदेव री सेना रोकी
रोक दिया जुलम्याँ रा पाँव

मालदेव मनडै घबरायो
गढ बारै ही इतरा सूर
गढ रै भीतर कित्ताक बीका
रण रँग राग अमर रस चूर

मालदेव रा माणस मरग्या
गढ वारै ही अेक हजार
गढ रै भीतर नही धुसणदै
वेठा थूँकर पड़सी पार

तो भी राव घणा सूँसायो
फौजाँ नै मारै ललकार
चढो सूरमाँ गढ मे कूदो
आखर जीत लैवण मे सार

राठोड़ा घायल घण हुयग्या
लोही रा खिडग्या घण खाळ
लासाँ पर लासाँ घण बिछगी
अयै टूटती दीसै पाळ

गढ मे भोजराज रूपावत
साथ साँखलो वीर महेस
घण वीका राठोड़ सूरमा
रँग लीना केसरिया भेस

धन्ना सालू दोय सईदा
लड़ण मरण नै ऊभा त्यार
केसरिया वागा करलीना
हाथाँ मे साँभी तलवार

भोजराज रूपावत हाथाँ
गढ मे अमल घणो गळवायो
प्याला भर भर देवै महेसो
सगळाँ ही वीराँ नै पायो

घालो गढ वारै अब भिड़साँ
हालो हालो रो हलकारो
दुसमण फौज चढी गढ पाळाँ
आगै बधो अपड़ला मारो

डेढ हजार सेना सँभ निकळी
भोजराज रूपावत धावै
वीर साँखलो बधै महेसो
सेना नै घण जोस दिरावै

किण री माँ घण सूँठ अरोगी
आपाँ थकाँ गढाँ मे आवै
मालदेव री के खिमता है
सामी छाती गढ धुस जावै

भोजराज रूपावत खोली
गढ गणेस री सूरज पोळ
अेक साथ नीसरिया सगळा
केसरिया रण रो रँग घोळ

वीराँ री तलवाराँ पळकी
मालदेव रा उडग्या होस
चला खपाखप नेजा भिळताँ
पटक लिवी तलवाराँ खोस

मालदेव रा माणस मरिया
चार पाँच सौ अेकाँ चोट
सेना मे भगदड़ सी मचगी
देख राव रा चिपग्या होट

चाल्यो कोई इसो चकरियो
माणस मरिया अेक हजार
गढ दरवाजै आगै लाग्यो
लासाँ रो लूँठो अंबार

आखर लड़ताँ भिड़ताँ जूझ्या
वीका भी घण अेक हजार
भोजराज रूपावत घिरग्यो
वीर महेसो चढग्यो धार

धन्ना सालू दोय सईदा
मार खपाखप मिनख मराय
मालदेव रा माणस अपड्या
मार नाँखिया कठ पिचाय

बीका फौज मरी सगळी जद
मालदेव गढ दाखल जाय
सिंघासण पर जाय बिराज्यो
हाकम मुसदी लिया बुलाय

आप जीत री खुसी मनाई
फौजॉं नै दी गोठ जिमाय
वदोवस्त करण म लाग्यो
सेवादारॉं हुक्म चलाय

पॉच सात दिन गढ मे रहियो
थाणो अेक दियो थरपाय
कूँपै अर पचायण भोळ्यो
सासण भार दियो सँभळाय

कूँपो मेहराजोत वीकाणे
गढ मे सब परवध करावै
करमसोत पचायण रळमिल
ठोड ठोड़ थाणा थरपावै

सेना रा घण वीर सिपाही
मालदेव री जीत सँभाळै
आधै मुलक दुहाई फिरगी
आधै मे कल्याणो माळै

मालदेव ले फौज आपरी
झटपट टुरग्यो जोधपुर जाय
बठै घणो खतरो लागै है
लारोलार सनेसा आय

मालदेव जोधाणै पूग्यो
गढ म करियो जा परवेस
बीकाणा काबू कर आयो
हुयो अबै बो अपणो देस

मालदेव मनड़ै भरमायो
समै सार नै जाणै नाँय
वीकाणो वित्तरा दिन रैसी
भाग भुँवाळी कोझी खाय

राव जैतसी रा जायोड़ा
घण वीका राठोड़
मालदेव नै रात्यूँ दीसै
गरजै ठोडॉंठोड़

भीवराज री खिमता अखरै
मालदेव दुख पाय
दिन मे चैन न नीद रात मे
छाती धड़का खाय

सरसै बैठ्या कुँवर रावश्री
जैतसिघ जी री सतान
कूँकर अपड़ कठडा मोसूँ
अेकज चिता खावै जान

अे बीका राठोड़ उठैला
लेसी बदळो आय
मालदेव दिन रात ओझकै
लीलो पडतो जाय

पाँचवों सरग

पाँचवो सरग

सवत पनरैसौ अठाणमे
चैत सुदी ग्यारस दिनवार
मालदेव सूँ रण मे लड़ता
गया जैतसिंघ सरग सिधार

बीकाणे री राती घाटी
गढ गणेस रो करूँ बखाण
समैंसार हमलो कर जीत्यो
मालदेव आ थरप्या थाण

समेसार सकट री घड़ियों
कोप विखै रा दिन दो च्यार
सरसै मे सकट सूँ पनपै
जैतसिंघ रो घर परिवार

टीकाई कल्याण राव है
बरस तेईसाँ रै परवॉण
दूजो भाई भीवराज है
बरस इकीसो सुघड़ सुजॉण

भळै कुँवर इग्यारै सागै
ऊमर म है छोटा जाण
कुल तेरै सुत कुळ तारणिया
सरसै सैठा हुवै सुजॉण

फिरै घिरै कल्याण रावजी
भीवराज सागै माळै
आधो मुलक मालदे दाब्यो
आधो दोनूँ वीर सँभाळै

कूपो अर पचायण बैठा
गढ मे सब परबध करावै
मालदेव री फिरा दुहाई
ठोड़ ठोड़ थाणा थरपावै

कुँवर दोऊँ कल्याण भीवजी
थपता थाणाँ सूँ टकरावै
नित हमेस रो झगड़ो झोयो
मालदेव सगळै रड़कावै

फॉटोफॉट गॉवड़ाँ रड़भड़
मालदेव ने कोई न चावै
खैर मना कल्याण राव री
करणी री आसीस फळावै

भीवराज री गाँव गाँव मे
दिन दिन सोभा घणी बधावै
धीर वीर राठोड़ लड़ाको
लोकसभा घर करतो जावै

राजनीत मे दिव्यदीठ है
लोकनीति मे घण परवीण
गुपतचरी मे भीव गोप है
मिनख धरम मे है लवलीण

भीव ऊँठ घोडा पारखियो
छाँट ऊँठ घोड़ा मोलावै
राठोड़ाँ री जै जैकारी
साँठी लूँठी सेन सजावै

भीवराज री महमा मोटी
दूर दूर मुलकाँ जस छायो
साह सेरसा सुण मन मोयो
सादर गढ दिल्ली बुलवायो

मालदेव सुण सुण मन डरपै
काँपै हियो हबोळा खाय
खोटो करम कियो रण माँड्यो
मनड़ै चैन न निदरा आय

ले घोड़ा पचास सिधायो
सागै ले सैठा असवार
साह सरसा मिल्यो प्रेम सूँ
बॉह पसार्यॉ भर दरवार

ऑतो जॉतो रैवै मुलक मे
बीकाणै री लेवै सँभाळ
लोगॉ री पीड़ा घण मेटै
गॉव गॉव मे जाजम ढाळ

भीवराज दिल्ली जद जावै
साह सेरसा गळै लगावै
राज काज सेवा मे सादर
राय मसविरॉ सभा सजावै

घण ऊँडा सवध राव सूँ
गुपतचरी मे गुपत सुजाण
गुपत सनेसॉ धीज सेरसा
साह घणो ही करतो माण

भीवराज रो रुतवो ऊँचो
दिन दिन बधतो ही जावै
के दिल्ली रजथाण बिकाणै
घणो लोक मानै चावै

दिल्ली मे साही निवास मे
भीवराज री महमा मोटी
नामी उण री जबर हवेली
चौबारै री छिब नव कोटी

दुखिया रै हित सरणगाह है
न्यान दिरावै कर दुख दूर
सकट घिरया घिराया आवै
घण कोई निरधण मजबूर

रोतो आवै हँसतो जावै
न्याय धरम सूँ करै सहाय
दिल्ली मे जस हुयो सवायो
दिन दिन दूणो बधतो जाय

रिणधिरात श्री अखैराज जी
सोनगरै भेज्यो नारेळ
बेटी भक्तॉदे परणाई
श्री कल्याण कुँवर सँग मेळ

सवत पनरैसौ अठाणमै
सावण वद वारस सुभवार
गढ गणेस मे थाळ वाजियो
घण गरणायो गढ गिगनार

श्री कल्याणा वस वधायो
भक्तॉदे राणी रूपाळ
कॅवर रायसिघ बेटो जायो
घण गुणवती कूख उजाळ

आगै वस घणो ही बधियो
राठोड़ॉ रो रेळमपेळ
बीकाणै री राजगिदी पर
लूँठी घणी बधाई अेळ

राज काज सुख सॉयत छाई
लूँठो बिड़द लियो घणमाण
बीकाणै रो रुतबो ऊँचो
नामी रजवाड़ॉ रजथाण

वस बिरख है हरियो भरियो
घण छाया बीका रैठोड
मॉ करणी सिर छत्र धरायो
गढ बीकाण सिरै सिरमोड़

नगर घणो गुळजार बसायो
लिखमीनाथ करै रिछपाळ
नागणेच री किरप घणेरी
मिनख धरम री करै सभाळ

राणै सूरजमाल सिसोदै
उदियापुर सूँ भेज नारेळ
बेटी रामकुँवर परणाई
भीवराज बीकै सँग मेळ

जीवराज रो वस वधायो
राणी रामकँवर रूपाळ
पूत जण्यो नवरँग नारायण
घण गुणवती कूख उजाळ

आगै वस घणो ही वधियो
राठोड़ाँ रो रेळमपेळ
ठौड़म ठोड़ ठिकाणाँ धारी
लूँठी घणी वधाई अेळ

वस बिरख घण हरियो भरियो
घण छाया वीका राठोड़
रणवका रणरग रचाया
नित वाज्या घोड़ाँ रा पोड़

घण काँधल वीदावत छाया
राठोड़ा घण रेळमपेळ
ठोड़ाँठोड़ ठिकाणा धारी
लूँठी घणी वधाई अेळ

मालदेव ठाकुरसी कान्हा
करमसेन सुरजन भृग जाण
पूरणमल अर अचळदास जी
भोजराज तिरलोक सुजाण

ऑरा वसज घणाँ मोकळा
आखै राजसथाणै मॉय
राठोड़ाँ रो माण वधावै
वस बिरछ री गैरी छाँव

राव जैत रा पूत बधाया
आगै घणो वध्यो परिवार
ऊपर बाँची टीप घणी है
घणाँ जलमिया पाणीदार

वीरमदे दूदावत मोटो
धणी मेड़तै रो घण नाँव
मालदेव सूँ घणो सँतायो
भोगै नित जहरीळा दाँव

सरसै मे कल्याण राव सूँ
मिलियो वीरमदेव सिधाय
हाल हवाला कह वतळाया
लेवण आयो साथ सहाय

झगड़ो झोयो जद सेखै सूँ
गाँगैजी जोधाणै राव
सेखैजी री मदत चढायो
नागोरी खाँ सेन सजाय

उण झगड़ै गाँगोजी जीत्या
सेखोजी ग्या सरग सिधाय
राव जैत री घणी मदत ही
जोधाणै री फौजाँ माँय

वी झगड़ै मे हाथी भाज्यो
हाथी धम्यो मेड़तै आय
पकड़ लियो म्हे उण हाथी नै
वीरम गढ मे लियो बँधाय

पीछे गागै मालदेव नै
खबर पड़ी हाथी री जाय
हाथी गयो मेड़तै सीधो
वीरम गढ मे लियो बँधाय

मालदेव सदेस करायो
वीरम हाथी देय पुगाय
जुध मे म्हाँरी जीत हुयाँ सूँ
हाथी म्हाँरो समझ सवाय

पण मेडतियाँ मतो करायो
हाथी म्हे अब देवाँ माँय
म्हे हाथी नै जद देवाँला
गागोजी आ गोठ जिमाय

मै सगळाँ नै अरज कराई
हाथी देवो खैर मनाय
पण भाईड़ा कोई न मानै
गोठ जिमण री सरत लगाय

मै गॉगैजी नै कहवायो
जोधाणै सदेस पुगायो
राव आपजी अठै पधारो
गोठ जीम हाथी लेजावो

सौ घाड़ा असवार मालदे
चढ्यो मेड़तै पर चढ आयो
गोठ करी दूदावत भायॉं
गोठ जीम हाथी लेजावो

सुण आ बात मालदे बोल्यो
उठ बैगा जोधाणै आवो
पछै जीमसॉं गोठ आपरी
जोधाणै हाथी पुगवावो

रायमलो दूदावत बोल्यो
थे इसड़ा क्यूँ अडियल राज
इसा अड़ीला घणॉ डीकरा
म्हॉरै भी है समझो राज

पाछा जावो थे जोधाणै
म्हे हाथी अब देवॉं नॉय
जद पाछा मुड चल्यो मालदे
सुण हाथी अब देवॉं नॉय

जॉंतॉं जॉंतॉं यूँ उठ बोल्यो
मालदेव ऑंख्यॉं कर लाल
गिण्यॉं दिनॉं मे खिंच जावैली
हाथी बदलै थॉंरी खाल

हाथी तो थे नॉं देवो पण
मालदेव है म्हारो नॉंव
थे जिण ठोड़ मेड़तै बैठा
मूळा हूँ बैवासूँ आय

पछै मालदे गयो जोधपुर
गॉंगै वीरम नै कैवायो
भल भेज्यो सदेस रावजी
समझायस कर यूँ समझायो

जितै जिऊँ थे म्हॉरा हो पण
पछै मालदे घणो सॅंतासी
मिनख पणो बो क्दै न राखै
घण जनखापण सदा जतासी

पीछै हूँ खुद गयो जोधपुर
गॉंगैजी नै कहियो जाय
हाथी म्हॉरै घरै बॅंध्यो है
उण हाथी नै अब कुण खाय

हूँ बोल्यो जे आप कैव्वो तो
हाथी हाजर है लो जाण
जाय मेड़तै वचन निभाऊँ
हाथी भेजूँ जॉंतॉं पाण

हूँ पूग्यो झट जाय मेड़तै
गढ सूँ हाथी नै कढवायो
वो घोडा रजपूतॉं सागै
हाथी जोधाणै टुरवायो

पण पीपाड़ पूगतॉं साथे
हाथी मुवो मारगॉं मॉय
दो घोडा असवार सिधाया
भोर जोधपुर पूगा जाय

गॉंगैजी सूँ जा गढ मिलिया
घोडा दोय सूॅंपिया जाय
हाथी क्ठै पूछियो गॉंगै
हाथी मुवो पिपाड़ै आय

हाथी आयो हूँ मानूँ हूँ
सुण बोल्या गॉंगोजी राव
हाथी मुवो म्हॉरी हद माही
वीरम नै कह दीजो जाय

क्नै ऊभियो माला बोल्यो
वचन कैवतॉं आई न लाज
हाथी आयो थे मानो पण
हूँ आयो नॉं मानूँ आज

पछै राव गागै नै मारयो
मालदेव खुद बणग्यो राव
मेड़तियाँ पर करी चढ़ाई
वीरम म्हाँरो हाथी लाव

पछै मालदे लारै लाग्यो
मेड़तियाँ नै घणा सेताय
नित पैताळ करावै ऊभो
छैड़े रोज टिकण दै नॉय

मालदेव घण गोधम घाली
चढ्यो मेड़तै नित आयो
मार धाड़ कर नित दुख दीनो
म्हाँ सगळाँ नै घणा सँतायो

आखर हार मेड़तो छोड्यो
ठौड़ ठौड़ घण हूँ भटक्यो
मालदेव लारो नाँ छोड्यो
हूँ सक्ट म घणो घिरायो

अब हूँ आयो थाँरै सरसै
हुयसी म्हाँरी घणी सहाय
मिनखापण रै निरमळ जळ मे
हूँ आँसूड़ा देऊँ खोळाय

राव खातरी करी मोकळी
धीरज घणो बँधायो है
सुख सॉयत री आस बँधाई
मिनखा धरम सवायो है

उठ कल्याण राव वीरम रो
घण परवध करायो है
सक्ट री घड़ियाँ कर हळकी
मिनखापण दरसायो है

कह्यो राव नै मै सुण जाणी
सगळै जस पसरायो है
भीवराज दिल्ली मे तापै
साह सूँ हेत सवायो है

आप हाथ सूँ कागद लिखदो
दिल्ली जाणो चाऊँ हूँ
भीवराज री खिमता लूँठी
सक्ट जाय टळाऊँ हूँ

साह जोग घण चलै मानता
म्हाँनै दिरा सरण सुख छासी
भीवराज री पैठाँ सैठी
घिरिया सब सक्ट टळजासी

जद कल्याण रावजी बोल्या
थाँरी बात घणी है आछी
सक्ट सगळा टाळ घिरैली
थाँरै सुख री घड़ियाँ पाछी

थाँरी खातर सारू लिख दूँ
कागद लेय सिधावो थे
भीवराज भाई सँग रहजो
सक्ट सभी टळावो थे

लिख दीनी कल्याण रावजी
भीवराज नै पाती खास
वीरमजी री घणी खातरी
करिया थे दिन रातीवास

वीरम देव सीख ले चाल्या
आगै दिल्ली गया सिधाय
भीवराज जी सूँ जा मिलिया
हाथाँ दिवी लिखावट जाय

भीवराज कर घणी खातरी
डेरै वास दिरायो है
घणै मान सनमान सवायो
घण परवध करायो है

भीवराज रो साह—वजीर सूँ
गाढो हेत घणो हो जाण
खुद सागै वीरम नै लेग्या
साह सूँ साधी भेट सुजाण

साह पूछियो भीवराज नै
अै कुण आया है सरकार
कह बतळायो अे वीरम है
श्री मेड़तिया है सिरदार

छोड़ मेड़तो उतन खुसाया
दिल्ली आया है सिरदार
सरण आपरी साही चावै
मदत आपरी घण दरकार

पछै सेरसा पातसाहजी
वीरमदे नै पास बिठार
घणै मान सूँ करी खातरी
आसण दे साही दरबार

इणतर भेटा किया साह सूँ
घण हरखाया डेरै आय
भीवराज वीरमदे साथै
घणै मान सूँ रया बसाय

दोनूँ ही राठोडा रॉंघड
दिन दिन लीनो सुजस सवायो
सुख सॉयत सूँ घड़ी बितावै
मालदेव सुण सुण घबरायो

सेरसाह री बातॉं चालै
भीवराज जी करै वखॉंण
श्री वीरमजी सुणै प्रेम सूँ
मनडै आणद लेवै सुजाण

सेरसाह हो घण साधारण
छोटो सो हो वीर पठाण
बालपणै रो नॉंव फरीदो
पछै हुयो हो सेरेखॉंण

आपॉं ज्यूँ ही पड़्यो विखै मे
दुरदिन घणॉं बिताया है
अब दिल्ली रो पातसाह है
आछा दिनडा आया है

सैसाराम गॉंव रो वासी
सेरखान हो जात पठाण
भायॉं रै झगड़ॉं रै कारण
पड़्यो विखै मे हुय हैराण

सन पनरैसौ सताइस मे
बाबर रो सासण चलतो हो
सेरखान उण री सेना मे
लग्यो नौकरी ही करतो हो

अेक बरस ही करी नौकरी
पीछै गयो छोड़ छिटकाय
लैण-दैण री बात सटैही
आपस मे घण झोड़ै छाय

फिर लोदी जलाल सूँ मिलियो
नायब सूबेदार बणायो
अवसर आयो सैठो हुयग्यो
घण विकरम बळ तेज बधायो

सासण री समती घण बधगी
गढ चुनार जा घेरायो हो
ताजखान री विधवा साथै
खुद रो ब्यॉंव रचायो हो

ब्यॉंव रचातॉं पाण सेरखॉं
गढ चुनार कब्जायो हो
धन माया घण हाथॉं लागी
धूँसो घणो बजायो हो

मालुम पड़ी हुमायूँ नै जद
गढ चुनार पर धायो हो
पण मजबूरी सेरखान सूँ
समझौतो करवायो हो

इणतर सेरखान सैठायो
सूरजगढ बगाल घिरायो
घण धन माया हाथॉं लागी
मनड़े माही घण हरखायो

ओ जुध जीत्याँ भारत भर मे
सेरसाह रो नाँव गुजायो
सँभ विहार रो सासक हुयग्यो
तेज घणो पगपग दिखळायो

चढ्यो सेरसा सूर जोरकर
जद दिल्ली गढ गाज्यो हो
दिल्लीपत पतसाह हुमायूँ
छोड तखत झट भाज्यो हो

समैसार पळवाँण घणो पण
जो गरभ्यो सो लाज्यो है
गयो हुमायूँ आयो सेरसा
राज मुगट सिर छाज्यो है

भीवराज अर सेरसाह री
घण ऊँडी ही जाण पिछाण
भीवराज नै वेग बुलायो
साह सेरसा भेज दिवाण

भीवराज कर फुरती आयो
ले वीरम नै साथै जाण
सरणै आयो जाण सेरसा
साह मिलायो हाथ सुजाण

भीवराज जी कह बतळायो
साह सेरसा नै समझाय
राव मालदे खोस मेड़तो
वीरमजी नै दिया भगाय

जोधाणै रै राव मालदे
लूँठी फौज सजाई है
वीरमजी रो उतन खुसायो
दिल्ली आय सुणाई है

वीरम बोल्यो सेरसाह सूँ
विपदा भारी आई है
भाज आपरै सरणै आयो
आसा घणी लगाई है

मै पैलड़ियाँ अरज करी है
निसचै म्हाँरी करो सहाय
भीवराज म्हाँरो पोतो है
थाँ सूँ इण दी भेट कराय

साह सेरसा आसण दीना
करी खातरी भर दरबार
वीरमजी नै धीर बँधायो
मन सूँ घणा जतायो प्यार

समैसार आपाँ मिल करसाँ
वीरमजी री घणी सहाय
वीकाणो पीछै लेवाँला
पैली लेवाँ मेड़तो जाय

भीवराज वीरमजी दोनूँ
सीख लेय डेरै आया
घणै मान सूँ साह सेरसा
राठोड़ाँ नै विदा कराया

भीवराज वीरम दोउँ डेरै
बात करै मनड़ै मे छावै
सकट अेक जिसा थाँ म्हाँ पर
ऊँडाँ हिवड़ाँ पीड़ जगावै

पग पग साँप सळेटा उछळै
पग पग मिनख रुळै भटकावै
चूला चाकी गळै पळीढा
आँगण बाखळ सै धुड़जावै

दसूँ दिसावाँ पूँन ऊचकै
जन मन गण मगळ गुदळावै
सुख साँयत रा सपना बिखरै
जीवण जीवत मौत मरावै

छूटै उतन ऊजड़ै घर दर
मिनख धरम तज नाग फुँफावै
जनखा ही जनखा जद नाचै
देस धरम घण माण डिगावै

साह पूछियो भीवराज नै
औ कुण आया है सरकार
कह वतळायो ओ वीरम है
श्री मेड़तिया है सिरदार

छोड़ मेड़तो उतन खुसाया
दिल्ली आया है सिरदार
सरण आपरी साही चावै
मदत आपरी घण दरकार

पछै सेरसा पातसाहजी
वीरमदे नै पास विठार
घणै मान सूँ करी खातरी
आसण दे साही दरवार

इणतर भेटा किया साह सूँ
घण हरखाया डेरै आय
भीवराज वीरमदे साथै
घणै मान सूँ रया वसाय

दोनूँ ही राठोड़ा राँघड़
दिन दिन लीनो सुजस सवायो
सुख सॉयत सूँ घड़ी वितावै
मालदेव सुण सुण घवरायो

सेरसाह री वार्तां चालै
भीवराज जी करै वखॉण
श्री वीरमजी सुणै प्रेम सूँ
मनडै आणद लेवै सुजाण

सेरसाह हो घण साधारण
छोटो सो हो वीर पठाण
वालपणै रो नॉव फरीदो
पछै हुयो हो सेरेखॉण

आपॉ ज्यूँ ही पड्यो विखै मे
दुरदिन घणॉ विताया है
अव दिल्ली रो पातसाह है
आछा दिनड़ा आया है

सैसाराम गाँव रो वासी
सेरखान हो जात पठाण
भायाँ रै झगड़ाँ रै कारण
पड्यो विखै मे हुय हैराण

सन पनरैसौ सताइस म
वावर रो सासण चलतो हो
सेरखान उण री सेना मे
लग्यो नौकरी ही करतो हो

अेक वरस ही करी नौकरी
पीछै गयो छोड़ छिटकाय
लैण-दैण री वात सटैही
आपस मे घण झोड़ै छाय

फिर लोदी जलाल सूँ मिलियो
नायव सूवेदार वणायो
अवसर आयो सैठो हुयग्यो
घण विकरम वळ तेज वधायो

सासण री सगती घण वधगी
गढ चुनार जा घेरायो हो
ताजखान री विधवा साथै
खुद रो व्याँव रचायो हो

व्यॉव रचातॉ पाण सेरखाँ
गढ चुनार कव्वजायो हो
धन माया घण हार्थो लागी
धूँसो घणो वजायो हो

मालुम पड़ी हुमायूँ नै जद
गढ चुनार पर धायो हो
पण मजवूरी सेरखान सूँ
समझौतो करवायो हो

इणतर सेरखान सैठायो
सूरजगढ वगाल घिरायो
घण धन माया हार्थो लागी
मनड़ै माही घण हरखायो

ओ जुध जीत्यों भारत भर मे
सेरसाह रो नॉव गुजायो
सँभ विहार रो सासक हुयग्यो
तेज घणो पगपग दिखळायो

चढ्यो सेरसा सूर जोरकर
जद दिल्ली गढ गाज्यो हो
दिल्लीपत पतसाह हुमायूँ
छोड तखत झट भाज्यो हो

समैसार बळवॉण घणो पण
जो गरभ्यो सो लाज्यो है
गयो हुमायूँ आयो सेरसा
राज मुगट सिर छाज्यो है

भीवराज अर सेरसाह री
घण ऊँडी ही जाण पिछाण
भीवराज नै वेग बुलायो
साह सेरसा भेज दिवाण

भीवराज कर फुरती आयो
ले वीरम नै साथै जाण
सरणै आयो जाण सेरसा
साह मिलायो हाथ सुजाण

भीवराज जी कह बतळायो
साह सेरसा नै समझाय
राव मालदे खोस मेड़तो
वीरमजी नै दिया भगाय

जोधाणै रै राव मालद
लूँठी फौज सजाई है
वीरमजी रो उतन खुसायो
दिल्ली आय सुणाई है

वीरम बोल्यो सेरसाह सूँ
विपदा भारी आई है
भाज आपरै सरणै आयो
आसा घणी लगाई है

मै पैलड़ियाँ अरज करी है
निसचै म्हाँरी करो सहाय
भीवराज म्हॉरो पोतो है
थॉ सूँ इण दी भेट कराय

साह सेरसा आसण दीना
करी खातरी भर दरबार
वीरमजी नै धीर बँधायो
मन सूँ घणो जतायो प्यार

समैसार आपॉ मिल करसॉ
वीरमजी री घणी सहाय
बीकाणो पीछै लेवॉला
पैली लेवॉ मेड़तो जाय

भीवराज वीरमजी दोनूँ
सीख लेय डेरै आया
घणै मान सूँ साह सेरसा
राठोड़ॉ नै विदा कराया

भीवराज वीरम दोउँ डेरै
बात करै मनड़ै म छावै
सकट अेक जिसा थॉ म्हॉं पर
ऊँडॉ हिवडॉ पीड जगावै

पग पग सॉप सळेटा उछळै
पग पग मिनख रुळै भटकावै
चूला चाकी गळै पळीढा
ऑगण बाखळ सै धुड़जावै

दसूँ दिसावॉ पूँन ऊचकै
जन मन गण मगळ गुदळावै
सुख सॉयत रा सपना बिखरै
जीवण जीवत मौत मरावै

छूटै उतन ऊजडै घर दर
मिनख धरम तज नाग फुँफावै
जनखा ही जनखा जद नाचै
देस धरम घण माण डिगावै

समेसार जद राजा बदळै
आसा पासा सै बदळावै
ताज तखत फुरतॉं ही बदळै
आसण सासण सै फुरजावै

सॉमंत सूबेदार हजूरा
हाकम मुसी सै बदळावै
नौकर चाकर पेट मजूरा
जीतोडॉं रा ही गुण गावै

वीरम देख्यो भर दरबारॉं
निजराणा हुँवता निजरावै
दिल्लीपत पतसाह मुळकता
निजराणा लै हाथ मिलावै

निजर करण री बँधी कतारॉं
कर कर निजर भेट करवावै
राज सभा म बिछी जाजमॉं
जोगाजोगी ठौड बैसावै

निजरॉं करो भेट अरपावो
छोटो मोटो होदो पावो
जिसडी किरपा हुवै साह री
लूँटो खोसो पेट भरावो

वीरम बोल्यो भीवराजजी
आपॉं भी दरबार सिधावॉं
सेरसाह दिल्ली पति हाथॉं
लोक करै ज्यूँ निजर करावॉं

ऊँडा सकट पळै हियॉं मे
मदत लेवतॉं चरण बधावॉं
हालो आपॉं निजर करण नै
सकट सगळा सदा नसावॉं

भीवराज बोल्यो दादोसा
म्हे तो आज न चाल सकावॉं
आज राव रो म्हॉंरै सराधो
पूजा अँजळी सूँ सरसावॉं

पिडत जोसी आज तेड़िया
घरै ऑंगणै हवन करावॉं
विरम भोज री वेळा आवै
पितर पूजियॉं करज चुकावॉं

आप सिधा जावो दादोसा
आज साह दरवारॉं जावो
लोकाचार धरम भी मोटो
लोक करै ज्यूँ निजर करावो

समेसार दिन आवै जावै
सुणै साह तो अरज करावो
सुख दुख छयॉं-तावडा छावै
साय करै तो पीड़ हरावो

वीरम साह दरबार सिधाया
लोकाचार निजर करवाई
भेट सॉंतरा सुगन मनाया
साह किरप निजरॉं पसराई

साह बोलिया आप विरमजी
अजूँ अठै ही हो आ जाणी
थॉंरी अरज सिरै चढ जासी
साह बोलिया मीठी वाणी

आप विरमजी म्हॉंरी मानो
म्हॉंरो दीन धरम अपणावो
कलमा पढो सरब सुख सपो
पाछो बो सागी दिन लावो

घण तकड़ी सेना सज धजसॉं
दुसमणियॉं रो गरब गळावो
साह सेरसा सूर साथ है
पाछो उतन आपरो पावो

राजसभा विसराम समाई
विरमदेवजी डेरै आया
मुख मडळ घण आमण दूबळ
धूजै भौह अधर अळसाया

भीवराज पूछ्यो दादोसा
जा दरबार निजर कर आया
हाल हकीकत सभी बखाणो
क्यूँ आमण-दामण दुख छाया

भीवराज सुण वीरम बोल्या
राज सभा जा निजर कराई
साह सेरसा हुक्म दियो हो
जे पाळाँ तो घण दुखदाई

साह सेरसा सूर बोलियो
दीन धरम म्हाँरो अपणावो
कलमा पढो सैन सज चढसाँ
थाँरो उतन पाय सुख छावा

भीवराज बोल्यो दादासा
आप चूकिया घड़ी गँवाई
खैर कोई नाँ देखी जासी
पाछी फुरण फुरैली काई

काल चाल आपाँ दोनूँ ही
भेळा रळ दरबार सिधासाँ
साह सेरसा सूर भेटसाँ
मिनख धरम रो मरम खुलासाँ

भीवराज वीरमजी सागै
उठ सज धज दरबार सिधाया
साह सेरसा सूर विराज्या
तखत भर्‌याँ दरबार बजाया

निरख सेरसा सूर बोलिया
आओ भीवराजजी भाई
वीरम थे कोंई सोरप सोची
काल खुलासा कह समझाई

भीवराज झटपट उठ बोल्या
वीरम थाँरी सरण सवाई
पण के दोय माणसाँ ओटघाँ
थाँरो दीन चढै ऊँचाई

इणतर दीन हुवे जे मोटा
म्हे दाऊँ थाँरो दीन बधावाँ
मिनख धरम पण सबसूँ मोटो
म्हाँ समझ्यो सो साच बतावाँ

साह सेरसा सूर बोलियो
सुणो भीवराजजी भाई
मैं ता परख करण ने मारी
कालै परखी अेक सवाई

आपाँ सज धज सन सजावाँ
सरणागत री कराँ सहाई
हुक्म खुदा रो उतन दिरासाँ
आगे चावै कोई खुदाई

राज सभा धिन धिन सब गूँजी
साह सेरसा सूर बधाई
मिनख धरम री माया मोटी
उण म सगळी कळा समाई

परम खुदा है अेक जगत रो
न्याय ताकडी तोलो भाई
सरणागत प्रतपाळ करो नित
सबसूँ मोटी अेक भलाई

साह सेरसा सूर बोलियो
ओ कुराण आ गीता गावे
न्याय निरख ही अेक निरख है
मिनख धरम सब धरम समावै

सगती रो सामत बडो है
परम खुदा ही परम खुदाई
राज सभा विसराम लेवै अब
मिनख धरम सुभ जीवा भाई

राजसभा विसराम लिया जद
सगळा ठौड़ ठिकाणा सिधाया
भीवराज वीरम दोनूँ भी
मुळक आपरै डेरै आया

धीरज धरम धरोज सवायो
समेसार कण कण मे छावै
मिनख भरोसै पर ही जीवै
विनाँ भरोसै सभी नसावै

पछै दूसरै दिन तड़कै ही
साह भेजियो झट हलकारो
भीवराज भाई नै लावो
वीरम भी म्हाँरो घण प्यारो

हलकारो झटपट उठ धायो
भीवराज वीरम सँग लायो
सज धज गया साह सूँ भेट्या
साह घणो मनड़े हरखायो

साह सेरसा सूर बोलियो
परखी लगा परखिया थानै
थे दिढ दीन धरम पर कायम
हुयो भरोसो पक्को म्हाँनै

भीवराज मै अबै विचार्‌या
अब हूँ खुद अजमेर सिधासूँ
घणी महर ख्वाजै री म्हाँ पर
ख्वाजैजी रा दरसण पासूँ

लिखो वीर कल्याण राव नै
फौज लेय जल्दी ही आवे
आळस चूक करै नाँ कोई
देरी बिलकुल नही लगावै

तद दोऊँ सिरदार सिधाया
हरख कोड कर डेरै आया
लिख पाती सरसै नै भेजी
राव आप नै साह बुलाया

साह सेरसा सूर सिकार्‌यो
निसचै मदत आपणी करसी
आप साथ सारो कर आओ
साह आपणा कारज सरसी

समैसार री यात सॉतरी
दिन कदास पाछा फिर आवै
आप सेन सज वेग पधारो
जतन आपणा पार पड़ावै

बीकाणै रो किया जावतो
सरसै रो परबध कराया
दळवळ सवळ बाँध थे आजो
साह सेरसा सूर बुलाया

अठै सेरसा फौज सजै है
कूँच करण री त्यारी माँही
आप जतन कर वैगा आया
साह ढील अब करसी नाँही

सरसै राव कल्याण विराज्या
जैतसिगजी सरग सिधाया
सरसै मे मोहकाण करण नै
रावत किसनसिंघ जी आया

अँवळी घणी छोकर्‌याँ बोली
आय रावजी मना कराई
रावळ म्हाँरो साथ निभाता
तो घण आता काम सदा ही

हमै ठिकाणा वेग घेरसी
घणी तीख मे कही सुणाई
सुण रावत औ बोल राव रा
वैगी माँगी सीख सुवाई

कह्यो रावजी जीम चढो थे
पीछै देसाँ सीख सुवाई
रावल बोल्या म्हाँरै रावळै
थाँरै ही परताप रावळाँई

पीछै कमर बाँधिया रावत
हुया बीर राजासर आया
रडकै मालदेव रा थाणा
सगळाँ रा चैरा मुरझाया

जैतसिंघ री जुध री वेळा
घण सिरदारॉं चूक कराई
कर ऊँतावळ मुड़्या ठिकाणॉं
सोवै रण मे पीठ दिखाई

जैतसिंघ ओकलडा पडग्या
मालदेव री फौज घिराया
पण सोवै रै रण मे जूझ्या
राव जैतसी सरग सिधाया

उण घटणॉं नै याद करै तो
किसनसिंघ जी घण पछतावै
राव गया अर गयो राजड़ो
राठोड़ॉं री नाक लजावै

किसनसिंघ जी करी लिखावट
आ सिरदारॉं राज बचावो
मालदेव थाणा घण थरप्या
वै थाणा सब परॉं हटावो

बॉंध लिखावट किसनसिंघ री
घण सिरदार वेग सॅंभ आया
छव हजार री सेना सजगी
पाछा वीर भाव रॅंग छाया

पछै कोट सिंधाण तेड़नै
चावै जोइयै नै बुलवायो
चावो जोइयो तुरत सिधायो
फौज हजार च्यार सूँ आयो

इणतर फौज सॉंवठी हुयगी
दस हजार री फौज सजाई
जोधाणै रै मालदेव रा
सब थाणॉं पर करी चढाई

मोटो थाणो लूणकरणसर
सिर ऊँचो कर सामै आयो
लूँठो झगड़ो हुयो अठै ही
रण भोमी रो रूप लखायो

मारवाड़ रा मरग्या तीन सौ
घण कॉंधल भी रणॉं रमाया
मालदेव रा घण माणसिया
भाज नीसरग्या प्राण बचाया

आखर थाणो नास मिलायो
जीत राव री फिरी दुहाई
हुया राव रा जय जयकारा
राठोड़ॉं री आण जताई

ऊँठ ओकसौ घोड दोयसौ
लूँट-पाट मे हाथॉं आया
घोड़ा टाळ पचास टाळवॉं
श्री कल्याण रै निजर कराया

बच्या घोड़िया ऊँठ बॉंटिया
रजपूतॉं नै भेट कराया
लूणकरणसर रै तालॉं मे
राठोड़ॉं रा रंग सवाया

किसनसिंघ कॉंधल रा वंसज
सूरवीर बधता ही धाया
चढ चढ लगा मोरचो तकड़ो
मालदेव रा थाण उठाया

मालदेव रो दूजो सबळो
गारबदेसर मे थाणो हो
जाय रातवासै मे भेळ्यो
उगती भोर विराणो हो

माणस मरग्या चारसौ पूरा
माल लूँट मे आयो हाथ
पनरै बीस दिनॉं मे खिंडियो
मालदेव रो सारो साथ

पीछै किसनसिंघ जी चढिया
भीनासर मे पॉंव जमाया
सारो साथ अठै ही जमियो
गढ बीकाणै नैण गडाया

गढ बीकाणो दाब्यॉ बैठो
कूँपो मेहराजोत सॅभायो
दो हजार री फौज सँभी ही
मालदेव रो थाण थपायो

किसनसिघ झूपै बारठ नै
कूँपै खनै भेज कैवायो
थे भाई गढ घणाँ बिराज्या
थॉरो राख्यो मान सवायो

अब थे थॉरी ठौड सिधावो
तो थॉरी है घण इधकाई
जे थे राजपूत घण तकड़ा
आ गढ बारै करो लड़ाई

सुण झूपै री बात सॉवठी
कूँपै रीस घणी ही छाई
काळो-पीळो हुयो घणो ही
पण झगडे री आसॅग नॉही

कूँपै मॉड बात सब भेजी
मालदेव नै गढॉ बुलायो
आप पधारो तो पग थामॉ
म्हॉ ऊपर है घेर घिरायो

म्हे धारयो मन काम आयसॉ
रजपूतॉ री आण दिखावॉ
कबजो कदैन छोडॉ रण मे
जोधाणै रो माण बधावॉ

जाण बात सगळी जद झूँपो
पाछो भीनासर मुड आयो
बोल्यो कूँपो बात न मानै
जोधाणै सदेस पठायो

किसनसिघ जमियो बैठो है
भीनासर मे पॉव रुपायो
आसॉ पासॉ घणो सॉवठो
घेरो घण मजबूत करायो

गढ दिल्ली सूँ कागद आयो
भाई भीव रै हाथ लिखायो
बाँच राव कल्याण सॅभळियो
बॉच बाँच मनड़ो हरखायो

समचार सगळा सबळा है
आस बँधावै जोस जगावै
हूँस-हूँसळो करै चौगुणो
गज छाती फूली न समावै

वीरमजी आसीस लिखाई
बॉच बॉच निव सीस धरावै
भीवराज सागै दिल्ली मे
रजपूती रो माण बधावै

भीवराज री पाती बॉची
श्री कल्याण राव हरखाया
तुरता फुरत मॉड मडाणा
सगळा ही परबध कराया

सजी फौज राठोडी सज धज
ससतर पाती सभी बँधाया
आगै सूँ आगै रळ बधता
गढ दिल्ली री दिसा सिधाया

फौज साह री सामै मिलसी
समचार आया भरपाया
धर कूँचा धर मॅजलॉ चाल्या
रण बाजा सगळा गूँजाया

ठोड ठाड पर हुई खातरी
धिन राठोडी फौज सिधावै
बीकाणै रो राज लोक है
रळै फौज मे फौज बधावै

घोड़ा-ऊँठ रळ्या घण पैदळ
रण रचिया असवार दुराया
नेजा ढाल सज्या घण ससतर
मॉ करणी री छतरी छाया

राठोडी जस लोक जागियो
जैतसिंघ रो पूत सिधावै
दळ वळ सबळ सॉवठो वधियो
हळवॉ हळवॉ मन मुळकावै

दिल्ली दूर नहीं मोट्यारॉ
दिल्ली आ सामी दीसै है
वधै जाय रण रंग रंगासाँ
केम्पर घण धोटै पीसै है

साह सेरसा सूर गूँजियो
साही सेना कूच करावै
अजमेरॉ री करण जातरा
ढोलॉ रै ढमकार सिधावै

डोढ लाख रणबंकॉ सागै
सेरसाह सूरी खुद जावै
भीवराज वीरम दो मुखिया
गाजॉ वाजॉ फौज सिधावै

मजळ अेक चाल दिल्ली सूँ
फौज आपरी चाल वधाई
साह निरख चतुरंगण सेना
छाती चवडी करी फुलाई

वधा हूँसळो साह सेर रो
भीवराज वीरम आ बोल्या
निसचै थाँरी जीत हुवेली
चारूँमेर मोरचा खोल्या

इतणै मे छिपती दिस मारग
रणभेरी गूँजी गरणाई
वधै राव कल्याण गूँजतो
भीवराज भाई रो भाई

लाल धजा नेजा फुरकाता
ऊँठाँ घोड़ाँ चढिया आवै
विजळी ज्यूँ तलवाराँ पळकै
राठोड़ाँ री जय गूंजावै

साज सजी चतुरंगी सेना
गाजॉ बाजॉ चढती आवै
साह सूर रो बध्यो काळजो
भीवराज वीरम घण छावै

आय मिली राठोडी सेना
बध्यो राव कल्याण सवायो
साह सेरसा सूर गळै मिल
घणै मान सनमान वधायो

श्री वीरम रै चरणॉ मे झुक
लुळ लुळ ऊँडी धोक लगाई
भाव सनातन पुण्य बधायो
घण मॉगी आसीस सवाई

पीछै भीवराज भाई सूँ
गळै मिल्यो निजरॉ पळकाई
श्री चरणाँ मे धोक दिरा दी
मन मुळका आसीस सवाई

निरमळ नीर नदी रो झीणो
पाट किनारै फौज थमाई
मीठो प्रेम भाव परसादो
घुटा फौज नै गोठ जिमाई

की थोडो विसराम कियो अर
पछै फौज नै कूच कराई
अजमेरॉ रै मारग चढतॉ
ख्वाजै जी री जै बुलवाई

दर मजळ अजमेर पूगिया
पातसाह रा डेरा दीना
राव राज भेळा ही मुळकै
ख्वाजैजी रा दरसण कीना

दरगा मे आ सीस झुकायो
लुळ लुळ सगळाँ धोक लगाई
जुध जीतण री करी कामणा
नवरँग चादर ताण चढाई

लिखी राव कल्याण हाथ सूँ
लिखत गॉव भीनासर भेजी
चढ ओठी बीकाणै पूग्यो
मन म राख सॉवठी तेजी

किसनसिंघ जी लिखत वॉच नै
घर्णो गरजिया हुय घण राजी
अबै हुँसळो घण कर बोल्या
जासी कठै मालदे पाजी

अजमेरॉ मे फौज पूगगी
श्री कल्याण राव घण राजी
साह सेर साथै वीरम है
भीवराज रै हाथॉ वाजी

नही लुकैलो नही झुकैलो
भीवराज सेना रो मुखियो
वीरम देव सतोमत साथै
मालदेव सूँ है घण दुखियो

साह सेरसा सूर साथ है
अबै मालदे लुक कित जासी
वीरम धाव करैलो भारी
भीवराज छाती चढजासी

किसनसिंघ घण दाब लगायो
कूँपै री छाती घण धड़की
पग पग सूरवीर ललकारै
राठोडी तलवारॉ खड़की

अजमेरॉ री खबर पडी जद
मालदेव नै मुरछा आई
चेहरै रो रँग फीको पड़ग्यो
पगॉ हेट धरती खिसकाई

ओठी हाय मेल परवानो
मालदेव कूँपै नै भेज्यो
गढ खाली कर बैगा आवो
खतरो अबै घणो मत लीज्यो

साह सेरसा सूर पातसा
गढ जोधाणै पर चढ आयो
भीवराज वीरम सागे है
अणगिण फौज सजा घण लायो

साथ राव कल्याण सुणीजै
जोधाणै पर चढिया आवै
वीरम भीवराज सेनापत
अजमेरॉ सूँ कूच करावै

कूँपै मेराजोत सनेसो
किसनसिंघ जी नै करवायो
थे म्हॉरो लारो न लेवो तो
जॉवॉ जोधपुर वादो ठायो

वैगा जावो उखड़ जोधपुर
रावत किसनसिंघ कहवायो
दो हजार माणस ले भाज्यो
कूँपोजी गढ छोड़ सिधायो

सवत सोळैसौ छव विकरम
पोह सुदी पूनम शुभवार
रावत किसनसिंघ गढ बीको
सॉंभ लियो खाली करवार

गढ गणेस राती घाटी मे
फिरी राव कल्याण दुहाई
रावत किसनसिंघ बीकाणै
आखे मे घण दिवी बधाई

सज चाळीस हजारी सेना
राव मालदे फौज बधाई
अजमेरॉ रै मारग माथे
कडो बॉध करली घेराई

जोधाणै सूँ कूच कियो जद
कोचरड़ी डावै करळाई
मालदेव थारी नीवतड़ी
घोर पापसूँ नित लपटाई

वीकाणे पर हमलो करतॉ
राई भर भी लाज न आई
राड़ मेडतै सूँ नित मॉडी
वीरम पर नित घात कराई

अबै भोग फळ बाप मारियो
कळंक लगा तै खोस्यो राज
थॉरी भूख मिटी नॉ ओजूं
अबै न फळसी थारा काज

मालदेव रो रूं रूं कॉपै
पण ललकारै सेना सागै
राज जॉवतो सामो दीसै
थोथो चिणो घणो ही बाजै

अजमेरॉ रै मारग-मारग
मालदेव री फौज दुराय
हळवॉ हळवॉ धर मॅजलॉ धर
धर कूचॉ धर फौज बधाय

साह सेरसा सूर सेन सज
मालदेव पर करी चढाई
समैसार सब बात वणै रे
बोल्यो भीवराजजी भाई

वीरम नै ले साथ गाजियो
अजमेरॉं सूँ बारै आय
भीवराज घोड़ो कूदायो
कड़ै वीच तलवार चलाय

वीरम भी घोड़ो कूदायो
भीवराज सागै ललकार
अबकी वार न चूकॉ कोई
मालदेव नै लेसॉं मार

साह सेरसा सूर गाजियो
ले घोड़ो उछळ्यो मैदान
सागै ही कल्याण सूरमो
उछळ्यो ले राठोड़ी आण

बाग उठी घोडॉ री वकी
घण बाज्या घोडॉ रा पौड़
मालदेव रा धरणा धूज्या
भाज नीसरूँ ऊँडी ठौड़

कूँपो मेहराजोत पचायण
करम सोत भिड आया काम
मालदेव रो साथ मरायो
कड़ो टूटग्यो पूग्या धाम

भीवराज वीरम दोउँ लपक्या
मालदेवै नै अब लो मार
घोड़ॉ उछळ कनौती खीची
लपलपाट खीची तलवार

मालदेव री निजरॉ कॉपी
भीवराज वीरम दोउँ आय
मार काट करता ही उछळै
अबै न कोई करै सहाय

लख थोड़ा सा सूर लड़ता
मालदेव रा रुपग्या पॉव
हाथ काळ रा बधता दीसै
अब भाजण रो करो उपाव

मौको देख पूठड़ी फोरी
घोड़ै रै मारी फटकार
मालदेव झट दिया ततैया
रण भोमी नै पीठ दिखार

आखर भाज दौड़तो बड़ग्यो
धूँधरोट रा पाड़ॉं मॉय
साथ सात सौ लिया रुखाळा
लुकतो फिरै भाखरॉं मॉय

मालदेव नैं देख भाजतो
बच्या खुच्या भी नाठा जाय
रण भोमी खाली कर दीनी
ऑख्यॉं में तिरवाळा आय

साह सेरसा हुक्म दियो झट
सॅंभ्या वीर सेना रा छाय
हळवॉं हळवॉं सेना पूगी
पग थाम्या जोधाणै जाय

साह सेरसा सूर कूचकर
वड्यो नगर जोधाणै मॉय
चिड़िया टूँक दुरग जा घेरयो
फौज चढी मेहराण गढाय

किलेदार बरजॅंग तिलोकसी
की दिन लड़ियो गढ रै मॉय
पाणी विनॉं तिसाया मरग्या
सूरवीर केई गस खाय

आखर मरयॉ तीनसौ माणस
जद तिलोकसी वारै आयो
मार काट मचगी घण भारी
गढ रै आगै सरग सिधायो

साह सेरसा सूर जीतियो
जोधाणै रो गढ मेहराण
च्यार मास गढ म विगजियो
सेरसाह री फिरगी आण

पछै फौज ले चढ्या मेड़तै
झटपट खाली लियो कराय
वीरमजी नै गादी बैठा
राज मेड़तो दियो सुँपाय

पछै राव कल्याण सीख ले
गढ बीकाणै पूग्या जाय
गढ गणेस राती घाटी मे
कर परवेस मुळकिया आय

साह सेरसा सूर सिधायो
जोधाणै थाणो थरपाय
गढ दिल्ली मे जा परवेस्यो
ख्वाजै जी री जै बुलवाय

भीवराज अर वीरम दोनूँ
पातसाह रै साथ गया
घण कीरत विसतारी दोनों
उतन दिराया करी दया

पछै पातसा सीख दिराई
घणै कोड मनड़ै हरखाया
वीरम देव मेड़तै आया
भीवराज नै साथै लाया

घणी खातरी कर वीरमजी
भीवराज रो माण वधायो
दोनूँ गयी भोम रो वाहड़ू
विरद दियो जै भीव सवायो

थारै पगॉं गयोड़ी धरती
म्हॉंरै हाथॉं पाछी आई
गयी भोम रो वाहड़ू धिनधिन
मॉं कसमिरदे कूख सराई

पछै सीख दी भीवराज नै
भीवराज बीकाणै आयो
हाथी अेक च्यार घोड़ॉं री
सीख भेट सुभ सागै लायो

कर गढ मे परवेस मुळकियो
पगॉं राव कल्याण लगायो
श्री मुख सूँ आसीस दिवी घण
मॉं करणी सिर छत्र धरायो

श्री मुख सूँ श्री राव बोलिया
भाई तो भाई है भीव
राव जैतसी बस उजाळ्यो
पाळी धणी राज री सीव

बीका कुळ राठोड वधायो
थारै ताण रह्यो बीकाण
तूँ है गयी भोम रो वाहड़ू
विरद देऊँ हूँ घण सनमाण

थारा नॉव अमर जग रैसी
जिते चॉद सूरज जस माण
ख्यात वात इतिहास मॅडासी
कलम कथासी सुजस सुजाण

सवत सोळैसौ दो बरसाँ
काळिजर जुध गयो जुपाय
चढतॉ ही रणभोम रळायो
साह सेरसा मुवो चढाय

मालदेव सुण समचार झट
जोधाणे पर गयो चढाय
कियो राज काबू कवजै मे
हरख कोड मुळक्यो मन मॉय

जैमल राव मेड़ते तपतो
कॉटै ज्यूँ रड़कै दिन रात
मालदेव नित राड़ मचावै
रड़भिड़ करै घात पर घात

जैमल दीनी भोम ईडवै
अरजण नै सूँपी जागीर
मालदेव घण वेराजी हो
सहण हुवै नीं टूट्यो धीर

तावड़तोड़ मचाई इसड़ी
लग्यो काळजै ऊँडो तीर
मालदेव दसरावै पीछे
सेन सजा झट हुयग्यो वीर

धावो बोलण गयो मेड़ते
गॉव गॉगरड़ थाप्यो थान
धूम धूम परजा सताई
लूँट मार कर घण सैतान

उण सवक्ट री वेळा जैमळ
बीकाणै सूँ करी पुकार
भीवराज सँग बैठ राय ली
मदत देवणी की सीकार

मॉ करणी री सुभ आसीसॉ
छॉट छॉट टळवॉ सिरदार
भेजी मदत राव कल्याणै
सज बीकाणी सेन सजार

बीकाणै री फौज पूगगी
जैमळ री छाती तणगी
रळमिळ पूरी फौज टोरदी
मालदेव सूँ जा भिड़गी

जैतमाल सेना रो मुखियो
अखैराज भादावत साथ
जैतराम जाधावत सागै
रणजूझण रणरॅगिया हाथ

मालदेव नै घण चेतायो
जैमल नै तूँ मत नीं छेड़
राख मेड़तो जैमल हाथॉ
राड़ राख मत जुध नैं तेड़

मालदेव पण सीख न मानै
झटपट कोरो दियो नकार
ओ सदेस गयो जद पाछो
जैमल हुयग्यो जुध नै त्यार

भारी मार काट जद मचगी
दोनूँ फौज भिळी तरवार
मालदेव री सेना भगदड़
पड़ी खपाखप पड़तॉ वार

पग पाछा पड़ता ही दीस्या
लोही रा बहग्या घण खाळ
मालदेव री सेना भाजी
झाल नहीं पाई रण झाळ

अखैराज सुरताण लपकिया
घेर लियो जा पिरथीराज
रणखेतॉ रणरेतॉ रचियो
काट नॉरिया पाड़ी गाज

पिरथीराज मुवो सुण भाजी
ऊखड़ग्या सेना रा पाँव
मालदेव नै दावण तोंई
झट फोरया सिरदारों दाँव

लख जैमल बोल्यो सिरदारों
उचित कोयनी माड़ी बात
मालदेव नै थे मत मारो
आपै ही मरसी कर घात

पण बीकाणै रा सिरदारों
मालदेव रो लीनो लार
चढ पूग्या बीकाणा बका
मार खपाखप ले तरवार

नगो भारमलोत आ सामो
रण मे भिड़ियो ले तरवार
सीधो हाथ पड्यो श्री रँग रो
लपक नगै नै लीनो मार

मालदेव सेना ले भाज्यो
कोस अेक पण लीनो घेर
चढ पूग्या बीकाणा बका
कियो सामनो चौंदै फेर

चढ वणीरजी वार कियो झट
चौंदै नै भी लीनो मार
इती ताळ मे मालदेव जी
खासा अळगा हुयग्या पार

आखर लारो छोड मुड़ी जद
घड़ी अेक लीनो बिसराम
बीकाणी रण बकी सेना
करणी सिवर कियो आराम

थान मुकाम आय सिरदारॉं
रणछोड़ॉ री खबर सुणाई
कोसॉकोस भाजग्यो मालो
जैमलजी नै दिवी बधाई

जैमल बोल्यो मालदेव रै
भाजण री मत देवो बधाई
रह्यो मेड़तो थॉरै हाथॉ
इणरी लूँठी देवो बधाई

पैलॉं भी थॉरै ही हाथॉं
रह्यो मेड़तो म्हॉरै हाथ
अबकै भी थिर रैयो मेड़तो
मिल्यॉ आपरो लूँठो साथ

इण जुध मे बी मालदेव रो
नोंमी नगारो लाग्यो हाथ
पण जैमल भाँभी रै हाथॉं
भेज्यो जोधपुर हाथो हाथ

मारग मे ढोली रै मन म
रळी आयगी गैरी छाय
बजा लेऊँ अेकर नगारियो
उठा नगारो दियो बजाय

नगारो बजतॉ ही गूँज्यो
मालदेव जद सुणी अवाज
फौज मेड़तै री आवै है
समझ जोधपुर बड़ग्यो भाज

भॉंभी लेय नगारो पूग्यो
बेगोबेग जोधपुर जाय
मालदेव नै सूँप नगारो
ढोली बोल्यो सीस निवाय

ओ नगारो रयो भाजतॉं
रण भूमी मे दीलो छोड
अबै सँभाळो आप आपरो
घणैमान घिन घिन रणछोड

ढोली जद पाछो मुड आयो
समचार सब दिया सुणाय
सुण ढोली री बात सॉंतरी
जैमलजी मनडै मुळकाय

सिरो पाव ढोली नै दीनो
नेग नगारे रो चूकाय
गढ री चौकी चढो मेड़तै
सै सिरदार गया मुळकाय

हळवॉ हळवॉ सेना चाली
गाजॉ बाजॉ ढोल घुराय
मन मे भारी मोद भरायो
नगर मेड़ते पूगी आय

की दिन सेना रैई मेडतै
राठोडा रणबका छाय
गाजॉं बाजॉ ढोल ढमाकॉं
गढ चौकॉं विसराम कराय

सीख लेवण री वेळा आई
जैमलजी सूॅं अरज कराय
अबे सीख देवो थे म्हॉंने
म्हे बीकाणै जावॉ सिधाय

छोड़ मेड़तो सीख सिधाया
बीकाणै रा जद सिरदार
जैमल कह्यो राव नै कहज्यो
म्हॉरा मुजरो नमसकार

कहज्यो थॉंरे तॉंण मेड़तो
ढबग्यो हाथॉं रहग्यो राज
धिन धिन आप जिसा सहजोगी
थे भल सारयो म्हॉंरो काज

छोड मेड़तो फौज सिधाई
हळवॉं हळवॉं चलती आय
देसणोक मे फौज ढबाई
मॉं करणी री जय गूॅंजाय

देसणोक सूॅं फौज सिधाई
गढ बीकाणै पूगी आय
राठोड़ॉं रै जैकारॉं सूॅं
राती घाटी गयी गुॅंजाय

गढ गणेस राती घाटी मे
बीका फौज कियो परवेस
राठोड़ॉं रै जैकारै सूॅं
गूॅंज उठ्यो गढ श्री गणेस

घण बाज्या छतीसूॅं बाजा
जगी ढोल बज्यो गरणाय
कर आरतड़ी फौज बधारी
ऊॅंचै सुर सूॅं सख बजाय

मालदेव रो गरब गळायो
राठोड़ॉं री राखी आण
जैमल रो सदेस सुणायो
सुण मुळक्या घण राव कल्याण

पछै फौज नै गोठ जिमाई
गढ गणेस मे कर परसाद
धिन धिन धिन राठोड़ी सेना
राठोड़ी पाळी मरजाद

गई भोम रो बाहड़ू मुळक्यो
भीवराजजी दिवी बधाई
घर घर खुसी बधाई बॉंटै
सै नगरी रा लोग लुगाई

आखी जनता खुसी हुई घण
राठोड़ा है म्हॉंरा प्राण
आजादी रा सदा रुखाळा
छतरी धरम निभावै आण

मिनखा धरम सनातन राख्यो
राख ऊजळी क्ख सवाय
राठोड़ॉं छतरापो पाळ्यो
पग पग जनता राज थपाय

राठोड़ी फौजॉं रा गुॅंहियॉं
धिन धिन धिन रे थॉंरो नॉंव
टीका बीदा कॅंधलोत घण
ठावा बसिया गॉंवागॉंव

पिरथीराज मुवो सुण भाजी
ऊखडग्या सेना रा पॉव
मालदेव नै दावण तॉई
झट फोरया सिरदारॉ दॉव

लख जैमल बोल्यो सिरदारॉ
उचित कोयनी माड़ी बात
मालदेव नै थे मत मारो
आपै ही मरसी कर घात

पण बीकाणै रा सिरदारॉ
मालदेव रो लीनो लार
चढ पूग्या बीकाणा बका
मार खपाखप ले तरवार

नगो भारमलोत आ सामो
रण मे भिडियो ले तरवार
सीधो हाथ पड्यो श्री रॅग रो
लपक नगै नै लीनो मार

मालदेव सेना ले भाज्यो
कोस अेक पण लीनो घेर
चढ पूग्या बीकाणा बका
कियो सामनो चॉदै फेर

चढ वणीरजी वार कियो झट
चॉदै नै भी लीनो मार
इती ताळ मे मालदेव जी
खासा अळगा हुयग्या पार

आखर लारो छोड मुडी जद
घडी अेक लीनो बिसराम
बीकाणी रण बकी सेना
करणी सिवर कियो आराम

थान मुकाम आय सिरदारॉ
रणछोड़ॉ री खबर सुणाई
कोसॉकोस भाजग्यो मालो
जैमलजी नै दिवी बधाई

जैमल बोल्यो मालदेव रै
भाजण री मत देवो बधाई
रह्यो मेड़तो थॉरै हाथॉ
इणरी लूॅठी देवो बधाई

पैलॉ भी थॉरै ही हाथॉ
रह्यो मेड़तो म्हॉरै हाथ
अबकै भी थिर रैयो मेड़तो
मिल्यॉ आपरो लूॅठो साथ

इण जुध मे बी मालदेव रो
नॉमी नगारो लाग्यो हाथ
पण जैमल भॉभी रै हाथॉ
भेज्यो जोधपुर हाथो हाथ

मारग म ढोली रै मन मे
रळी आयगी गैरी छाय
बजा लेऊॅ अेकर नगारियो
उठा नगारो दियो बजाय

नगारो बजतॉ ही गूॅज्यो
मालदेव जद सुणी अवाज
फौज मेड़तै री आवै है
समझ जोधपुर बड़ग्यो भाज

भॉभी लेय नगारो पूग्यो
बेगोवेग जोधपुर जाय
मालदेव नै सूॅप नगारो
ढोली बोल्यो सीस निवाय

ओ नगारो रयो भाजतॉ
रण भूमी मे दीनो छोड
अबै सॅभाळो आप आपरो
घणैमान धिन धिन रणछोड़

ढोली जद पाछो मुड आयो
समचार सब दिया सुणाय
सुण ढोली री बात सॉतरी
जैमलजी मनडै मुळकाय

सिरो पाव ढोली नै दीनो
नेग नगारे रो चूकाय
गढ री चौकी चढो मेडतै
सै सिरदार गया मुळकाय

हळवॉं हळवॉं सेना चाली
गाजॉं बाजॉं ढोल घुराय
मन मे भारी मोद भरायो
नगर मेडतै पूगी आय

की दिन सेना रैई मेडतै
राठोडा रणवका छाय
गाजॉं बाजॉं ढोल ढमाकॉं
गढ चौकॉं विसराम कराय

सीख लेवण री वेळा आई
जैमलजी सूँ अरज कराय
अबै सीख देवो थे म्हॉनै
म्हे बीकाणै जावॉं सिधाय

छोड़ मेड़तो सीख सिधाया
बीकाणै रा जद सिरदार
जैमल कह्यो राव नै कह्ज्यो
म्हॉरो मुजरो नमसकार

कह्ज्यो थॉरै तॉण मेड़तो
ढबग्यो हाथॉं रहग्यो राज
धिन धिन आप जिसा सहजोगी
थे भल सारयो म्हॉरो काज

छाड मेड़तो फौज सिधाई
हळवॉं हळवॉं चलती आय
देसणोक मे फौज ढवाई
मॉं करणी री जय गूँजाय

देसणोक सूँ फौज सिधाई
गढ बीकाणै पूगी आय
राठोड़ॉं रै जैकारॉं सूँ
राती घाटी गयी गुँजाय

गढ गणेस राती घाटी मे
बीका फौज किय्यो परवेस
राठोडॉं रै जैकारै सूँ
गूँज उठ्यो गढ श्री गणेस

घण बाज्या छतीसूँ बाजा
जगी ढोल बज्यो गरणाय
कर आरतडी फौज बधारी
ऊँचै सुर सूँ सख बजाय

मालदेव रो गरब गळायो
राठोड़ॉं री राखी आण
जैमल रो सदेस सुणायो
सुण मुळक्या घण राव कल्याण

पछै फौज नै गोठ जिमाई
गढ गणेस म कर परसाद
धिन धिन धिन राठोड़ी सेना
राठोड़ी पाळी मरजाद

गई भोम रो बाहडू मुळक्यो
भीवराजजी दिवी बधाई
घर घर खुसी बधाई बॉंटै
सै नगरी रा लोग लुगाई

आखी जनता खुसी हुई घण
राठोड़ा है म्हॉरा प्राण
आजादी रा सदा रुखाळा
छतरी धरम निभावै आण

मिनखा धरम सनातन राख्यो
राख ऊजळी कूख सवाय
राठोड़ॉं छतरापो पाळ्यो
पग पग जनता राज थपाय

राठोड़ी फौजॉं रा गुँहियॉं
धिन धिन धिन रे थॉंरो नॉव
वीका बीदा कॉंधलोत घण
ठावा वसिया गॉंवोगॉंव

आछा ठोड ठिकाणाँ धारी
सीस कटी मे बसिया जाय
जनता रा साचा रखवाळा
राठोड़ाँ रा रग सवाय

राजसीह अर मेघसीह नर
केलण देवसीह घण माण
विजैसीह अर अमरसीह नर
बीसाजी बीका सुत जाण

वीर प्रतापसी बेरसीह नर
रतनसीह अर तेजसी जाण
वीर नेतसी और करमसी
किसनसीह रामसीह सुजाण

सूरजमल अर कुसळसीह नर
रूपसीह धिन वीर सुजाण
अै सगळा ही वीर लडाका
लूणकरण सुत नीतीवाण

मालदेव अर कान्ह श्रृगजी
सुरजन करमसेन घण माण
पूरणमल अर अचळदासजी
मान भोज तिरलोक सुजाण

राठोडाँ री जैजैकारी
दुसमणियाँ पर चढिया गाज
राव जैतसी रा सुत सूराँ
जलम भोम हित किंयो सुकाज

बड़ो राव कल्याण सूरमो
गादीधर टीकाई है
ठाकुरसी भी घणो सूरमो
भीवराज सो भाई है

बीकाणै रो राज बावड्याँ
राठोड़ाँ रो खूा बधायो
मालदेव री चोट बिखरियो
चारूं मेराँ राज सँधायो

गढ भटनेर चायलै अहमद
बैठे घण उतपात कराई
पग पग पर आतक मचायो
जनता ही घण भरी भराई

जैतपुरै ठाकुरसी तपतो
अहमद माँडी राड़ घणी
दिन धौळै रा धाड धरोंतो
गढ बैठो भटनेर धणी

ठाकुरसी भटनेर लैवण रो
आखर मन मे चायो हो
जोरदार हमलो कर खोसाँ
काठो मतो उपायो हो

अेक हजार री फौज चढाई
जा घेर्यो चढ गढ भटनेर
माँ करणी री जैजै बोल्यो
गढ मे जाय गूँजियो सेर

अहमद रहग्यो दूर कठै ही
गयो फिरोजो रण मे मर
राठोडाँ री फिरी दुहाई
धिन कल्याणो गादी धर

भीवराज ठाकुरसी भाई
गढ मे करी जीतरी गोठ
धरम धार नगरी रा लोगाँ
नौसौ मणाँ उछाळ्या मोठ

बीस बरस ठाकुरसी तपियो
घणो बध्यो राठोड़ो राज
घणो इलाको कब्जै करियो
घणाँ कराया जनहित काज

महाजन रा मालक अरजनसी
चाचावाद रा वीर वणीर
जैतपुरै रा किसनसीह नर
पूगळ राव वैरसी धीर

रायसीह अर रामसीहजी
पीथळ पिरथीराज सुजाण
अमरसीह अर भाणसीह नर
सारॅगदे सूरा सुरताण

राठोडॉ रो सुजस बधायो
धिन धिन धिन वीरा बीकाण
औ सगळा कल्याण राव सुत
राठोड़ाँ रा सुजस सुजाण

भळै घणॉ ही सूरवीर नर
राठोड़ी फौजाँ रा वीर
धरम धीर चौकस हुय बधिया
दुसमणियाँ री छात्याँ चीर

गढ गणेस राती घाटी री
माटी मे ही बा तासीर
जलम्या सो ही सूर जलमिया
दुसमणियाँ पर चढिया धीर

राठोड़ाँ री जैजैकारी
माँ करणी सिर छत्र धरायो
गाजाँ बाजाँ राज कियो घण
जन सेवा रो फरज निभायो

लोकलाज मरजादा राखी
घड़ी घड़ी रा विघन टळाया
सदा लोक कल्याण साधियो
माँ करणी रा हुकम हलाया

आजादी रा रखवाळा हा
घण सैठा राठोड़ा राव
आखै भारत सुजस कमायो
कर दुसमण काळजियाँ घाव

लोकराज बीकै जोधावत
थरप्यो बीकानेर
जनलोकाँ री पीड़ मिटाई
श्री करणी री मैर

कॉधल बीकै काकै भतीजै
गढ गणेस री पाळ
देय लोक सेवा सरक्षण
दुरदिन दीना टाळ

काका हुवै तो कॉधल जिसड़ो
वाह रे कॉधल वाह
लोकराज बीकै रो थरप्यो
लख लोकाँ री थाह

बीकाणै री करी थरपणाँ
राती घाटी माँह
लोकसभा री साळ खड़ी है
गढ गणेस री छाँह

राव जैत जस जीतियो
राती घाटी माँह
साह कामरो भाजियो
निरख अँधारी छाँह

सवत पनरैसौ पचाणमै
सुद आसोजी छठ
भाजत नॉख्यो किरणियो
नास मिलायो हठ

ख्यात बात इतिहास मे
विजै दिवस जस लेख
करणी चकर चलाइयो
कॅप्यो कामरो देख

भाज्यो लुक छिप रात रो
छाई काळी भोर
डिगतो पड़तो मारगाँ
भाज बड़यो लाहौर

भीवराज जैतावत बीकै
करियो करन महाण
गई भोम रो बाहड़ू
लीनो विरुद सुजाण

सुजस भीवराजोत रा
चीकम करै सभाळ
चलकोई रो चानणा
पळकै सूरजमाल

राती घाटी थरपियो
वाको गढ बीकाण
राखण मिनखापण सदा
आजादी रो माण

श्री करणी री कीरती
अखी अमर महिमाँण
भीव भणै सागर री पाळाँ
तीखी कलम वखाँण

सगती री भगती इसी
घण लूँठी जस झाळ
टिकै न दुसमण सामनै
लपटाँ दवै घाळ

गढ देसाणैं देहुरो
दस कूँटो देसाण
किनियाणी री कीरती
पळकै जितरै भाण

चारण काबा चौमुखा
धवड़ै ढोल बजाय
जो धोकै विनवै अठै
करणी रै जस छाय

राती घाटी सोवणी
गढ गणेस घण भाण
बीकै जोधावत थप्या
बाँको गढ बीकाण

राव जैतसी रो कुँवर
भीवराज कुळ भाण
गई भोम रो बाहडू
पायो बिड़द बखाण

भीवराज चित मे चढ्यो
साह सेरसा सार
गढ दिल्ली मे तेड़ियो
घणे मान मनवार

भीवराज चित मे चढ्यो
घण क्रमू मुख नूर
घण विसवासी नित गिण्यो
साह सेरसा सूर

राजकाज रणनीतियो
घण लाँबी तलवार
दुसमण धूजै नाँव सुण
लड़ियाँ पड़ै न पार

ऊँठ घोड़ाँ रो पारखी
घण तकड़ो असवार
सेन सजावै साँवठी
मैंहिया मुखाँ मँझार

सुजस घणा जग सपियो
साह सेरसा सूर
भीवराज नै जीवणै
भल राख्यो भरपूर

विकरम सवत सोळसौ
जा मालव परदेस
रायसेन गढ जीतियो
सेरसाह सँगतेस

सँवत सोळैसौ अेक मे
लियो जोधपुर दाब
मालदेव भाखर भिळ्यो
मिली न रोटी राब

मालदेव नवसहँसा भाज्यो
पदमाँदे देवड़ियो पूत
पिछम धरा रो पातसाह हो
जोधाणै रो हो रजपूत

फतै जोधपुर मै कियो
भीवराज रै तॉण
साह सेरसा सूर रो
सुजस वध्यो सनमाण

मालदेव सूॅ खोसियो
पाछो गढ बीकाण
गयो राज पाछो लियो
भीवराज रै तॉण

राठोड़ॉ रणवकडा
गढ गणेस बीकाण
राज तिलक सनमाणियो
जैतसुतो कल्याण

वीरम दीनो मेडतो
बीकाणो कल्याण
गई भोम रो बाहड़ू
भीवराज विड़दाण

राजसभा सनमाणियो
गढ गणेस बीकाण
राती घाटी रो विड़द
भीवराज कल्याण

गई भोम रो वाहड़ू
मोटो विड़द वखाण
गॉंव भीवसर बॉधियो
गॉवॉं सेत सुजाण

आखै राज वसाइया
आछी आछी ठोड़
बीका भीवराजोत रा
रण चक्र राठोड़

रणराता रण सुजसिया
भीव भीव राजोत
सुघड़ सपियो सॉवठो
सुभ राठोड़ो गोत

राठोड़ॉ रो चालियो
बाईस पीढी राज
जे नॉ हुॅवतो भीव तो
हुॅवतो घणो अकाज

गढपतिया नामी हुया
ख्यात बात इतिहास
घण जीत्या गढ सॉंवठा
कर दुसमण रो नास

जैतसिह रै आँगणै
घणा जलमिया सूर
राठोड़ा रॉघड हुया
मुख मडळ घण नूर

राती घाटी रण मॅड्या
रॉंघड़ लड़्या सॅपूर
जस जीत्या तलवार सूॅ
दुसमणिया कर धूर

घण पग माड्या ऊजळा
गॉंव गॉव घमरोळ
राठोड़ा रणरग चढ
पूरा करिया कोळ

घण सकट घिरतॉं थकॉं
कदैन खोयो होस
धीर वीर राख्यो सदा
हिवड़ॉ जस रो जोस

रण मे रळक्या कमर कस
रण राती झळ झाल
सकट मेट्या सॉंवठा
कर जनता प्रतिपाळ

कसमिरदे रै पेट रा
घण पळक्या दो लाल
घण नामी कल्याणसी
भीवराज भूपाळ

जे नॉ हुँवतो भीव तो
वणतो कूँकर गोत
नॉव कमायो भीव जद
वज्या भीवराजोत

जे नॉ हुँवतो भीवजी
हुँवतो इसो अकाज
चौथी पीढी विणसतो
बीकावसी राज

जे नॉ हुँवतो भीवजी
हुँवतो इसो अकाज
बीकॉ रो नॉ चालतो
बाइस पीढी राज

जे नॉ हुँवतो भीवजी
जैतावत राठोड़
मालदेव रै वस रा
गढॉ करता कोड

जे नॉ हुँवतो भीवजी
जैतसिंघ रो पूत
बीका बीदा कॉंधला
रुळता घण रजपूत

जे नॉ हुँवतो भीवजी
जैतावत राठोड
बीका बीदा कॉधला
गढ बँधता किण ठोड

उणी भीवराजोत रो
बीको वस विसाळ
नवलसिंघ रै ऑगणै
पळकै सूरजमाल

चलकोई रै च्यानणै
पग पग कर परकास
राठोड़ॉ रणवकड़ॉ
भरसी नुँओ हुळास

सवत दो हजार चौपनवे
भादू जलमाठम सोमवार
गई भोम रो वाहड़ू
लिखियो ग्रथ लिखार

सन उगणीसौ सतॉणमै
पचिस अगस्त सोमवार
गई भोम रो बाहड़ू
लिखियो ग्रथ लिखार

समैसार परवॉण लख
सुभ सुगुणी सुत सार
गढ बीकाणै नगर म
भीव भण्यो भणकार

नाग फणी पर क्लम भीव री
नित चालै तीखी तरवार
मॉ करणी सिर छत्र धरावै
सार सारदा बिडद सॅवार

समैसार री बात बणैली
नुँवो बणैलो म्हॉरो गोत
म्हॉरा वसज बीकाणै रा
बजै पॉडिया भीवपॉडोत

भीव रो तुनतुनियो बाजै

श्री जोधै सुत बीकै मॉड्या
पग रण रातै रजवट रग
आ जॉगळ परदेस जॉगळू
कमधज काकै कॉधल सग

जय श्री करणी देसणोक री
माथै ऊपर छत्र धरायो
लिखमीनाथ नागणेचीजी
घणो दियो आसीस सवायो

गढ गणेस राती घाटी मे
राठोड़ॉ भल गढ चिणवायो
न्यारी न्यारी जात पॉंत रो
चलतो चौकी राज मिटायो

राठोड़ॉ रजपूती राखी
राजस्थानी आण
भीव रो तुनतुनियो बाजै

भैरो लूणो राव जैतसी
राती घाटी तपिया छाया
धिन कल्याण रायसी दळपत
सूरा करणा सुजस सँपाया

जय जगळ धर बादसाह रा
गैरा धुरिया ढोल निसाण
'गई भोम रो बाहडू नामी
भीवराज राठोड सुजाण

राठोड़ॉं रजपूती राखी
राजस्थानी आण
भीव रो तुनतुनियो बाजै

रणचक्र राठोड तापिया
निरप अनूप सरूप सुजाण
जोरावर गज राजसिघ सा
भल परगटिया बीका भाण
सुभ प्रगट्या प्रताप सूरतसी
रतनसिघ सरदार सुजाण
डूॅंग गग सादूळ सवाया
करणी राज बडैरॉ माण

राठोड़ॉं रजपूती राखी
राजस्थानी आण
भीव रो तुनतुनियो बाजै

रायसिघ जूनो गढ घाल्यो
सुभ बीकाणै भलो चिणायो
गग निरप खाखी बावै आ
लालमलाल लालगढ छायो
गढ मे बीको सैर मे कीको
न्याय धरम धूॅंसो बजवायो
जनखा जुलमी दसला पजो
देय मठोठी तोड़ बणायो

राठोड़ॉं रजपूती राखी
राजस्थानी आण
भीव रो तुनतुनियो बाजै
सिरै नॉंव बीकाणो जग मे
राठोड़ॉं घण माण बधायो

मॉं करणी री परघा मॉंही
रैया विजेता सुजस सवायो
लतुआ सोटी भॉंग नॉंखदी
किरचो किरचो तोड़ बगायो
पण लख ऑंख्यॉं खोल सरूपो
तोड़मोड़ म्हे बिस्तो बणायो

राठोडॉ रजपूती राखी
राजस्थानी आण
भीव रो तुनतुनियो बाजै

राती घाटी री माटी री
महक सदा जनता सरसाई
सुख सॉयत भाईचारै री
प्रेम भावना नित पसराई

जात पॉत रो झोड़ नही हो
कारू री नीती सुखदाई
सगळा करता काम आपरा
भद नही हो राती पाई

राठोड़ॉ रजपूती राखी
राजस्थानी आण
भीव रो तुनतुनियो बाजै

गीत

मायड भासा मोवणी

बीकाणै विश्वाम्बिका
ऑगण पड्यो निढाळ
डावो पग धचकॉचतों
चालूं घण बेहाळ

मुरगढहाळो गेडियो
लियो हाथ मे धार
मॉचै पडियॉ मॉडियो
लिखियो ग्रथ लिखार

कलम कोरणी कोरियो
सत री स्याही सार
चरित ऊजळो मॉडियो
झॉक्यो आरपार

मायड़ भासा मोवणी
मन मरजादा पाळ
गई भोम रो बाहडू
भण्यो भीव भुरजाळ

राती घाटी रो सुजस
जैतसिंघ रा पूत
गढ गणेस बीकाण रो
राठोड़ो रजपूत

ग्रथ इकीसो ओपतो
प्रबधकाव्य परवॉण
ख्यात बात इतिहास मे
पळकै घण परमाण

छपणै री बेळा हुई
समेसार सनमॉण
सुणै गीतड़ा नर कोई
सरब गुणॉ री खॉण

सवत दो हजार चौपनवैं
सुद आसोज दसूं सनिवार
विजया दसमी नै सुभ घडियॉ
भण गुण सावळ सोच विचार

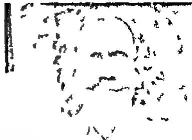
सत साहित रो सुजस पारखी
मायड़ भासा राखै जॉण
घर आ सुणिया भीव गीतड़ा
कवियाॅ सगती दान सुजॉण

भीमपॉडिया बीकानेर
11 10 97

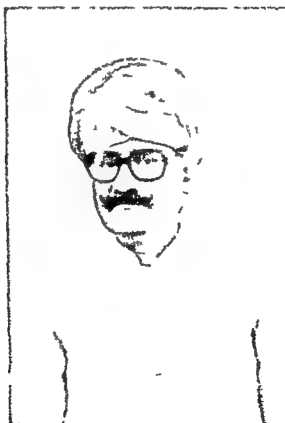
परिशिष्ट



भीवराजोत बीका राठौड़ श्री नवलसिंहजी
पुत्र श्री जेसराजसिंहजी राठौड़ पौत्र
श्री खुमाणसिहजी राठौड़ गाँव धलकोई
जन्म सन् 1898 मार्च 30
स्व 20 नवम्बर 1989



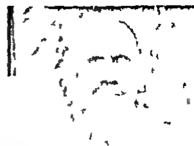
ठा श्री हरीसिहजी बीका राठौड़ भीवराजोत
पुत्र ठा श्री नवळसिहजी बीका राठौड़ भीवराजो
(धलकोई) (जन्म 18 जनवरी 1925)



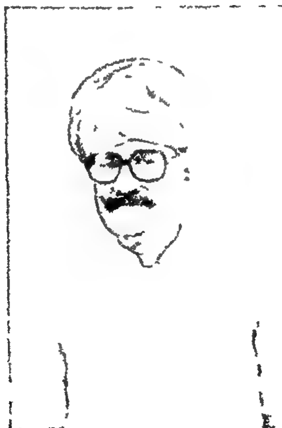
ठा श्री सूरजभानसिंहजी बीका राठौड़ भीवराजोत पुत्र ठा श्री नवलसिंहजी
बीका राठौड़ भीवराजोत जन्म 7 फरवरी 1930
एम ए बी एड उप निदेशक शिक्षा विभाग राजस्थान (सेवा निवृत)



भीवराजोत बीका राठौड़ श्री नवलसिहजी
पुत्र श्री जेसराजसिंहजी राठौड़ पौत्र
श्री खुमाणसिहजी राठौड़ गाँव चलकोई
जन्म सन् 1898 मार्च 30
स्व 20 नवम्बर 1989



ठा श्री हरीसिंहजी बीका राठौड़ [illegible]
पुत्र ठा श्री नवलसिंहजी बीका राठौड़ [illegible]
(चलकोई)(जन्म 18 जनवरी 1925)



[illegible]
[illegible] 1970
[illegible]



श्रीमती शुभकँवर पड़िहार (राणी मडोर)
पत्नी श्री सूरजमाल सिंहजी राठौड़
(पुत्री ले कर्नल ठाकुर किशनसिहजी पड़िहार
बेळासर मास्टर ऑफ दी हाउस होल्ड महाराजा बीकानेर)

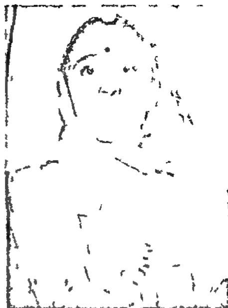


ले कर्नल ठाकुर श्री किशनसिहजी पड़िहार (बेळासर
मास्टर ऑफ दी हाउस होल्ड महाराजा बीकानेर

कु पल्लवी निरवाण पुत्री श्री सुरेन्द्रसिहजी निरवाण



ले. कर्नल महेन्द्रसिह राठौड़
पुत्र श्री सूरजमाल सिह राठौड़
एम एस सी जुलोजी
एम एस सी डिफेंस(वलिंगटन)
जन्म 2 मार्च 1956



श्रीमती मजू शेखावत
पत्नी कर्नल श्री महेन्द्रसिह राठौड़
(पुत्रवधू ठा श्रीसूरजमालसिह राठौड़)
जन्म 21 दिसम्बर 1959



5 [illegible] ठा सूर[illegible]
[illegible] ([illegible]) [illegible]
(जन्म 25 [illegible] 19[illegible])



भँवर श्री विक्रमसिंह राठौड़ (पौत्र ठा सूरजमालसिंह राठौड़)
जन्म 10 दिसम्बर 1983
कु वदना राठौड़(पौत्री ठा सूरजमाल सिंह राठौड़)
जन्म 29 सितम्बर 1985



श्री कुबेर सिंह राठौड
(चित्रकार) बीकानेर



कु भुवनेश्वरी राठौड़ (पौत्री ठा सूरजमाल सिंह राठौड़)
जन्म 24 दिसम्बर 1992
भँ अनिरुद्ध सिंह राठौड़ (पौत्र ठा सूरजमालसिंह राठौड़)
जन्म 6 अप्रैल 1994



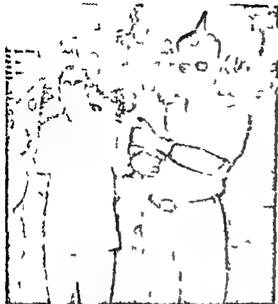
श्रीमती निशि राठौड़ पत्नी श्री सुरेन्द्र सिंहजी निरवाण (अळसीसर) (ठा सूरजमालसिंह राठौड़ की पुत्री)



श्रीसुरेन्द्रसिंह पुत्र श्रीनारायणसिंहजी निरवाण (अळसीसर) (ठा सूरजमालसिंह राठौड़ की पुत्री निशि राठौड़ के पति)



श्रीमती निशि राठौड़ पत्नी श्री सुरेन्द्रसिंहजी [illegible] (पुत्री ठाकुर श्री सूरज[illegible]सिंहजी [illegible]) अपनी पुत्री [illegible] [illegible] और पुत्र [illegible]न्द्र सिंह निर[illegible] [illegible]



कु भोपालसिह राठौड़ (पुत्र ठा हरीसिहजी राठौड़) अपने बहनोई श्री कुमेरसिहजी शेखावत (गौंगियासर) के साथ



श्रीमती शिवकँवर पत्नी श्री जीतेन्द्रसिह राठौड़ पुत्रवधू ठा श्री हरीसिंहजी राठौड़



पुत्र जन्मोत्सव पर ले कर्नल महेन्द्रसिह राठौड (पुत्र ठा सूरजमालसिहजी राठौड़) यूनिस डान व अन्य परिजनो के साथ।



शिक्षाविद् डॉ वी वी जान (निदेशक महाविद्यालय शिक्षा) एव अध्यक्ष माध्यमिक शिक्षा वोर्ड राजस्थान के पुरस्कार प्राप्त करते ठा श्री सूरजमाल सिह राठौड़



राजस्थान के राज्यपाल श्री रघुकुल तिलक ठा सूरजमाल सिह राठौड़ राज्य पुरस्कार (शिक्षक दिवस पर) प्रदान करते हुए।



राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त शिक्षाविद श्री रामप्रसाद जी सहल ठा श्री सूरजमालसिंह राठौड़ को आशीर्वाद सम्मान दे रहे हैं।



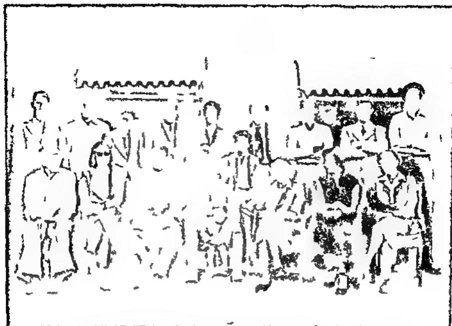
आकाशवाणी रिकोर्डिंग दिनाक 26 जनवरी 1988 ठा श्री सूरजमालसिंह राठौड़ आकाशवाणी बीकानेर उद्घोषक श्री चंचल हर्ष के साथ



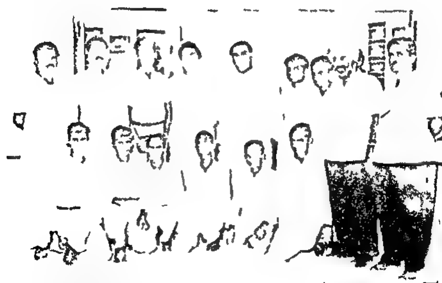
शिक्षा मत्री राजस्थान सरकार श्री ललित किशोर चतुर्वेदी ठा सूरजमा न सिह राठौड़ का शिक्षक दिवस समारोह मे सम्मान कर रहे है।



पूर्व बीकानेर नगर विधायक श्री गोपाल जोशी जिला शिक्षा अधिकारी श्री भीखमचन्दजी जैन के साथ ठा सूरजमालसिह राठौड प्रसन्न मुद्रा मे।

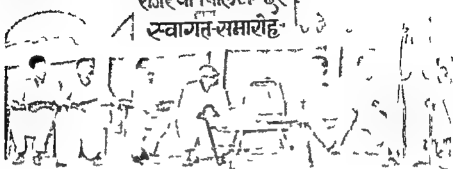


रगमहल खुदाई अभियान मे श्री हनारीड के साथ ठा सूरजमालसिह राठौड़ तथा अन्य श्री वीरेन्द्र सक्सेना (दैनिक युगपक्ष बीकानेर) ठाकुर इन्द्रसिहजी (राजपुरा) डॉ लक्ष्मणसिह मेजर रघुनाथ सिह आदि-आदि।



ठा सूरज्मालसिह राठौड़ फोर्ट स्कूल बीकानेर वार्षिक समारोह मे पूर्व बीकानेर महाराजा सॉसद डॉ करणीसिहजी व महाराज कुमार नरेन्द्रसिहजी तथा अन्य सरदार मक्खनसिहजी श्री दाऊदयाल शर्मा ऋषिकेश शर्मा आदि आदि के साथ।

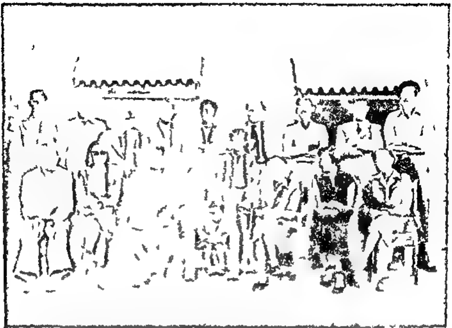




राजस्थान बाल मदिर स्वागत समारोह मे राज्य मत्री दामोदर आचार्य सार्वजनिक निर्माण मत्री श्री बी डी कल्ला आदि आदि के साथ ठा श्री सूरजमाल सिह राठोड (जि शि अ बीकानेर)



ठा श्री सूरजमालसिह राठौड़ उपशिक्षा निदेशक सादुल स्पोर्टस स्कूल बीकानेर बीका हाउस उद्घाटन समारोह मे ब्रिगेडियर बाघसिह कु लक्ष्मणसिह एव ठाकुर अजीतसिह (बेलासर) साथ म है।



रगमहल खुदाई अभिया ा मे श्री हन्नारीड के साथ ठा सूरजमालसिह राठौड़ तथा अन्य श्री वीरेन्द्र सक्सेना (दैनिक युगपक्ष बीकानेर) ठाकुर इन्द्रसिहजी (राजपुरा) डॉ लक्ष्मणसिह मेजर रघुनाथ सिह आदि आदि।



ठा सूरजमालसिह राठौड फोर्ट स्कूल बीकानेर वार्षिक समारोह मे पूर्व बीकानेर महाराजा सॉसद डॉ करणीसिहजी व महाराज कुमार नरेन्द्रसिहजी तथा अन्य सरदार मक्खनसिहजी श्री दाऊदयाल शर्मा ऋषिकेश शर्मा आदि आदि के साथ।





राजस्थान बाल मदिर स्वागत समारोह मे राज्य मत्री दामोदर आचार्य सार्वजनिक
निर्माण मत्री श्री बी डी कल्ला आदि-आदि के साथ ठा श्री सूरजमाल सिह राठोड
(जि शि अ बीकानेर)



ठा श्री सूरजमालसिह राठौड उपशिक्षा निदेशक सादुल स्पोर्टस स्कूल बीकानेर
बीका हाउस उद्घाटन समारोह मे ब्रिगेडियर बाघसिह कु लक्ष्मणसिह एव ठाकुर
अजीतसिह (बेलासर) साथ म है।



ठा सूरजमालसिह राठौड़ राव बीकाजी के गढगणेश (राती घाटी लक्ष्मीनाथ मदिर) की प्रोल के आगे ले कर्नल गाढसिह श्री लाजपतभाग धाभाई श्री मातीलाल पुरोहित आदि साथ म हे।



पूर्व बीकानेर महाराजा सासद डॉ करणीसिह जी के साथ नागरी भडार बीकानेर के समारोह मे ठा सूरजमालसिह राठौड़।



ठा सूरजमालसिह राठौड़ बीकानेर स्थापना दिवस समारोह म जिल
श्री सुबोधजी अग्रवाल को पुष्पाजली मच की ओर ले जा रहे है। सा
श्री राजेन्द्रसिहजी शेखावत पर्यटन अधिकारी बीकानेर।



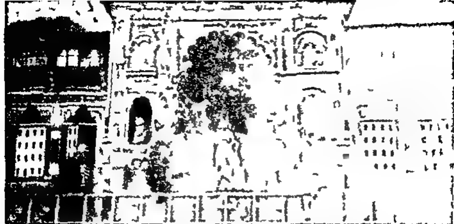
ठा सूरजमालसिह राठौड़ श्री मोतीलाल पुरोहित आदि के साथ म बीकानेर
स्थापना दिवस समारोह मे जिला कलेक्टर श्री सुबोध अग्रवाल की अगवानी
स्वागत करते हुए।



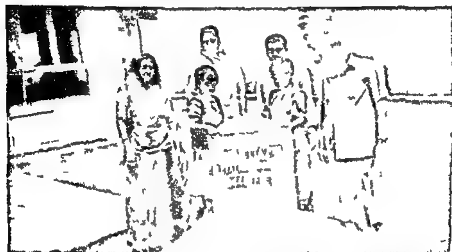
ठा सूरजमालसिह राठौड़ सपरिवार गगोत्री मे (यात्रा पर)



ठा सूरजमालसिह राठौड़ परिवार सहित जमुनोत्री पर



ठा सूरजमालसिह राठौड़ सपरिवार बद्रिका धाम मदिर के सिहद्वार पर।



ठा सूरजमालसिह राठोड़ परिवार सहित ऊटी पर यात्रा मे।



ठा सूरजमालसिह राठौड़ बीकानेर जूनागढ मे गणगौर मेले के अवसर पर साथ है महाराजा प्रतापसिहजी ठा कालूसिहजी ठा हनुमतसिहजी और ठा आनन्दसिहजी (रामपुर)



ठा सूरजभालसिह राठौड सपरिवार गगोनी म (यात्रा पर)



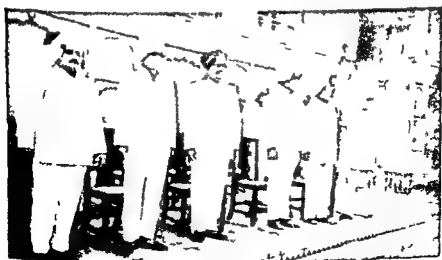
ठा सूरजमालसिह राठौड़ परिवार सहित जमुनोत्री पर



[illegible]



ठा सूरजमालसिह राठौड परिवार सहित ऊटी पर यात्रा मे।



ठा सूरजमालसिह राठौड बीकानेर जूनागढ मे गणगौर मेले के अवसर पर साथ है
महाराजा प्रतापसिहजी ठा कालूसिहजी ठा हनुमतसिहजी और
ठा आनन्दसिहजी (रामपुर)

बीकानेर जूनागढ मे गणगौर मेले पर महाराजा रायसिंह बैंड सलामी देते हुए।

[illegible] बीकानेर स्थापना दिवस समारोह में श्री [illegible]
[illegible] श्री प्रतापसिंह [illegible] और
[illegible] के अभिनन्दन अवसर पर।



वीर विरुदावली दो शब्द

सूरजमालसिंह राठौड

प्रात स्मरणीय वीर श्री भीवराजजी राठौड़ (गई भोम के बाहड़ू) बीकानेर के सुनामधन्य राठौड़ राव श्री जैतसी के सुपुत्र थे। वे राव श्री कल्याण के अनुज थे। उनका जन्म सोढी राणी कश्मीरदे की कोख से हुआ था बचपन से ही श्री भीवराजजी मे वीरता और शौर्य के गुण प्रकट होने लगे थे। वे शस्त्र चलाने मे अत्यधिक निपुण थे। तेजस्विता तो उनमे कूट-कूट कर भरी हुई थी। श्री भीवराजजी अपने पिता श्री राव जैतसी के साथ रहकर शस्त्र चलाने की शिक्षा-दीक्षा लेकर निपुण हुए। घुड़ सवारी मे तो वे अद्वितीय पारगत थे। साथ ही वे घोड़ो के कुशल पारखी थे। उनका बल विक्रम साहस जुझारूपन शस्त्र चलाने की कला और युद्ध कौशल सदैव अनुपम और अनुकरणीय था। उनका शौर्य से दमकता स्वरूप भी चिताकर्षक था। उनके शरीर का गठन और दमकता हुआ स्वरूप अत्यधिक प्रभावशाली और प्रेरणादायक था। महान शूरवीर पिता श्री जैतसी की सगत से युद्ध मे शूरवीरता दिखाने के प्रति चाव अदम्य उत्साह और सुयश प्राप्ति की अनुकरणीय लगन-लालसा सदैव रही। परिणाम स्वरूप सुरक्षा पक्ति मे रहकर सदा ही युद्धो मे विजय श्री प्राप्त की।

पिताश्री राव जैतसी ने कुशल कूटनीति-राजनीति और युद्ध कौशल से भारी भरकम मुगल सेना और मुगल सेना के क्रूर-नायक कामराँ को परास्त कर बीकानेर रातीघाटी से भगाकर ऐतिहासिक विजय श्री प्राप्त की जिसका विजय दिवस पर्व आज भी मनाया जाना अत्यधिक प्रासगिक है। ई सन् 1534 मे 26 अक्टूबर को अर्द्धरात्रि पर्यत आक्रामक मुगल सेना और उसके नायक शाह कामराँ को रातीघाटी के गणेशगढ़ बीकानेर मे अचानक युद्ध कौशल से जोरदार आक्रमण कर जान बचाकर भागने को मजबूर किया वह ख्यात बात इतिहास मे आज भी विश्व विख्यात है। उन्ही वीरवर राव श्री जैतसी के सुपुत्र भीवराजजी के अदम्य वीरता साहस-शौर्य की गुण-गरिमा की चर्चाएँ सुनकर दिल्ली का शाह शेरशाह प्रभावित हुआ और उन्हे दिल्ली आमत्रित कर अपने प्रमुख सहयोगी के रूप म स्थापित किया।

एक बार मतिभ्रम होकर जोधुपर राव मालदव ने बीकानेर पर भारी भरकम सेना लेकर आक्रमण किया और राव जैतसी को मरवाकर बीकानेर रातीघाटी के किले



बीकानेर जूनागढ मे गणगौर मेले पर महाराजा रायसिह बैड सलामी देते हुए।

ठा सूरजमालसिह राठौड बीकानेर स्थापना दिवस समारोह म श्री मोतीलाल
पुरोहित श्री चन्द्रदानजी चारण तथा सम्मान प्राप्त श्री प्रतापसिह घटेल और
श्री मुकुनसिह राठौड के अभिनदन अवसर पर।



वीर विरुदावली दो शव्द

सूरजमालसिह राठौड

प्रात स्मरणीय वीर श्री भीवराजजी राठौड़ (गई भोम के बाहडू) बीकानेर के सुनामधन्य राठौड़ राव श्री जैतसी के सुपुत्र थे। वे राव श्री कल्याण के अनुज थे। उनका जन्म सोढी राणी कश्मीरदे की कोख से हुआ था बचपन से ही श्री भीवराजजी मे वीरता और शौर्य के गुण प्रक्ट होने लगे थे। वे शस्त्र चलाने मे अत्यधिक निपुण थे। तेजस्विता तो उनमे कूट-कूट कर भरी हुई थी। श्री भीवराजजी अपने पिता श्री राव जैतसी के साथ रहकर शस्त्र चलाने की शिक्षा-दीक्षा लेकर निपुण हुए। घुड़ सवारी मे तो वे अद्वितीय पारगत थे। साथ ही वे घोड़ो के कुशल पारखी थे। उनका बल विक्रम साहस जुझारूपन शस्त्र चलाने की कला और युद्ध कौशल सदैव अनुपम और अनुकरणीय था। उनका शौर्य से दमकता स्वरूप भी चिताकर्षक था। उनके शरीर का गठन और दमकता हुआ स्वरूप अत्यधिक प्रभावशाली और प्रेरणादायक था। महान शूरवीर पिता श्री जैतसी की सगत से युद्ध मे शूरवीरता दिखाने के प्रति चाव अदम्य उत्साह और सुयश प्राप्ति की अनुकरणीय लगन-लालसा सदैव रही। परिणाम स्वरूप सुरक्षा पक्ति मे रहकर सदा ही युद्धो मे विजय श्री प्राप्त की।

पिताश्री राव जैतसी ने कुशल कूटनीति-राजनीति और युद्ध कौशल से भारी भरकम मुगल सेना और मुगल सेना के क्रूर-नायक कामरॉ को परास्त कर बीकानेर रातीघाटी से भगाकर ऐतिहासिक विजय श्री प्राप्त की जिसका विजय दिवस पर्व आज भी मनाया जाना अत्यधिक प्रासगिक है। ई सन् 1534 म 26 अक्टूबर को अर्द्धरात्रि पर्यत आक्रामक मुगल सेना और उसके नायक शाह कामरॉ को रातीघाटी के गणेशगढ बीकानेर मे अचानक युद्ध कौशल से जोरदार आक्रमण कर जान बचाकर भागने को मजबूर किया वह ख्यात बात इतिहास मे आज भी विश्व विख्यात है। उन्ही वीरवर राव श्री जैतसी के सुपुत्र भीवराजजी के अदम्य वीरता साहस-शौर्य की गुण-गरिमा की चर्चाएँ सुनकर दिल्ली का शाह शेरशाह प्रभावित हुआ और उन्हे दिल्ली आमत्रित कर अपने प्रमुख सहयोगी के रूप मे स्थापित किया।

एक बार मतिभ्रम होकर जोधुपर राव मालदेव ने बीकानेर पर भारी भरकम सेना लेकर आक्रमण किया और राव जैतसी को मरवाकर बीकानेर रातीघाटी के किले

गणेशगढ़ पर कब्जा कर लिया तो श्री भीवराजजी के प्रभाव और सुप्रयत्नो से ही दिल्ली शाह शेरशाह सूरी की सहायता से जोधपुर पर आक्रमण कर—मालदेव को परास्त कर—मान भगाकर बीकानेर का खोया हुआ राज्य बीकानेर राज्य के उत्तराधिकारी बड़े भाई राव श्री कल्याणमल को वापिस दिलाया—परिणाम स्वरूप इसी अदम्य उत्साह और शौर्य की प्रतिष्ठा म अनुज श्री भीवराज राठौड़ को गई भोम रो वाहड़ू विरुद से सम्मानित किया था। तथा उन्हे भीवसर का बड़ा ठिकाना भेट कर सम्मानित किया गया था।

यही नही श्री भीवराजजी ने मेड़ता के राव वीरम के जोधपुरी मालदेव द्वारा हड़पे राज को भी वापिस दिलाकर वीरम को मेड़ता को पुन सस्थापित करने मे सहायता दी थी। परिणाम स्वरूप राव वीरम ने भी श्री भीवराजजी को गई भोम रो वाहड़ू से ससम्मान सबोधित कर कृतज्ञता ज्ञापित की थी। उनके सम्मान म वीरम ने अनेक दोहे-कविता भेट कर सम्मानित किया तथा विरुद बढ़ाया।

किसी कवि ने राठौड़ो की प्रशसा मे लिखा है कि राठौड़ो ने मरुभूमि को अपने खून से सीचकर और वन सम्पदा को भी पानी के अभाव म रक्त-पसीने से सीचकर हरा भरा रखकर पर्यावरण को स्वास्थ्यकर हरा भरा सरसब्ज रखा। खून पर खून सीचकर-माथा देकर राठौड़ो ने सतत आजादी रखने का भरपूर प्रयत्न किया—यही उनका कमधजपन का विरुद था। जैसे —

मुट्ठी भर सूकी थकॉ नीसर जावै दौड़।
रगत सिचोई जद रही रेती धर राठौड़।।

अर्थात सूखी बालू रेत को मुट्ठी म बद रखना चाहे तो वह मुट्ठी से तुरत ही बाहर निकल भागती है परन्तु उसे रुधिर से गीला कर रखा जाये तो वह मुट्ठी म ही बद रह जाती है। इसी प्रकार राव श्री जैतसी और उनके पुत्र श्री भीवराजजी जैसे राठौड़ो ने अपने खून से सीच कर मरुधरा बीकानेर को बनाये रखने को सदा प्रयत्नशील रहकर स्वतत्र बनाये रखा। कभी भी गुलामी की बेड़ियो मे जकड़ने नही दिया—हर हालत मे आक्राताओं को मारकर खदेड़ दिया। स्वस्थ पर्यावरण की रक्षा के लिये अनिवार्यत उपयोगी वन सम्पदा को वृक्ष लगाओ का नारा देकर ही नही अपितु विधि सम्मत जोरदार व्यवस्था के कदम उठाकर वन-सरक्षण की व्यवस्था करते थे। हरे-भरे वृक्ष काटकर पर्यावरण को क्षति पहुँचाने वालो को कठोर दड देते थे। राव श्रीजैतसी और उनके पुत्रो तथा वशजो ने राठौडी आन मान मर्यादा का पालन कर अपने गाढे रक्त-पसीने से सीचकर जगलो को कायम रखा 'ओरण स्थापित कर व चारागाह सरक्षित कर पर्यावरण की रक्षा की जिसके अनेक अभिलेखीय दस्तावेज सुरक्षित एव सरक्षित सकलित है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है —

जड़ कद जमती रेत मे जळ ऊँडा धर भूख
राठौड़ॉ कर राखिया रगतॉ हरिया रूँख

अर्थात वालू मिट्टी म बिनों पानी क पेड़ कैसे लग-टिक सकते ह जहाँ पानी बहुत ही गहरा हे और भू-भाग पर-धरा पर भूख-तिस हे-गरीवी हे ऐसी स्थिति मे शूरवीर राठौड़ो ने ही अपने रक्त-पसीने से सीचकर वन सम्पदा को हरा-भरा रख जो कि सम्पूर्ण प्राणीवर्ग जीवमात्र के लिए प्राण रक्षक एव जीवन दायक है।

परमवीर श्री भीवराजजी राठौड़ और उनके वशज समस्त भारत के नामी महानगरो कलकत्ता मुबई मद्रास दिल्ली जयपुर जोधपुर कोटा बीकानेर मे कार्यरत है तथा पर्याप्त सख्या मे सेना पुलिस न्यायिकसेवा शिक्षा जगत चिकित्सा क्षेत्र राजस्व प्रशासन लेखा सेवा कृषि कार्य ही नही अपितु अनेक लब्ध प्रतिष्ठित व्यावसायिक-व्यापारिक प्रतिष्ठाना मे उच्चतम पदा पर स्थापित-कार्यरत रहे है और आज भी सेवा सलग्न कार्यरत है। उक्त श्री भीवराजजी राठौड़ भीवराजोत बीका राठौड के बीकानेर व बीकानेर के चूरू जिले के विभिन्न महत्वपूर्ण बडे धीगड ठिकानो-गॉवो मे बाहुल्यता से आवाद है। विशेष कर बारह गॉवो—(1) राजपुरा (2) अमरपुरा (3) चलकोई (4) मुवाड़ी (5) ढीगी (6) हड़ियाल (7) कॉजण (8) गिनडी (9) विलियॉ (10) नाथपुरा (11) मूँदीटीवा (12) मूँदी ताल। इनके अलावा कुछेक घर-गुवाडी गॉव बालेसर और आसल खेड़ी मे भी आवाद है।

पूर्व मे राजपुरा ठिकाने के अतर्गत ताजीम के 25 गॉव थे जिसमे से उपर्युक्त 12 गॉव तो भीवराजोत बीका राठौड़ा के जागीर के रहे थे। नामी ख्यात लेखक श्रीदयालदास की ख्यात मे श्री भीवराजजी राठौड की वीरता और उनको दिये गये गई भोम रो बाहडू विरुद का बडा अनूठा-सजीव उल्लेख-बखॉण किया गया है। तथा उन्हे भीवसर का नामी ठिकाणा भेट स्वरूप दिया गया। बाद मे राजपुरा की 25 गॉवो सहित ताजीम दी गई। निश्चय ही श्री भीवराजजी राठौड के वशज शूरवीर भीवराजोत बीका राठौड़ो ने समय समय पर हर सकट की घडियो मे युद्धो मे माथो का मोल चुका कर सिरकटी-सहयोग दिया तथा बीकानेर राज्य को अक्षुण्य बनाये रखने मे हर प्रकार के बलिदान भेट कर सराहनीय सेवाये देते रहे जिसके यत्र तत्र उल्लेख अभिलेखो मे अकित है व ख्यात-बात-इतिहास मे वर्णित है। नामी ख्यात लेखक श्री दयालदास कृत— दयालदास री ख्यात के पृष्ठ 76 से 78 की वचनका मे गई भोम रो बाहडू श्री भीवराजजी राठौड की स्पष्ट विगत-बखॉण का दस्तावेजी उल्लेख-वर्णन दृष्टव्य है—तथा मेडतै के श्री वीरम का कथ्य और उनकी वीरता की प्रशसा मे कहे दोहे प्रकाशित है। यथा—

निश्चय ही नामी ख्यात लेखक श्री दयालदास की ख्यात मे राव श्री जैतसी के पुत्र श्री भीवराजजी की वीरता शौर्य बलिदान एव आकर्षक व्यक्तित्व के बारे म सही बखॉण हुआ है।

—दयालदासरी ख्यात

गई भूमिका वाहडू

राव जैतसीजी पाट राव कलियाण दाने सरु काई स्वर वस का भाण। भीवराज दिलेस्वर सेरकू अपणी मदत लाया राव मालदेकू भगाय गई भोम के वाहडू व्रद पाया। पीछै राव कल्याणसिघजी सीख माग विक्रमपुर आया नै वीरमदे दूदावत मेडता पाया।

पीछै राव कल्याणसिघजी गढ दाखल हुवा। श्री करनीजी री जात करण देसणोक पधारिया। पीछै पातसाहजी जोधपुर म थाणा राख दिल्ली पधारिया नै भीवराजजी वीरमदेजी पातसाहजीरै सागै आया। पीछै पातसाहजी दोवाई सिरदारा नू सीख दीवी। तद वीरमदेजी भीवराजजीनू मेड़तै ले आया नै वडौ जावतौ किग्रौ। अरु क्यौ बाबा तू तौ दोऊ गई भोम रो वाहडू हुवौ नै आ धरती थारा पगासू आयी। दूहो वीरमदेजी कहै—

दूहा

(१)
जननी धिन[1] जे जन्मिया।
भीमाजण कुल भाण[2]।।
माल भजाड़े[3] मेड़तै।
अण-भग फेरी आण[4]।।

(२)
सूर खाच सुलताण।
भीम चाढ गेडी भली।।
मालै मळिया माण।
वीरम धरती वाळता[5]।।

(३)
जद वीरमदे जोय।
भीवराज कहियौ भला।।
वाघा वसुधा खोय।
वसुधा वाळी वीरमै।।

(४)
जैत-सुतन खग झेल[6]।
भीम विखौ[7] कीधौ भलौ।।
माल विखै दिस मेल।
विखौ गमायौ वीरमा।

(५)
माई अेहा पूत जिण[1]।
जेहा भीव नरेस।।
सूजा समहर साझिया।
दूजा समपे देस।।

इण तरै वीरमदेजीरा कहिया दूहा घणा है।

पीछै भीवराजजीनू वीरमदेजी कित्ता-अेक दिन मेड़तै राखिया। पीछै हाथी एक घोड़ा च्यार कपड़ो आछौ देय नै विदा किया। सू अै बीकानेर आय राव कल्याणसिघजीरै पावा लागा। तद रावजी श्रीकल्याणसिघजी फुरमायौ जो भीवराज

1 धन्य। 2 सूर्य। 3 भगाकर। 4 आन दुहाई। 5 लौटाते हुए पुन प्राप्त करते हुए। 6 पकड़कर। 7 विपत्ति।
1 उत्पन्न कर। 2 विरुद यश।

औ बीकानेर थारी भुजावासू आयौ नै था जिसा भाई हुवै तद गयी धकी धरती घेरै। अरु तू गई भोम रो बाहडू हुवौ। पीछै रावजी भीवराजजीरौ ठिकाणौ भीवसर बाधियौ किता अेक गावासू। जिण दिनसू भीवराजोतारै गई भोमरै बाहडू रौ व्रद[2] है।

इस प्रकार लब्ध प्रतिष्ठित ऐतिहासिक परम वीर प्रतापी सुनामधन्य वीरवर बीकानेर राव श्री जैतसी के सुपुत्र शूरवीर श्री भीवराजजी राठौड़ प्रवर गई भोम रो बाहडू की वीरता के सबध मे विशेष विरुद बखॉण महान उपलब्धि है। उनका अनूठा एव अद्वितीय शौर्य अनुकरणीय है। ऐसे राजपूती शौर्य के महाबली देशभक्त कुशल प्रखर बुद्धि कौशल के धनी-मानी त्याग-बलिदान के प्रेरक व्यक्तित्व को शत्-शत् नमन है।

बीकानेर
दि 15 अगस्त 1997
चलकोई हाउस
1206 गजनेर रोड बीकानेर (राजस्थान)

सूरजमालसिह राठौड़ (उपनिदेशक)
आर ई एस (सेवा निवृत)
(सूरजमालसिह राठौड़ आत्मज
ठा श्री नवलसिहजी चलकोई)



राठौडो की भाव भूमिका

(ठा प्रतापसिंह घटेल)

ख्यात यात इतिहास के उल्लेखा-वर्णनना से ज्ञात हुआ है—

राठौड़ वश का गोत्र—कश्यप वेद—सामवेद गुरु—शुक्राचार्य कुलदेवी—विध्यवासिनी नागणेचदेवी करणीमात (ये सव दुर्गा के ही पर्यायवाची हैं) वृक्ष—नीम पक्षी—वाज व चीलक विरुद—रणयका व कमधज है।

राठौड़ वास्तव मे रघुवशी भगवान श्री राम के द्वितीय पुत्र कुश के वशज हैं। इस वश का प्राचीन नाम राष्ट्रकूट है। राष्ट्रकूट का प्राकृत रूप रट्ठऊड होता है जिससे राठऊड़ या राठौड़ शब्द बनता है। राष्ट्रकूट के स्थान पर कही कही राष्ट्रवर्य शब्द मिलता है जिससे राठवड़ शब्द बना है। राष्ट्रकूट और राष्ट्रवर्य दोनो शब्दो का एक ही अर्थ है। राष्ट्रकूट का अर्थ राष्ट्र जाति या वश का शिरोमणी है। राष्ट्रवर्य का अर्थ राष्ट्रजाति अथवा वश मे श्रेष्ठ है।

भगवान श्री राम के पुत्र कुश के वशज राजा अमोघवर्ष ने दक्षिण म जाकर महाराज्य स्थापित किया। वहाँ उनकी राजधानी मान्यखेट थी। वहाँ से एक शाखा मध्य भारत मे आयी जिससे इनके राज्य को महाराष्ट्र कहा जाने लगा। यही से यह काठियावाड़ बदायूँ व कन्नौज मे फैल गये। बदायूँ से राव सीहाजी सन् 1243 मे पाली आये और पल्लीवाल ब्राह्मणो की सहायता से मारवाड़ राज्य की स्थापना की।

राठोड़ा की वीरता विश्व विख्यात है। जैसे —

बळहट बका देवड़ा करतब बका गौड़।
हाडा बका गाढ मे रणबका राठौड़।।

अथवा

व्रज देसॉ चन्दन बड़ा मेरु पहाड़ॉ मोड़।
गरुड़ खगॉ लका गढ़ॉ राजकुलॉ राठौड़।।

राव सीहाजी बदायूँ से मारवाड़ के पाली नगर मे विक्रम स 1300 (ई सन् 1243) मे आये थे। यह कुँवर सेतराम राठौड के पुत्र थे। गाहड़वाल—राठोडो की शाखा नही है। उनके पूर्वजो के ताम्रपत्रो और शिलालेखो मे जयचन्द और उसके पूर्वजा

को कही भी राठौड नही लिखा है किन्तु गाहड़वाल (गाहरवाल) ही लिखा है। इन ताम्रपत्रो एव शिलालेखो के आधार पर आधुनिक पुरातत्ववेत्ता भी जयचन्द को गाहड़वाल ही मानते है। राजा रायसिहजी (बीकानेर) की विक्रम सवत् 1650 की सस्कृत प्रशस्ति भाटो के कथानुसार है जो ठीक नही है।

(देखिये बीकानेर राज्य इतिहास (पहला भाग) पृष्ठ स 79 80)

राठौड़ो और गाहडवालो के आपस मे विवाह शादी होते है। यदि जयचन्द राठौड़ होता और गाहड़वाल राठौड़ा की शाखा होती तो आपस मे राठौडो और गाहड़वालो के शादी विवाह कतई नही होते। अत गाहडवाल वश राठौडो की शाखा नही है। क्योंकि राठौड़ सूर्यवशी है और गाहड़वाल चन्द्रवशी है। इन दोना वशो मे वैवाहिक सबध होते है। जाति भास्कर क्षत्रिय वश प्रकाश तथा क्षत्रिय वश भास्कर आदि ग्रथो मे यही मत स्वीकार किया गया है। डा बी ए स्मिथ ने भी इसी मत को माना है और जगदीशसिह गहलोत ने भी सुलझाने का अवश्य ही प्रयास किया है।

गाहड़वाल वश के सस्थापक चन्द्रदेव थे जिनकी राजधानी वाराणसी थी। *लगभग 1085 ई मे उसने कन्नौज पर अधिकार किया। चन्द्रदेव के बाद गोविन्दचन्द्र* और विजयचन्द्र भी इसी वश के शासक हुए। मध्यकाल मे गाहड़वाल वश का प्रसिद्ध राजा जयचन्द हुआ। पृथ्वीराज रासो के आधार पर जयचन्द गाहडवाल को देशद्रोही ठहराया गया किन्तु आधुनिक विद्वानो ने जयचन्द गाहडवाल को निष्कलक सिद्ध कर एक महान दानी नरेश सिद्ध किया है। इनके समय के आज तक 14 दानपत्र मिल चुके है जिनसे उसकी दानप्रियता का अच्छा प्रमाण मिलता है। रम्भा मजरी नाटक जिसका नायक जयचन्द है से भी उसके दानप्रिय होने के प्रमाण मिलते है। उसने चौहानो के विरुद्ध चन्देलो की सहायती की थी। सभवत इसी बात से चिढकर पृथ्वीराज रासो म जयचन्द पर देशद्रोह का आरोप लगाया गया था। ई सन् 1193 मे जयचन्द गाहड़वाल पर शहाबुद्दीन गौरी ने विजय प्राप्त कर उसे मौत के घाट उतार दिया था और जयचन्द के साथ ही गाहडवाल वश का राज्य समाप्त हो गया। इस वश के राजा मानिकचन्द के पुत्र आल्हदेव ने मुगलकाल मे पुन कान्तिथ राज्य (वर्तमान मे विजयपुर जिला मिर्जापुर) स्थापित किया। बाद म यह राज्य तीन भागो मे विभक्त हो गया।

उधर बदायूँ का शासक चन्द्र राठौड़ था जो चन्द्रदेव का समकालीन न होकर बहुत पहले हुआ था। चन्द्र राठौड़ के बाद उसके वशज क्रमश विग्रहपाल भुवनपाल और गोपाल राठौड़ हुए। गोपाल राठौड़ चन्द्र राठौड़ की चौथी पीढ़ी मे था जिससे ई सन् 1085 मे चन्द्रदेव गाहड़वाल ने कन्नौज छीन लिया और बदायूँ की जागीर देकर उसे अपना सामत बना लिया। गोपाल राठौड़ के तिमुनपाल तथा उसके बाद उसका छोटा भाई मदनपाल यहाँ का सामत रहा। मदनपाल की वि स 1176 (ई सन् ११९६) का एक शिलालेख गोडा (उत्तरप्रदेश) के सहठ महठ स्थान से मिलता है जिससे

उस समय का सामत होना प्रमाणित होता है। इस तरह कन्नौज और बदायूँ की अलग-अलग शाखाये है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण चन्दरदेव (गाहड़वाल) का वि स 1148 (ई सन् 1091) का दान पत्र है जो उसने अपनी इस विजय के उपलक्ष्य मे किया था।

अत स्पष्ट है कि वि स 1148 (ई सन् 1091) मे कन्नौज पर गहरवालो (गाहड़वालो) का राज्य स्थापित हो चुका था और राठौड़ बदायूँ के सामत थे। बदायूँ के सामत मदनपाल के वशज क्रमश जयचन्द हरिश्चन्द कुँवर सेतराम और राव सीहा थे। कन्नौज का जयचन्द गाहड़वाल और मदनपाल का पुत्र जयचन्द राठौड़ जो बदायूँ का सामत था—यह दोनो एक ही नाम के दो भिन्न-भिन्न व्यक्ति और भिन्न-भिन्न जाति के दो अलग-अलग व्यक्ति थे। चन्द्र राठौड़ के वशज कुँवर सेतराम के पुत्र राव सीहाजी ने ही ई सन् 1243 (वि स 1300) मे मारवाड़ राज्य की स्थापना की थी (देखिये पृष्ठ 238 240 राजपूत वशावली ठा ईश्वरसिंह मडाढ चेतना प्रकाशन दिल्ली) तथा (ऐतिहासिक लेखमाला पृष्ठ 51-54) इसी मत से सहमत होकर ओझाजी ने भी कहा है अब तक मै राठौड़ा और गहरवालो को एक ही वश मानता था और अब मैं निश्चयपूर्वक इन दोनो वशो को भिन्न मानता हूँ।

घटेल हाउस (पुरानी गिनानी) — (ठा प्रतापसिंह घटेल)
बीकानेर — आर पी एस (सेवा निवृत)

दि 15 अगस्त 1997

श्री सूर्यवंश

(संकलनकर्ता सूरजमालसिंह राठौड़)

श्री सूर्यवंश की उत्पत्ति महापुरुष सूर्य विवस्वान से मानी जाती है। ब्रह्माजी के पुत्र ऋषि मरीचि हुए और मरीचि के पुत्र कश्यप हुए। कश्यप की पत्नी अदिति के पुत्र सूर्य हुए जिन्हे विवस्वान भी कहा जाता है। विवस्वान के पुत्र महाराज मनुजी थे और महाराज मनुजी के बड़े पुत्र इक्ष्वाकु थे। महाराज मनुजी ने ही अयोध्या नगरी स्थापित कर बसाई थी।

पुराणो के अनुसार श्री सूर्यवंश की वंशावली इस प्रकार से प्राप्त होती है —

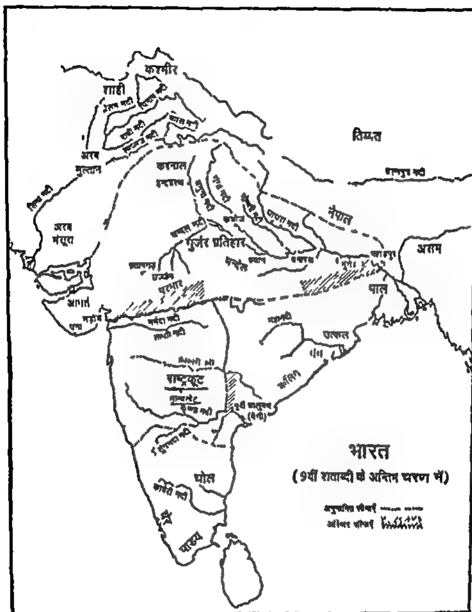
1 मनु
2 इक्ष्वाकु
3 विकुक्षि
4 परंजय
5 अनेना
6 पृथु
7 वृषदश्व
8 अन्ध
9 युवनाश्व
10 श्रावस्त
11 वृहदश्व
12 कुवलयाश्व
13 दृढाश्व
14 प्रमोद
15 हर्यश्व
16 निकुंभ
17 संहताश्व
18 कृशाश्व
19 प्रसेनजित
20 युवनाश्व
21 मान्धाता
22 पुरुकुत्स
23 त्रसदस्यु
24 सम्भूत
25 अनरण्य
26 त्रसदश्व
27 हर्यश्व
28 वसुमान
29 त्रिधन्वा
30 त्रयारुणी
31 सत्यव्रत
32 हरिश्चन्द्र
33 रौहिताश्व
34 हरित
35 चंचु
36 विजय
37 रुरुक
38 वृक
39 बाहु
40 सगर
41 असमंजस
42 अंशुमान
43 दिलीप
44 भागीरथ
45 श्रुत
46 नाभाग
47 अम्बरिष
48 सिंधुद्वीप
49 अयुतायु
50 ऋतुपर्ण
51 सर्वकाम
52 सुदास
53 सोदास
54 अश्मक
55 मूलक
56 दशरथ
57 एडविड
58 विश्वसह
59 दिलीप
60 रघु
61 अज
62 दशरथ
63 श्री रामचन्द्रजी
64 कुश
65 अतिथि
66 निषध

67 नल
68 नभ
69 पुण्डरीक
70 क्षेमधन्वा
71 देवानीक
72 अहीनगु
73 रूप
74 रूरू
75 पारियात्र
76 दल
77 छल
78 उक्थ
79 वज्रनाभ
80 शङ्खनाभ
81 व्युथिताश्व
82 विश्वसह
83 हरिण्याक्ष
84 पुष्य
85 ध्रुवशक्ति
86 सुदर्शन
87 अग्निवर्ण
88 शीघ्रन
89 मरू
90 प्रसुश्रुत
91 सुगन्धि
92 अमर्ष
93 महस्वान्
94 विश्रुतवान
95 वृहद्बल
96 वृहद्क्षेण
97 गुरुक्षेप
98 वत्स
99 वत्सव्यूह
100 प्रतिव्योम
101 दिवाकर
102 सहदेव
103 वृहदश्व
104 भानुरथ
105 सुप्रतीक
106 मरुदेव
107 सुनक्षत्र
108 किन्नर
109 अन्तरिक्ष
110 सुवर्ण
111 कृमित्रजित्
112 वृहद्राज
113 धर्मी
114 कृतञ्जय
115 रणञ्जय
116 सञ्जय
117 शाक्य
118 शुद्धोदन
119 राहुल
120 प्रसेनजित्
121 क्षुद्र
122 कुण्डक
123 सुरथ
124 सुमित्र

श्री राम पुत्र कुश के वशज दक्षिण भारत मे फैल गये और अनेक स्थानो पर अपने राज्य स्थापित कर राज्य करने लगे। कुश का ही एक प्रतापी वशज राजा कृष्ण का पुत्र इन्द्र येबूर जनपद म राजा बन गया जिसने विक्रम सवत् 550 से पूर्व ही राष्ट्रकूट राठौड़ राज्य स्थापित किया। श्री गोविन्दराज के प्रपौत्र दतिदुर्ग ने बलशाली सोलकियो को पराजित कर राजाधिराज और परमेश्वर विरुद धारण किये। दति दुर्ग के बाद उसके चाचा कृष्णराज राष्ट्रकूट -राठौड़ महाराज्य के स्वामी बने। कृष्णराज के बाद गोविन्दराज द्वितीय राजा हुए जिसे परास्त कर उसी का भाई ध्रुवराज राज्य का स्वामी बना। ध्रुवराज का राज्य रामेश्वर से अयोध्या तक फैला हुआ था। गोविन्दराज की मृत्यु के बाद उसका पुत्र अमोघवर्ष पुन राजा बना जिसकी राजधानी मान्यखेट थी। अमोघवर्ष के सबध मे सुलेमान सौदागर का उल्लेख है कि वह दुनिया के चार बड़े बादशाहो मे से एक था। अमोघवर्ष से लगातार राज्य सभालते आ रहे राजाओं मे सातवे वशधर कृष्णराज तृतीय तक दक्षिण भारत मे राष्ट्रकूट राठौड़ो के राज्य उन्नति प्राप्त करते रहे। अरब यात्री अल-मसऊदी ने विक्रम सवत 1001 मे रचित अपनी

पुस्तक गुरु जल-जट्य मे उक्त राष्ट्रकूट राठौड़ो के वशज वलहरा को सवसे सशक्त पराक्रमी राजा माना था। मान्यखेट के राठौड़ो की एक शाखा मध्य भारत म आयी जिनका राज्य महाराष्ट्र कहलाया। कुछ राठौड़ राजपूताने मे हटूँड़ी (जोधपुर) धनोप (शाहपुरा) मे स्थापित होकर राज करने लगे। महाराष्ट्र से ही राठौड़ राजा काठियावाड़ वदायूँ व कन्नौज म स्थापित हुए। विक्रम सवत की ग्यारवी शताब्दी के आस पास वदायूँ मे राठौड़ो का राज्य स्थापित हो चुका था। उक्त राठौड़ो ने ही प्रतिहारो को परास्त कर कन्नौज का राज्य प्राप्त किया परन्तु वे वहॉ अधिक समय जम नही पाये। गाहड़वाल चन्द्रदेव ने राठौड़ो को परास्त कर कन्नौज का राज्य छीन लिया और वदायूँ के राठौड़ सामत वन गये। विक्रम सवत 1250 मे शहाबुद्दीन गौरी ने जोरदार आक्रमण कर कन्नौज के अतिम राजा जयचन्द गाहड़वाल को परास्त कर मुस्लम राज्य स्थापित कर दिया। उसी के प्रतिनिधि कुतुबुद्दीन ऐवक ने ही वि स 1253 मे वदायूँ के राठौड़ो को परास्त कर अपना मुस्लिम राज्य स्थापित कर लिया विक्रम सवत 12[illegible]3 मे वदायूँ के श्री सेतराम का पुत्र राव सीहा विक्रम सवत 1300 मे राजपूताने मे आया और पाली के आस पास पालीवाल ब्राह्मणो की सहायता से अपना राज्य स्थापित किया।

नवीं शताब्दी के अन्तिम समय का भारत

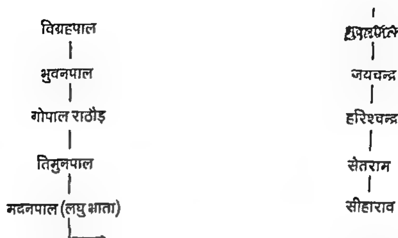


मुहम्मद गौरी के भारत पर आक्रमण



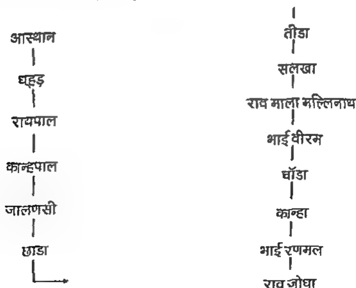
वदायूँ के राठौडो का वशक्रम

वदायूँ का प्रथम राठौड़ राजा चन्द्र राठौड़



इसी सीहा राव ने राजपूताने मे पाली के आसपास राठौड़ राज्य स्थापित किया और राज्यवृद्धि मे जीवनपर्यन्त लगा रहा। उनका स्वर्गवास रणक्षेत्र पाली से 14 मील दूर ग्राम बीठू मे विक्रम सवत 1330 कार्तिक वदी 12 ई सन् 1273 की दिनाक 1 अक्टूबर सोमवार को हुआ। यह बीठू गाँव राठौड़ राज्य के प्रथम सस्थापक राव सीहा का स्मारक धाम है। जिसे स्मारक स्वरूप विकसित किया जाना परमावश्यक है। समस्त राठौड़ो को इस पुण्य पवित्र भूमि पर राव सीहा राठौड़ का भव्य स्मारक वनाना चाहिये जो कि परम अपेक्षित है।

राव सीहा के वशज आस्थान



राव जोधा से आगे जोधपुर का वशक्रम है तथा इसी जोधा से आगे बीकानेर मे राव श्री बीका का वशक्रम है।

श्री बीका
|
नेरा
|
लूणकरण (नेरोजी के भाई)
|
राव श्री जैतसी (राव श्री जैतसी के तेरह पुत्र थे।)

बीकानेर राव श्री जैतसी

- राव कल्याणमल (आगे बीकानेर राजवश क्रम)
- श्री भीवराज जी (गई भोम रो ब्राहडू विरुद प्राप्त इन्ही श्री भीवराजजी राठौड़ के वशज भीवराजोत बीका है।)
  |
  श्री नारायणदास जी (नोरगजी)
  |
  रघुनाथ सिह
  |
  राजसिह
  |
  प्रतापसिह
  |
  रूपसिह (अनूपसिह)
  |
  जोरावर सिह
  |
  हिम्मत सिह
  |
  मुकुन्द सिह
  - श्री कल्याणसिह (राजपुरा)
    |
    बाघसिह
    |
    अमरसिह
  - श्री खेतसिह जी
    |
    खुमाणसिह
    |
    बिशनसिह (भाई)

श्री कल्याणसिंह (राजपुरा)

श्री खेतसिंह जी (चलकोई)

यापसिंह – अमरसिंह – विजयसिंह – अभयसिंह – दुर्जनसालसिंह – नारायणसिंह – कुशलसिंह (अमरपुरा से गोद)

खुमाणसिंह विशनसिंह ज्ञानसिंह करनसिंह मूणीसिंह सूरजमालसिंह श्यामसिंह रामसिंह

बहादुरसिंह इन्द्रसिंह मीरसिंह देवीसिंह रणजीतसिंह राजेन्द्रसिंह बलदेवसिंह

शिवेन्द्रसिंह (पुत्र इन्द्रसिंह गोद आये)

श्री भैरसिंह श्री जेसराजसिंह हमीरसिंह

नवलसिंह गणपतसिंह रघुनाथसिंह बालूसिंह प्रेमसिंह अमरसिंह

श्री हरीसिंह (श्री हरीसिंह के आठ पुत्र हुए हैं) सूरजमालसिंह राठौड़

महेन्द्रसिंह जितेन्द्रसिंह

कुम्भेरसिंह भोपालसिंह छगनसिंह नरपतसिंह सोहनसिंह मनोहरसिंह जितेन्द्रसिंह सुरेन्द्रसिंह



राठोडो की राष्ट्रीय भावना

दक्षिण भारत मे राष्ट्रकूटो का सुदृढ व समृद्धिशाली साम्राज्य था। इस पुस्तक मे उनकी महानता शौर्य व बुद्धिमत्ता का वर्णन किया गया है। उनकी एक शाखा ने उत्तर भारत म बदायू मे अपना राज्य स्थापित किया। कन्नौज के पतन के बाद बदायू के राठौड़ मारवाड़ की तरफ आ गए। उनकी शक्ति को देख कर पालीवालो के आग्रह पर सर्वप्रथम पाली मे राज्य स्थापित किया। वहाँ से खेड़ ईडर मडोर व बीकानेर किशनगढ़ अजमेर की तरफ फैल गए। राजस्थान म राजूपतो मे राठौड़ सबसे बाद म आए परन्तु उन्होने अपनी शक्ति वीरता व बुद्धिमत्ता से आधे राजस्थान पर आधिपत्य स्थापित कर लिया। करीब 12 पीढी तक राठौड़ राजा युद्ध के मैदान म वीर गति को प्राप्त हुए व रण बका राठौड़ कहलाए।

राव रिड़मल बहुत प्रतिभाशाली व उच्चकोटि का वीर था। उसके भाणजे राजामोकल मेवाड़ के वध की सूचना पाते ही वह बदला लेने के लिए मेवाड़ की तरफ तेज गति से दौड़ा। बिजली की तरह तेज गति से आक्रमण करके चाचा व मेरा को मारा। महपा पवार के भाग जाने से शरण देने वाले माडू के सुल्तान महमूद खिलजी व गुजरात के सुल्तान अहमद शाह को बुरी तरह से हराया। राव रिड़मल की जीत का स्मृति-चिह्न चित्तौड़ मे विजय स्तम्भ राणा कुम्भा ने निर्मित किया जो सिसोदियों की श्रेष्ठता का उद्घोष करता है।

राव जोधा के भाई राव कान्धल के नेतृत्व में नए राज्य बीकानेर की स्थापना करके जोधा के पुत्र बीका को गद्दी पर बैठाया। 73 वर्ष की आयु मे युद्ध करते हुए हिसार क्षेत्र मे सारग खा लोदी बादशाह के सेनापति के हाथ वीर गति को प्राप्त हुए। इस पर प्रतिज्ञा करके बदला लेने के लिए जोधा बीका बीदा सयुक्त राठौड़ सेना को लेकर सारग खा पर टूट पड़े व झासल के युद्ध मे उसको मार गिराया।

इस बार करीब 150 वर्ष स्थापना के बाद राठौड़ दिल्ली के शक्तिशाली बादशाह शेर शाह सूरी के सामने युद्ध मैदान मे थे।

शेरशाह के साथ भीमराज वीरम मेड़तिया व राव कल्याणमल बीकानेर थे। गिरी सुमेल के मैदान मे युद्ध हुआ। राठौड़ो की तरफ से दस हजार सेना का नेतृत्व करते हुए जैता कूपा व पचायण अपनी इज्जत स्वामी भक्ति व स्वतन्त्रता के लिए शेरशाह की फौज पर टूट पड़े। राव मालदेव शक करके मैदान से हट गया। युद्ध मे जैता कूपा व पचायण काम आए व शेरशाह ने आह भरते हुए कहा कि मुट्ठी भर बाजरे के लिए सारा साम्राज्य हाथ से चला जाता।

लेकिन भीमराज जी की बुद्धिमानी व सहयोग से गया हुआ राज्य मेड़ता व बीकानेर का वीरम व कल्याणमलजी ने वापिस प्राप्त किया।

राणा सागा के नेतृत्व मे विदेशी आक्रमणकर्ता बाबर से टक्कर लेने को राजपूत राजाओं की सयुक्त सेना इकट्ठी हुई। उसमे प्रमुख राठौड़ राव विरम देव मेड़ता राव गागा जोधपुर का पोता रायमल कुवर कल्याणमल बीकानेर व राव भारमल ईडर ने अपनी अपनी सेना के साथ खानवे की लड़ाई मे भाग लिया। राष्ट्रीय हित मे राठौड़ हमेशा आगे रहे व बड़े से बड़े त्याग करते हुए हिच किचाए नही बाबर के छोटे पुत्र कामरा (हिन्दुस्तान के उत्तरी भाग का बादशाह) ने बीकानेर पर हमला किया। रास्ते मे भटनेर दुर्ग पर खेतसी काधल (राठौड़) ने जौहर मे वीर गति प्राप्त की। बीकानेर मे राव जैतसी गढ़ को भोजराज रूपावत को सुपुर्द करके हट गया। कामरा ने गढ़ जीत

लिया परन्तु राव जैतसी ने छापा मार पद्धति से रात को हमला करके दुश्मन को भगा दिया व गढ़ कब्जे कर लिया। कामरा बुरी तरह से हार कर व जान बचाकर दौड़ गया।

यह पुस्तक राठौड़ो पर भीमराजजी तक ही प्रकाश डालती है परन्तु बाद मे भी राठौड़ो ने राष्ट्रीय हित मे सदैव त्याग व बलिदान करते हुए वीरता का प्रदर्शन किया। राव जयमल मेड़तिया ने अपना हित छोड़ कर राष्ट्रीय हित मे राणा उदयसिंह मेवाड़ का निमन्त्रण स्वीकार करके, अकबर के विरुद्ध चित्तौड़ आक्रमण के समय नेतृत्व करते हुए जौहर मे प्राणो की बली देश व इज्जत के लिए दी। इज्जत की रक्षा हेतु इस जौहर मे 30 000 वीर व वीरागनाएँ काम आई।

यह त्याग निरर्थक नही गया। थोड़े समय बाद ही राणा प्रताप ने चित्तौड़ की स्वतन्त्रता व आन मान के लिए लम्बे सघर्ष की बिगुल बजा दी। हमेशा की तरह इस राष्ट्रीय सघर्ष मे भी स्वतन्त्रता के लिए प्रमुख राठौड़ राव चन्द्रसेन मारवाड़ राव नारायणदास ईडर जयमल का पुत्र रामदास बदनोर अपने पुत्र सहित राणा प्रताप की सहायता मे निरन्तर लड़ते रहे। पृथ्वीराज बीकानेर अकबर के दरबार मे नव रत्नो मे थे। उन्होने डिगल मे दोहे लिखकर राणा प्रताप को स्वतन्त्रता के लिए जूझते रहने को प्रोत्साहित करके अक्षुण यश प्राप्त किया। राजा राय सिह बीकानेर अकबर के प्रमुख सेनापति होते हुए भी कभी चित्तौड़ के विरुद्ध किसी लड़ाई मे उपस्थित नही हुए। श्री जसवन्त सिह के पुत्र अजीत सिह को जोधपुर की गद्दी पर बैठाने के लिए व जोधपुर को मुगलो से स्वतन्त्र कराने को 40 साल तक लम्बे युद्धो का नेतृत्व किया। उनकी स्वामी भक्ति देश प्रेम व ईमानदारी व त्याग उत्कृष्ट कोटि का था। उन्होने अपना कर्तव्य निर्वाह करते हुए जोधपुर को मुगल चगुल से छुड़ा कर अक्षुणयश प्राप्त किया।

राजा जसवन्त सिह जोधपुरने मुगल उत्तराधिकारी युद्ध मे दारा की सेना का नेतृत्व किया राजा कर्ण सिह बीकानेर ने औरगजेब द्वारा राजपूत राजाओं को अटक नदी मे इस्लाम स्वीकार कराने की नीति का उसके द्वारा भेजी गई नावो को तोड़कर विरोध का नेतृत्व किया। इस परदेशी राजाओं ने उन्हे जय जगल धर बादशाह का खिताब दिया।

राठौड़ का उत्कृष्ट नमूना दुर्गादास के रूप मे औरगजेब ने कट्टर अन्यायपूर्ण व निर्दयी हिन्दू विरोधी नीतियो का विरोध करने प्रकट हुआ।

अग्रेजो के शासन काल मे भी बीकानेर के महाराजा गगा सिह ने राष्ट्रीय भावनाओं के प्रति सहानुभूति रखते हुए 1917 मे अपने रोम नोट मे self rule व केन्द्रीय राज्य असेम्बली स्थापित करने की वकालात की।

गोल मेज सम्मेलन मे (Dominon state) के लिए जोर दिया। जयनारायण व्यास जैसे ईमानदार राजनेताओं को प्रोत्साहन देने को जोधपुर दिवान सर डोनाल्ड फील्ड को पत्र लिखा। मदन मोहन मालवीय को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय स्थापित करने मे पूर्ण समर्थन किया व खुले मन से धन दिया। बनारस विश्व-विद्यालय के लम्बे समय तक चासलर रहे। चैम्बर ऑफ प्रिंसेज के भी चासलर रहे। प्रथम महायुद्ध के बाद इम्पीरियल वार ट्रीटी मे हस्ताक्षर किए लीग ऑफ नेसन्स मे भारत का प्रतिनिधित्व किया। उन्होने अग्रेजा से सबध रखते हुए राष्ट्रीय भावना का समर्थन किया।

अग्रेजो के विरुद्ध स्वतन्त्रता आन्दोलन मे राव गोपालसिह राठौड़ खरवा (अजमेर जिला) ने राजस्थान मे क्रान्तिकारियो का नेतृत्व किया व बगाल क्रान्तिकारियो से सम्पर्क मे थे। महाराजा गगासिह के अतिथि होकर बीकानेर मे ठहरे। उनको महाराजा गगा सिह का समर्थन प्राप्त था।

—रामसिह रोड़ा
आईपीएस (सेवा निवृत्त)
सी 73 शार्दूलगज बीकानेर

गई भोम रो बाहडू

श्री भीमपाँडिया राजस्थानी और हिन्दी केमान्य कवि है। आपकी कई साहित्यिक एव सास्कृतिक कृतियॉ प्रकाशित हो चुकी है।

यह नई कृति इतिहास की एक विलुप्त होती हुई परम्परा को पुनर्जीवित करने की दिशा मे एक अति महत्वपूर्ण यज्ञ वेदी की सरचना है।

गई हुई भोम को पुन प्राप्त करने के लिए राती घाटी के वीर शिरोमणि राव जैतसी की वीर गाथा और उनके सुपुत्र भीवराजजी की राजनयिक सूझ-बूझ एव शूरवीरता को हृदयग्राही प्रवधात्मक आख्यान मे सँजोकर लेखक ने एक कालजयी कृति का सृजन किया है।

इस प्रकार की सरचनाएँ जब मधुर राजस्थानी भाषा मे पढने को मिलती है तो राजस्थानी की क्षमता स्वत सिद्ध हो जाती है।

सत्यनारायण पारीक
शिक्षाविद
पूर्व अध्यक्ष
भारतीय विद्या मदिर शोध प्रतिष्ठान बीकानेर

बीकानेर
22 11-1997